विश्व-साहित्य-माला—प्रथम पुष्प

डब्रोवस्की

(सुप्रसिद्ध रूसी उपन्यासकार ए० एस० पुश्किनके इसी नामके उपन्यासका एकमात्र प्रामाणिक हिन्दी रूपान्तर)

अनुवादक

श्री गिरिजाशङ्कर पाण्डेय

प्रकाशक

क्रान्ति प्रकाशन, वाराणसी

प्रकाशक
क्रान्ति प्रकाशन
देवीचन्द्र बेरी
१७।८, बा र [illegible]
वाराणसी

प्रथम संस्करण
२२००

१६५६

मूल्य २)

मुद्रक
मुन्नीलाल
कल्याण प्रेस, साक्षीविनायक, वाराणसी।

पुश्किन : एक परिचय

विधाताने एक ओर जहाँ स्वाभिमान, आत्मविश्वास, मस्ती, प्रेमी हृदय और तिल-तिल घुटकर होनेवाले मूक बलिदानोंके तत्वोंसे संसारके महाकवियोंकी सृष्टि की, वहीं उनके भाग्यमें सामाजिक तिरस्कार, प्रताड़ना, उपहास और करुण अन्तकी अमिट रेख भी खींच दी। पुश्किन भी उस महान नियामककी क्रूर लीलाका एक ऐसा ही पात्र था।

इस विख्यात रूसी कवि और लेखकके सम्बन्धमें आलोचकोंने जो मत स्थिर किया है उसे उसके एक अंग्रेज अनुवादक नताले डजिंगटनके शब्दोंसे भली भाँति जाना जा सकता है। इस विदेशी साहित्यकारकी रचनाओंका अंग्रेजी अनुवाद करते समय उक्त अनुवादकने पुस्तककी भूमिकामें लिखा है—

"Puskin is the greatest of Russian poet and the Russian literature is truely to begin with him. The national genius found in him is first edequate expression and his influence determined it subsequent development. His poetry has a standard of beauty that has never been surpassed. His prose tales established the literary tradition followed by the great novelists that came after him. The realism so characteristic of Puskin's writing is the keynote of Russian literature as whole......"

अर्थात् "रूसके कवियोंमें पुश्किन सबसे महान् है और सच तो यह है कि रूसी-साहित्यका अध्ययन पुश्किनकी रचनाओंसे ही आरम्भ करना

चाहिये। उसमें पायी जानेवाली राष्ट्रीय प्रतिभा ही पहले पर्याप्त मात्रामें है, फिर उसके प्रभावने इसके विकासको और भी सुनिश्चित कर दिया। उसकी कविताने परिनिष्ठित सौन्दर्यकी सीमा बना दी जिसके आगे कोई कवि न जा सका। उसकी गद्य-कथाओंने साहित्यकी वह परम्परा स्थापित कर दी जिसका अनुसरण बादमें होनेवाले सभी उपन्यासकारोंने किया। पुश्किनकी रचनाओंमें पाया जानेवाला यह यथार्थवाद सम्पूर्ण रूसी साहित्य-की कुञ्जी है...... ।"

आलोचकोंका मत है कि पुश्किनकी कविताका विदेशी भाषाओंमें सही अनुवाद हो ही नहीं सकता क्योंकि उसका प्रत्येक शब्द अपने साथ राष्ट्रका एक विशेष प्रसंग और संदर्भ लिये है। प्रत्येक शब्दमें अपनी विशिष्ट पूर्णता है जो अन्य भाषाओंमें पूर्ण नहीं हो सकती। किन्तु उसके गद्यमें उसके पद्यकी यह विशेषता नहीं आ पायी। उसका गद्य आज भी उतना ही सुदृढ़, रोचक, प्रभावशाली सरल और मर्मस्पर्शी है जितना सौ वर्षों पूर्व था।

पुश्किन का जन्म एक पुराने और भद्र रूसी परिवारमें २६ मई सन् १७६६ को मास्कोमें हुआ था। उसके माता-पिता समाजमें प्रतिष्ठा-पूर्ण जीवन बिताते। वे फैशनप्रिय और जमीदारोंके ढंगपर रहते थे। किन्तु बच्चेके प्रति वे किञ्चित ध्यान न देते। उन्होंने पुश्किन को एक धाय, कुछ अध्यापकों और उसकी वृद्धा दादीकी देख-रेखपर छोड़ दिया था। अतः अपने बचपनमें पुश्किन अपने पिता-माताकी अपेक्षा अपनी धाय, दादी और फ्रेञ्च अध्यापकों से ही अधिक प्रभावित था। उसके पिता विद्या-व्यसनी थे। पुस्तकोंका उन्हें बेहद शौक था। इसलिए उन्होंने घरमें फ्रेञ्च पुस्तकोंका एक विशाल पुस्तकालय खोल रखा था। पुश्किनको पुस्तकें पढ़नेका शौक बचपनसे ही था, अतः अब वह अपनी रुचिके अनुसार पुस्तकें ढूँढ़-ढूँढ़कर पढ़ने लगा। फलतः कुछ ही दिनोंमें फ्रेञ्च भाषापर उसका अधिकार हो गया। उसपर जो कुछ रूसी प्रभाव

बचा था वह उसकी पितामही और बूढ़ा सेविका रोडिओनोवाके कारण था। इनके प्रेममें वह अपनी माताको भूल-सा गया।

१२ वर्षकी उम्रमें उसे ज़ारस्की सेलोके एक विद्यालयमें भेजा गया जो सामन्तवादी विचारधाराका प्रचारक था और सम्राट् ज़ार अलेक्ज़ेन्डर प्रथमके संरक्षणमें चलता था। पुश्किनको इस विद्यालय में रहना अच्छा लगा। वह यहाँ मस्तीसे रहता। कविता लिखना उसने यहीं आरम्भ किया। उसके जीवनकी अनेक सुन्दर रचनाएँ इसी समयकी हैं। छात्र जीवनकी स्मृति वह जीवन भर न भूल सका।

कई वर्ष सेन्ट पीटर्सबर्गमें पढ़नेके बाद उसे सम्राटकी सरकारके विदेश-विभागमें कुछ काम मिल गया। सन् १८१७ में वह इस नौकरीमें आया। यह कोई ऊँचा और महत्वपूर्ण पद न था, फिर पुश्किन भी मस्त जीव था। दिन-रात वह पड़ा रहता, कविताएँ लिखता और मस्ती में जीवन बिताने लगा। काममें वह बहुत कम ध्यान देता। उसका कवि-हृदय वास्तवमें नौकरीके लिए उपयुक्त भी न था। इस प्रकार १८२० में उसकी वह अभूतपूर्व रचना प्रकाशित हुई जिसने उसे तत्काल सारे रूसमें विख्यात कर दिया। इस पुस्तकका नाम "रसलान एण्ड ल्यूडमिल्ला" था जो एक अपूर्व वर्णनात्मक काव्य था। रूस में इसके पहले ऐसी कोई पुस्तक नहीं लिखी गयी थी। इसके बाद उसकी रचना "ओड टू लिबर्टी" प्रकाशमें आयी जिसके छपते ही पुश्किनके बुरे दिन आ गये। इस रचनासे ज़ार उसपर रुष्ट हो गया और दण्डस्वरूप उसने पुश्किनको पीटर्सबर्ग से देश-निकालाकी तरह दक्षिण जानेकी आज्ञा दी।

पुश्किन काकेशसमें जा बसा, किन्तु वहाँ भी उसकी लापरवाही, मस्ती, निर्भीकता और स्वतंत्रता-प्रेमने अधिकारी वर्गसे झगड़ा खड़ा कर लिया। उसके अनेक शत्रु हो गये। १८२४ में उसे पस्कोव प्रान्त स्थित अपनी जमींदारी मिहेलोवस्कीमें स्थायी रूपसे रहनेकी आज्ञा

मिली। अपने इस ३-४ वर्षके प्रवास काल और भगोड़े जीवनमें उसने अनेक प्रसिद्ध कविता-पुस्तकें लिखी जिनमें 'प्रिज़नर आफ काकेशस', 'दि जिप्सीज़,' 'दि फाउन्टेन आफ दी बाहकीसरी', आदि प्रमुख हैं।

ज़ार अलेक्ज़ेन्डर प्रथमकी मृत्यु और १४ दिसम्बर सन् १८२५ के बलवेके बाद, जिसमें उसके अनेक मित्र फँसाये गये थे, पुश्किनको नये सम्राट ज़ार निकोलस प्रथमने दरबारमें बुलवाया। पुश्किन ज़ारकी आज्ञा मानकर गया। वहाँ जब सम्राट निकोलसने उससे प्रश्न किया कि क्या तुम भी उस बलवेमें सम्मिलित थे जिसमें तुम्हारे इतने मित्र फँसे हैं तो पुश्किनने आशाके प्रतिकूल उत्तर दिया—जी, मैं भी उस बलवेमें सम्मिलित था। सम्राट उसकी इस निर्भीकता और सत्यवादितापर प्रसन्न हुआ और उसे क्षमा कर दिया। इतना ही नहीं, उसने पुश्किनको विशेष संरक्षण देने और अपना प्रधान मुसाहिब बनानेका वचन दिया। ज़ारकी इस विशाल हृदयतासे प्रभावित हो पुश्किन लौट आया। किन्तु उसे शीघ्र निराश होना पड़ा क्योंकि सम्राट अपने शब्दों पर टिक न सका। पुश्किन की रचनाओंपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। उसकी पुस्तकें छापने, बेचने पढ़ने और घरमें रखनेपर दण्डकी आज्ञा प्रचारित कर दी गयी। पुश्किनके लिए यह अत्यन्त क्लेशकर था। राज्यका एक अधिकारी काउन्ट बेंकनडार्फ बड़ा शरारती था। पुश्किनको तंग करनेमें उसका मुख्य हाथ था। कवि उसके व्यवहारसे अतिशय खिन्न हुआ, किन्तु कर ही क्या सकता था।

अब उसके जीवनका वह अध्याय आरम्भ हुआ जिसमें सुख और दुखोंका द्वन्द्व भीषणतर गतिसे चलने लगा। सन् १८३१ में उसने एक अत्यन्त रूपवती युवती—निकोलीव्ना गोनकारोवा-से विवाह कर लिया। पत्नी यद्यपि काफी सुन्दरी थी, किन्तु उम्रमें कविसे कम थी। उसके साहचर्य्यने कविके जीवनमें उन सभी विपत्तियोंकी बाढ़ ला दी जो ऐसे विवाहोंसे प्रायः उत्पन्न हो जाया करते हैं। "भयो यह अनचाहत कौ

रंग" वाली उक्ति पुश्किनके लिए ठीक-ठीक बैठ गयी। निकोलीव्ना अभी जवान थी। यद्यपि पुश्किन भी अभी ३२ ही वर्षका था और पत्नीको वह अत्यन्त प्यार करता था, फिर भी दोनोंमें वह प्रेम न उत्पन्न हो सका जो युवक दम्पतिमें होना चाहिये। निकोलीव्ना फैशनप्रिय, तड़क-भड़कसे रहनेवाली, कम पढ़ी-लिखी विलासिनी युवती थी। नाच-रंग, उत्सव, घूमने-फिरने और दावतों आदिमें उसका खूब मन लगता। गहनोंके प्रति उसे तीव्र आकर्षण था। अन्य रूसी जमींदारों और अधिकारियोंकी पत्नियों की भाँति वह बहुत सज-धजकर रहना और अपने गौरवका प्रदर्शन करना चाहती थी। उधर पुश्किन सादा और निर्भीक व्यक्ति था। वह इन विलासी और चाटुकार सामन्तोंकी दृष्टिमें खटकनेवाला साधारण मजदूर था। फिर पत्नीके इतने झमेले वह बर्दाश्त भी न कर पाता था। इतना खर्चीला जीवन उसके लिए कठिन था। पत्नीका बौद्धिक विकास तो हुआ न था, इससे वह पतिकी असली प्रतिभा पहचान न सकी। उसका स्वभाव पुश्किनके प्रतिकूल था जिससे दोनोंके बीचकी खाई दिन-दिन बढ़ने लगी। पत्नीको प्रसन्न रखनेके लिए अपनी इच्छाके विरुद्ध उसने यह नया जीवन भी अपनाया, किन्तु उसका खर्च वह चला न पाता। समाजमें रईसोंकी निगाहमें वह गरीब और एक सिड़ी व्यक्ति समझा जाता था। इससे उसका स्वाभिमानी हृदय तड़प उठा और इसका बदला उसने अपनी लेखनीसे लिया। उसने प्रत्येक रईस, उमरा, जमीदार और चाटुकार अधिकारीको रगड़ा जिससे उसके शत्रुओंकी संख्या बढ़ती चली गयी।

विरोधियोंने अब एक नयी चाल चल दी। उसकी पत्नी सुन्दरी और विलासी तो थी ही, उसके अनेक प्रेमी हो गये। पुश्किनको छोड़कर वह सभा-समाज और दावतोंमें जाती थी। फलतः अब उसके नामके साथ अनेक नाम जोड़कर व्यंग किये जाने लगे। पुश्किनके लिए यह घोर अपमानजनक था। फिर धीरे-धीरे उसे ऐसे पत्र भी मिलने लगे जिसमें उसकी पत्नीके चरित्रपर आक्षेपकर उसकी खिल्ली उड़ायी जाती।

१८३७ आते-आते यह रोग चरम सीमा पर पहुँच चुका था। मास्को में एक फ्रांसीसी सज्जन रहा करते थे जिनका नाम बैरन जार्जेस डी ऐन्थेस था। यह महाशय पक्के साम्राज्यवादी, दरबारी जीवनके उस्ताद, ज़ारके समर्थक और उसके चापलूस मुसाहिब थे। लोगोंने इन्हींको पुश्किनका प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध किया। बैरन और पुश्किनमें निकोलोव्नाको लेकर काफी तनातनी चली जिसकी परिणति 'डुएल' के रूपमें हुई। युद्धमें पुश्किन बुरी तरह घायल हुआ और इस दुर्घटनाके तीन दिन बाद २६ जनवरी सन् १८३७ को मर गया। रूसके अमीरोंने यद्यपि उसकी प्रतिभाको पहचाना नहीं, किन्तु उसकी मृत्युका शोक सम्पूर्ण रूसमें एक राष्ट्रीय क्षतिके रूपमें मनाया गया।

पुश्किन मर गया। अब उसकी प्रतिभा वास्तविक रूपसे निखरी। उसकी कद्र मरनेके बाद हुई। एक आलोचकने लिखा है—

"Succeeding generations have recognised even more clearly the significance of his works and the cult of Puskin has become the spiritual heritage of every educated Russian."

अर्थात्, आनेवाली पीढ़ियोंने उसकी रचनाओंका महत्व अधिक स्पष्ट रूपसे जाना और पुश्किनके विश्वास और विचार प्रत्येक शिक्षित रूसीका उत्तराधिकार बन गया।

पुश्किनकी सर्व प्रथम रचना "दि मैसेन्जर आफ यूरप" नामक पत्रमें १८१४ में छपी। ६ वर्षों तक वह गीत लिखता रहा। १८२० में इसका प्रसिद्ध काव्य ग्रंथ "रसलान एण्ड ल्यूडमिल्ला" छपा। पुश्किनकी सर्वोत्कृष्ट काव्य रचना "दि ब्रोञ्ज हार्समैन" मानी जाती है जो उसकी मृत्युके ४ वर्ष बाद सन् १८४१ में छपी।

उसका उपन्यास साहित्य भी विशाल है–दि निग्रो आफ पीटर दी ग्रेट (१८२८-४१), टेल्स बाई बलकिन (१८३१), दि हिस्ट्री आफ मैनर

आफ गोरियोरोव (१८५७), डब्रोवस्की १८४१, कीन आफ स्पेड्स १८३४, किर्दज़ाली १८३४, कैप्टेन्स डाटर १८३६, इजिप्शियन नाइट्स १८४१ में छपी। इन पुस्तकोंके अतिरिक्त इतिहास और यात्राकी भी उसकी पुस्तकें छपी हैं। उसके पत्रोंका विशाल संग्रह भी सन् १६०८-६ में प्रकाशित किया गया है। अंग्रेजीमें प्रिन्स मर्स्कीने १६२६ में एक विशाल आलोचना ग्रंथ पुश्किनपर लिखा जिसमें उसकी पुस्तकोंका प्रामाणिक अनुवाद और उनपर ठोस विचार किया गया है।

पुश्किनने डब्रोवस्की १८३२-३३ के बीच लिखा। यह एक वास्तविक घटनाके आधारपर लिखा उपन्यास है। उपन्यास अधूरा पड़ा था। इसका शेषांश पूरा करना था, किन्तु पुश्किन उसे पूरा न कर सका। उसकी मृत्युके बाद १८४१ में यह प्रकाशित हुआ। इस उपन्यासकी घटनाएँ सत्य हैं, केवल नामोंमें अन्तर है। अदालतकी कारवाईका पुश्किनने विस्तृत विवरण दिया था, किन्तु अंग्रेजी अनुवादमें उसे दिया नहीं गया; अतः इस रूपान्तरमें भी वह विवरण नहीं है। शेष अनुवाद अक्षरशः ज्योंका त्यों कर दिया गया है।

विश्व-साहित्य-माला

'डब्रोवस्की' विश्व-साहित्य-मालाका प्रथम पुष्प है। इस मालाके अन्तर्गत संसारकी विभिन्न भाषाओंकी श्रेष्ठ, पुरस्कृत, और वर्षकी उत्तमोत्तम पुस्तकोंका हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित करनेकी योजना बनायी गयी है। इस प्रकार हिन्दी जगतके सम्मुख हम संसारकी प्रायः सभी भाषाओंकी श्रेष्ठ कृतियाँ उपस्थित कर सकेंगे।

'डब्रोवस्की' पुश्किनकी अत्यन्त प्रसिद्ध रचना है। इस पुस्तकपर कई फिल्में भी बन चुकी हैं। इसका अनुवाद आपके सम्मुख है। अनुवादक श्रीगिरिजाशंकर पाण्डेय काशीके दैनिक 'सन्मार्ग'में सम्पादक रह चुके हैं और आपने इस पुस्तकका अनुवाद अक्षरशः तथा इस प्रकार किया है कि मूल लेखकके भाव, विचार तथा चरित्र-चित्रणमें कहीं भी कमी नहीं आने पायी है। साथ ही कथाको भारतीय वातावरणके अनुकूल बनानेके लिए शब्दोंका चुनाव, और मुहावरोंका प्रयोग ऐसा किया गया है जिससे भारतके किसान और खेतिहर मज़दूरोंको अपने जीवनकी भी एक झाँकी मिल सके। यों तो भारत और रूसके किसानों तथा जमींदारोंमें बहुत कुछ साम्य रहा है, अतः प्रस्तुत अनुवाद हिन्दीके पाठकोंको रुचिकर लगे और साथ ही मूल लेखककी भावना भी सुरक्षित रहे, इन दोनों बातोंको ध्यानमें रखकर यह रूपान्तर प्रकाशित किया गया है। आशा है हमारे पाठक इससे लाभ उठाकर हमें उत्साहित करेंगे, जिससे हम विश्वके अन्य श्रेष्ठतम साहित्यकारोंकी कृतियोंका अविकल और सफल रूपान्तर उनके समक्ष उपस्थित कर सकें।

—प्रकाशक

कुछ वर्षों पूर्व किरिल्ला पेट्रोविच ट्रायेकुरोव नामक एक प्रसिद्ध भद्र रूसी, जो पुराने विचारोंका था, अपनी जमींदारी पर रहता था। अपनी सम्पत्ति, वंश-परम्परा और रिश्ते-सम्बन्धोंके कारण वह उस प्रदेशमें, जहाँ उसकी जमींदारी पड़ती थी, बहुत महत्वका पुरुष समझा जाता था। उसके पड़ोसी उसकी छोटी-से-छोटी झक और मज़ाकका आनन्द उठानेको उत्सुक रहा करते थे; जिलेके राजकर्मचारी उसके नाममात्र-से काँप उठते; और किरिल्ला पेट्रोविच प्रतिष्ठाके इन लक्षणोंको अपना प्राप्य हक समझता था। उसका घर सदैव मित्रों और परिचितोंसे भरा रहता जो उसके मनमौजके खाली सुखद क्षणोंमें उसका मन बहलानेके लिए सदैव तैयार रहा करते तथा उसके उस मनोविनोदमें भाग लेते जो सदैव प्रचण्ड प्रकृतिके और कभी-कभी तो अत्यन्त उग्र होते।

उसका आमंत्रण अस्वीकार करनेका साहस किसीको न होता और न पोक्रोवस्कोई नामक उस गाँवमें कुछ विशेष दिनोंको उसका सत्कार करनेमें ही कोई चूकता। अपने घरेलू जीवनमें किरिल्ला पेट्रोविचमें वे सभी बुराइयाँ दिखायी पड़तीं जो अशिक्षित और असंस्कृत चरित्रके लोगोंमें पायी जाती हैं। प्रायः सभी लोगों द्वारा अपनी प्रवृत्तिकी

पराकाष्ठा तक पहुँचनेमें प्रेरित होकर और विलासमय जीवन बितानेके कारण वह अपनी तीव्र प्रकृतिकी सभी प्रवृत्तियोंके सम्मुख दब जानेका अभ्यस्त हो गया था और अपने अविकसित मस्तिष्क द्वारा उपजी सभी योजनाओंको पूरा करनेमें लग जाता। शरीरकी बनावट अच्छी होनेके बाद भी वह सदैव हर तीसरे या चौथे रोज अधिक भोजनसे उत्पन्न अजीर्णके प्रभावसे बीमार पड़ जाता और प्रायः प्रत्येक रातको मदिरा पीकर नशामें मत्त हो जाता। उसके मकानके एक हिस्सेमें सोलह सेविकाएँ रहा करतीं जो अपने लिंगके अनुरूप कार्य—कसीदाकारी—में लगी रहतीं। मकानके इस हिस्सेकी खिड़कियोंमें लकड़ीके जंगले लगे थे। दरवाजे बन्द ही रखे जाते जिसकी तालियाँ किरिल्ला पेट्रोविच खुद रखता। कभी-कभी इन नवयुवती बन्दिनियोंको दो बुढ़ियोंकी सतर्क चौकसीमें बगीचेके भीतर घूमने-फिरने भी दिया जाता था। समय-समय पर किरिल्ला पेट्रोविच उनके लिए पतिकी तलाश करता और उनके विवाह करा देनेके बाद उनकी जगह नयी लड़कियोंको रख लेता।

वह अपने किसानों, सेवकों और अन्य लोगोंसे अतिशय कठोर और स्वेच्छाचारी था, किन्तु वे सब उसे ही मानते। उन्हें अपने मालिककी सम्पत्ति और प्रसिद्धि पर गर्व था और उसके सुदृढ़ तथा सबल संरक्षणमें विश्वास रहनेसे अपने पड़ोसियोंके प्रति मनमाना व्यवहार करते थे।

ट्रायेकुरोवका मुख्य कार्य था अपनी विशाल जमींदारीके आस-पास शिकार खेलना, दावतें खाना और देना, नित्य अनर्गल हँसी-मजाक करना—वह भी नित्य नये-नये लोगोंके मत्थे, यहाँ तक कि उसके अन्तरंग और पुराने मित्र भी इसके न बच पाते—अकेला आन्द्रे गैव्रिलोविच डब्रोवस्की ही एक ऐसा व्यक्ति था जो इस व्यंगके शिकारका अपवाद था। यह डब्रोवस्की ज़ारकी अंगरक्षक सेनाका एक रिटायर्ड अफसर था। यह ट्रायेकुरोवका सबसे निकटस्थ पड़ोसी था जो सात दासोंका स्वामी था। इसके विनीत तथा साधारण स्तरका व्यक्ति होनेके बाद भी—ट्रायेकुरोव जहाँ ऊँचे दर्जेके लोगोंके सामने अपनेको अत्यन्त अभिमानी रूपमें

उपस्थित करता, वहीं डब्रोवस्कीका वह आदर करता। सेनामें दोनों साथी रह चुके थे और ट्रायेकुरोव अपने मित्रके तीव्र और दृढ़ स्वभावसे भलीभाँति परिचित हो चुका था। परिस्थितियोंवश वे एक दूसरेसे बहुत काल तक विलग रहे थे। झंझटोंमें फँसकर डब्रोवस्कीको अपने गाँव रह जाना पड़ा था, जहाँ ही अब उसकी सारी सम्पत्ति सिमट चुकी थी। किरिल्ला पेट्रोविचने जब यह सुना तो उसने उसे सहायता और संरक्षण देनेका प्रस्ताव किया जिसे डब्रोवस्कीने सीधा इन्कार कर दिया और निर्धन तथा पूर्ण स्वतंत्र बने रहना ही चाहा।

कुछ वर्षों बाद ट्रायेकुरोव जब जेनरल-इन-चीफ पदसे अवकाश लेकर अपने गाँव लौटा तो उसके मित्रोंने उसे देखकर बहुत हर्ष मनाया। तबसे दोनों मित्रोंका एक दिन भी ऐसा न बीता जिसे उन्होंने बिना मिले जाने दिया हो और किरिल्ला पेट्रोविच, जो कहीं किसीके घर जानेकी कृपा न करता, अपने इस मित्रके छोटेसे घर सदैव जाता रहता था। वे दोनों एक ही वयके भी थे, समाजमें एक ही वर्गके सदस्य थे और एक ही ढंगपर पाले-पोसे भी गये थे। उनके विचारों और स्वभावमें भी कुछ समानता थी। कुछ मामलोंमें तो उनके लक्ष्य एक प्रकारके होते, एक मार्ग होता; दोनोंने प्रेम-विवाह किया था, दोनों ही की पत्नियाँ विवाहके शीघ्र ही बाद चल बसीं और दोनोंको एक-एक सन्तान हुई। डब्रोवस्कीका पुत्र पीटर्सबर्गमें शिक्षा प्राप्त कर रहा था, जबकि किरिल्ला पेट्रोविचकी पुत्री अपने पिताके साथ ही रहती। किरिल्ला प्रायः डब्रोवस्कीसे कहा करता—"आन्द्रे गैब्रिलोविच! ख्याल रखो, तुम्हारा वोलोद्या अगर पढ़ लिखकर बड़ा आदमी हुआ तो मैं अपनी कन्या माशाका ब्याह उसके साथ कर सकता हूँ, भले ही वह उतना ही दीन और गरीब है जितना कि गिरजाघरका मूसा।"

आन्द्रे गैब्रिलोविच अपना सिर हिलाता और कहता—"नहीं किरिल्ला पेट्रोविच! मेरे वोलोद्याकी तुम्हारी मेरिया किरिलोव्नासे कोई जोड़ नहीं है। उसके जैसे गरीब आदमीकी शादी तो किसी निर्धनकी कन्यासे ही होनेमें ठीक है। इससे वह अपने घरका प्रधान बन सकेगा;

किसी धनी और लाड़-प्यारमें पली दुर्ललित युवतीका सेवक और आज्ञाकारी बननेकी अपेक्षा तो यही ठीक है।"

इस अति अभिमानी ट्रायेकुरोव और उसके निर्धन पड़ोसीके बीच विद्यमान मैत्री और प्रेम देखकर लोग ईर्षा करते, डब्रोवस्कीकी उस धृष्टतापर चकित होते, जिसे वह अत्यन्त निर्भय होकर अपने धनी पड़ोसीके टेबुलपर बैठकर व्यक्त करता, भले उसकी बातकी मेल उससे न बैठे। कुछ लोग ऐसे थे जो डब्रोवस्कीके इस निर्भीक और तटस्थ चरित्र का अनुकरण करनेका साहस करते और उस-सा ही स्पष्ट व्यवहार करते, किन्तु किरिल्ला पेट्रोविच उनपर इस भयंकरतासे बिगड़ खड़ा होता कि उनके देवता कूच कर जाते और फिर ऐसा प्रयास करनेका वे भूलकर भी साहस न करते। केवल डब्रोवस्की ही अकेला ऐसा व्यक्ति था जिसपर ट्रायेकुरोवका नियत विधान न लागू होता, किन्तु फिर भी कुछ ऐसी बात हो ही गयी जिससे सारी स्थिति ही बदल गयी।

पतझड़के आरंभमें एक दिन किरिल्ला पेट्रोविचने शिकार खेलने जानेका पूरा प्रबन्ध किया। एक दिन पहले ही सईसों और हँकवा करने-वाले नौकरोंको उसने आज्ञा दे दी कि दूसरे दिन सबेरे ५ बजे तक तैयार हो जायँ। रास्तेमें जहाँ भोजन बनाना निश्चित हुआ था, वहाँ एक रावटी और सु-वहनीय रसोई घर भेज दिया गया। अतिथियोंको लेकर तब गृहपति अपने बाड़ेमें गया जहाँ पाँच सौसे अधिक शिकारी कुत्ते, सूअर आदि गरम स्थानोंमें पड़े अपने स्वामी किरिल्ला पेट्रोविचकी उदारताका बखान अपनी माँसखोर नुकीली जीभ निकाले कर रहे थे। दुर्बल और रोगी कुत्तोंके लिए एक रुग्णशाला थी जिसकी देखभाल स्टाफ सर-जन टिमोश्का करता; पास ही एक विभाग ऐसा था जिसमें ऊँची जाति-की और दोगली कुत्तियोंको बच्चा जनने और उन्हें दूध पिलानेकी व्यवस्था थी। किरिल्ला पेट्रोविचको अपने इस बाड़े पर अभिमान था और जब कभी उसके मित्र एकत्र होते तो वह इसकी बड़ाई करनेसे चूकता न था, यद्यपि वे कम-से-कम बीसों बार इसे देख और सुन चुके थे।

अब वह अपने मित्रोंसे घिरकर तथा टिमोश्का तथा बाड़ेके प्रधान रक्षकके साथ वेगसे पैर बढ़ाकर चारों ओर घूमने लगा। कुछ दूर चलकर वह एक भीतरी दीवारके सामने रुका, कुछ बीमार कुत्तोंके स्वास्थ्यके सम्बन्धमें प्रश्न किया, कुछ पर अपनी राय दी। कुछ बातें उसकी कठोर थीं, किन्तु अन्यायपूर्ण न थीं। उसने अपने कुछ प्रिय कुत्तोंका नाम लेकर पुकारा और उन्हें सीटी बजाकर बुलाया। आगत मित्रोंने इसे अपना कर्त्तव्य समझा कि वे किरिल्ला पेट्रोविचके इस बाड़ेकी बड़ाई करें, उसका बखान करें। अकेला डब्रोवस्की ही था जो कुछ क्रोध मिश्रित चुप्पी साधे था। उसकी भौंहें चढ़ी और तनी थीं। शिकार उसके लिए अत्यन्त ही सुखद कार्य था, किन्तु अब उसके साधन इतने सीमित हो गये थे कि वह केवल दो कुत्ते (प्वाइन्टर) ही रख सकता था। इस शानदार प्रतिष्ठानको देख वह अपनी सहज ईर्षा दबा न सका।

"तुम इतने खिन्न क्यों हो भाई?"—किरिल्ला पेट्रोविचने उससे पूछा—"क्या तुम्हें मेरा यह बाड़ा पसन्द नहीं है?"

डब्रोवस्कीने सूखा उत्तर दिया—तुम्हारा बाड़ा अव्वल दर्जेका है, किन्तु मैं नहीं समझता कि तुम्हारे नौकर भी इतने मजेसे रहते होंगे जैसे तुम्हारे ये कुत्ते ...।"

बाड़ेके रक्षकोंमें से एकने क्रोधपूर्वक उसे देखा।

"हम शिकायत नहीं कर सकते।" वह नौकर बोला—"भगवान और हमारे मालिकको धन्यवाद! यदि इस बाड़ेसे अपनी जमींदारी बदलनी हो तो यह सच है कि अनेक तो उसे इसीलिये बदल देंगे कि इसमें उन्हें अच्छा भोजन और अधिक आराम मिलेगा।"

अपने दासके इस अविनीत और प्रगल्भ व्यंग पर किरिल्ला पेट्रोविच खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसके अतिथियोंने भी उसके अट्टहासमें योग दिया, यद्यपि उनमेंसे बहुतोंने भीतर ही भीतर अनुभव किया कि उस सेवकका व्यंग उनके लिए भी लागू होता था। डब्रोवस्कीका मुँह तमतमा उठा, किन्तु उसने कुछ कहा नहीं।

इसी समय कुत्तोंके कुछ नये पैदा हुए छोटे-छोटे पिल्ले एक डलिया-में रखकर वहाँ लाये गये। किरिल्ला पेट्रोविचने ध्यानसे उनका मुआइना किया, उनमेंसे दोको उठा लिया और शेषको यह आज्ञा देते हुए वापस कर दिया कि उन्हें डुबा दिया जाय। वह इस कार्यमें इतना अधिक व्यस्त हो गया था कि इसी बीच आन्द्रे गैव्रिलोविच चुपचाप सबकी नजर बचाकर वहाँसे खिसक आया और उसे कोई देख न सका।

अपने अतिथियोंके साथ बाड़ेसे लौटकर किरिल्ला पेट्रोविच भोजन पर डट गया। तब उसे डब्रोवस्कीकी अनुपस्थितिका ज्ञान हुआ; उसने अपने सेवकोंसे पूछा कि वह कब और कहाँ चला गया। उसने उन्हें आज्ञा दी कि वे झटपट दौड़कर उसे ढूँढ लें, पता लगाकर उसे लेकर ही लौटें। इसमें गलती न हो। अपने जीवनमें वह कभी भी बिना डब्रोवस्कीको साथ लिये शिकार खेलने नहीं गया था, क्योंकि जंगलमें शिकारी कुत्तों और दूसरे जानवरोंके पैरोंका निशान पहचानने में वह अत्यन्त अनुभवी और चतुर था, साथ ही शिकार सम्बन्धी उसके निर्णय सदैव अचूक और सटीक होते थे। नौकर घोड़ेपर दौड़ता-दौड़ता गया और जबतक लोग टेबुल पर बैठे भोजन करते रहे थे तबतक लौट आया। उसने बताया कि आन्द्रे गैव्रिलोविचने उनकी बात अन-सुनी कर दी और कहते हैं कि वह फिर लौटकर यहाँ नहीं आयेंगे। किरिल्ला पेट्रोविच, जो सदैवकी भाँति मदिरा पीनेसे काफी नशेमें हो चुका था, क्रोधसे भभक उठा। उसने नौकरको दुबारा आज्ञा देकर भेजा कि वह फिर डब्रोवस्कीके यहाँ जाय और उसे यह कहकर बुला लाये कि यह रात तो उसे अवश्य सैर-शिकारमें काटनी होगी। अगर वह पोक्रोवस्कोई नहीं चलेगा, तो वह (किरिल्ला) उसे कदापि क्षमा नहीं करेंगे।

आज्ञा पाकर नौकर पुनः घोड़ेपर चढ़ा और देखते-देखते सामने उड़ गया। किरिल्ला पेट्रोविच टेबुलसे उठा, अतिथियोंको विदा किया और बिस्तरपर जा लेटा।

सबेरा होनेपर उसका पहला प्रश्न था : क्या आन्द्रे गैव्रिलोविच यहाँ है ? उत्तरमें उसे लपेटे हुए हैटनुमा कागजका टुकड़ा दिया गया। किरिल्ला पेट्रोविचने अपने क्लर्कको आज्ञा दी कि वह जोरसे पढ़कर सुनाये। क्लर्कने कागज खोला और पत्रका मजमून इस प्रकार पढ़ा—

दयालु महाशय,

जबतक कि आप अपने बाड़ेके रक्षक पारामोश्काको क्षमा माँगनेके लिए मेरे पास न भेज देंगे, पोक्रोवस्कोई जानेकी मेरी कोई इच्छा नहीं है। तब यह मेरे ऊपर होगा कि मैं उसे दण्ड दूँ या क्षमा करूँ; जैसा देखूँगा वैसा करूँगा। मैं आपके किसी नौकरका व्यंग नहीं सह सकता। वह मुझपर हँसे ! असलमें आप भी यही करें तो भी मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं कोई विदूषक नहीं हूँ, बल्कि प्राचीन कालसे मेरे वंशका नाम चला आ रहा है।

आपका विनीत सेवक
आन्द्रे डब्रोवस्की

आधुनिक सभ्यताके विचारसे इस पत्रकी भाषा अत्यन्त कठोर थी, किन्तु यह पत्रकी भाषा नहीं, बल्कि उसका अभिप्राय था जिसने किरिल्ला पेट्रोविचको अत्यधिक उत्तेजित कर दिया।

"क्या मतलब ?" वह गरज उठा। नंगे पाँव बिस्तरसे फर्शपर कूदकर वह खड़ा हो गया और चिल्लाया—"मैं अपने आदमियोंको क्षमा माँगनेके लिए उसके पास भेजूँ ? तब वह जैसा उचित समझे दण्ड दे या क्षमा करे। वह कहना क्या चाहता है। उसका क्या मतलब है ? क्या वह नहीं जानता कि किससे वह यह सब कह रहा है ? उसे दिखा दूँगा···वह इसे भोगेगा और जिन्दगी भर दुख उठायेगा। ट्रायेकुरोवसे तलवारें टकरानेका फल उसे चखा दूँगा।"

किरिल्ला पेट्रोविचने वस्त्र बदला और उसी शान और गौरवके साथ रवाना हो गया, किन्तु शिकार असफल रहा, उसमें कुछ मजा न आया। सारा दिन बीत गया, उन्हें केवल एक खरगोश दिखायी पड़ा

और उसे भी वह न मार सके। मैदानके बीच गाड़े गये खेमेंके भीतर भोज भी असफलतापूर्ण और निरानन्द रहा। किसी भी तरह यह किरिल्ला पेट्रोविचके मनलायक न हो सका; झल्लाकर उसने रसोई बनानेवाले-को मारा, अपने साथके अतिथियों और आदमियोंको डाँटा, गालियाँ दीं और जानबूझकर सारा संरजाम साथ लिये डब्रोवस्कीके खेतोंसे होता और उन्हें रौंदता हुआ लौट आया।

कई दिन बीत गये, किन्तु दोनों पड़ोसियोंके बीच उत्पन्न विरोध, और घृणा समाप्त न हो सकी। आन्द्रे गैब्रिलोविच शिकारके लिए पोक्रो-वस्कोई नहीं गया, उधर किरिल्ला पेट्रोविच ने जानबूझकर उसे छोड़ दिया, उसे मनाया नहीं, बल्कि जोरदार और ऊँचे शब्दोंमें चिल्लाकर आस-पासके रहनेवालोंपर भी अपना क्रोध प्रकट कर दिया। उन शरीफ आदमियोंके साहस की सराहना ही की जा सकती है, सारी बातें डब्रो-वस्कीके कानों तक दूसरे रूपमें पहुँचायी गयीं जिसकी भाषा बिलकुल बदली और क्रोधको भड़कानेवाली थी। और तब एक नयी घटना हो गयी जिसने इन दोनों मित्रोंके बीच शान्ति-स्थापनकी अन्तिम आशा भी समाप्त कर दी।

डब्रोवस्की एक दिन अपनी छोटी जमींदारीमें से गुजर रहा था। वह एक घोड़ागाड़ीमें बैठा था। जैसे ही वह भोजपत्र वृक्षोंके कटने-वाले जंगलके निकट आया कि उसके कानोंमें पेड़ोंपर कुल्हाड़ा चलाने-की आवाज सुनायी पड़ी। दूसरे ही क्षण किसी भारी वृक्षके गिरनेका शब्द धमाकेके साथ हुआ। उसने गाड़ीवानको शीघ्र ही उस दिशामें, जिधरसे यह आवाज आयी थी, चलनेकी आज्ञा दी। क्षण भरमें वे वहाँ पहुँच गये। डब्रोवस्कीने देखा कि पोक्रोवस्कोई गाँवके कई किसान चुपचाप यहाँ मजेसे पेड़ काट रहे थे और चोरी-चोरी लकड़ी उठाकर लिये जा रहे थे। उसने अपने गाड़ीवानकी सहायतासे दो चोरोंको पकड़ लिया और उन्हें मजबूतीसे बाँधकर गाँवमें लाया वहाँ अपने घरके सामनेवाले मैदानमें उन्हें खड़ा किया। उसने

बदमाशोंके तीन घोड़ोंको भी पकड़ लिया था। डब्रोवस्कीको इससे अत्यन्त रोष हुआ था। इसके पहले ट्रायेकुरोवके गाँववालोंने, जो बदमाशी और शठताके लिए कुख्यात थे—कभी उसके गाँवकी सीमा-में घुसकर चोरी-बदमाशी करनेकी हिम्मत तक न की थी क्योंकि उन्हें डब्रोवस्की और अपने मालिकके बीच घनिष्ट मैत्री और प्रेमका सम्बन्ध ज्ञात था। उसने अनुभव किया मानों अब वे उस विरोधका लाभ उठा रहे हैं, जो उसके और किरिल्लाके बीच उठ खड़ा हुआ था। उसने शीघ्र ही लड़ाईके सारे नियमोंको भूलकर दोनों अपराधी बन्दियोंको उसी कुन्दसे, जिसे वे काट चुके थे, पीटने तथा घोड़ोंसे अपने निजी घोड़ोंका काम लेनेका निर्णय कर लिया।

इस घटनाका समाचार किरिल्ला पेट्रोविचको उसी दिन मिल गया। क्रोधसे वह तिलमिला उठा। आपेसे बाहर होकर उसने आवेशकी प्रथम लहरमें अपने समस्त सेवकों और दासों द्वारा किश्चेनेवका—डब्रोवस्कीकी जमींदारी—पर सहसा आक्रमण कर उसे जमींदोज करनेका निर्णय कर लिया था। इस काममें उसे कोई कठिनाई भी न होती, किन्तु शीघ्र ही उसके विचार दूसरी ओर मुड़ गये।

जब वह इन्हीं विचारोंमें डूबता अपने भव्य भवनके विशाल हॉल में क्रोधोन्मत्त हो टहल रहा था, तो अचानक खिड़कीसे बाहर उसकी दृष्टि तीन घोड़ोंवाली उस गाड़ीपर जा लगी जो उसके दरवाजेपर आ खड़ी हुई थी और जिससे एक नाटा आदमी चमड़ेकी उठी हुई टोपी पहने और लम्बा ओवरकोट डाले नीचे उतरा। उतर कर यह व्यक्ति उसके मकानके उस भागकी ओर चला जिधर उसके सेवक रहा करते थे। ट्रायेकुरोवने शाबास्कीं-मजिस्ट्रेटको पहचान लिया और उसके स्वागतके लिए नीचे आदमी भेजा। मिनट भरमें शाबास्कीं बार-बार उसे झुककर सलाम करता और अत्यन्त विनम्रताकी मुद्रा लाता हुआ किरिल्ला पेट्रोविचके सामने आ खड़ा हुआ।

"आपका भला हो ! क्या नाम है आपका ? ट्रायेकुरोवने पूछा—आप यहाँ कैसे तशरीफ लाये ?"

"मैं अपने घर-शहर-जा रहा था महाशय !" शाबास्की बोला—"फिर मैंने सोचा कि ईवान डेमाइनोव से मिलता चलूँ, शायद आपका कोई कार्य हो।"

मजिस्ट्रेटके लिए इतना हार्दिक स्वागत पाना अत्यन्त सुखकर और आश्चर्यजनक था। सम्मानके साथ दिया हुआ वोडका (शराब) पीनेसे उसने इन्कार कर दिया, शान्तिपूर्वक बैठ गया और ध्यानसे किरिल्ला पेट्रोविचकी बातें सुनने लगा।

"मेरा एक पड़ोसी है"—ट्रायेकुरोवने आरंभ किया—"गँवार और उजड्ड; उसके पास छोटी-सी जायदाद है—बहुत छोटी जमींदारी। मैं उससे यह जमींदारी ले लेना चाहता हूँ। अब आपकी इस सम्बन्धमें क्या राय है ?"

"यदि आपके पास कागजात हों महाशय या फिर……।"

"नहीं भाई, ऐसा तो कोई कागज मेरे पास नहीं है, किन्तु तब सरकारी आज्ञा किसलिए होती है ? कुल बात इतनी ही है कि जैसे भी हो—बिना किसी कानूनी अधिकार प्राप्त किये—उस जमीनको जब्त कर लिया जाय; किन्तु ठहरिये एक मिनट, यह जमींदारी पहिले हमीं लोगोंकी थी। हमलोगोंसे एक आदमीने उसे खरीद लिया। क्या नाम था उसका ? स्पिटसिन…स्पिटसिन…और बादमें उसने भी जमींदारी बेच दी उसी डब्रोवस्कीके पिताके हाथ। क्या इससे कुछ काम नहीं बन सकता ?"

"बहुत मुश्किल है हुजूर। जमीनकी बिक्री भी संभवतः पूरे कानूनी ढंगपर हुई होगी।"

"भाई इस विषयपर सोचो…विचार करो और कोई रास्ता निकालो।"

"यदि आप कर सकें, कोई प्रबन्ध करें। जैसे कि अपने उस पड़ोसीसे अपनी जमीनके बैनामेका कागज किसी प्रकार प्राप्त कर अपने

अधिकारमें कर लें जिससे पता चल सके कि जमीन पर उसका अधिकार कैसा है। तब कुछ...।"

"मैं समझ गया, किन्तु सबसे बड़ा दुर्भाग्य तो यह कि उसके सारे कागज़ात एक अग्निकाण्डमें जलकर भस्म हो गये हैं।"

"क्या कहा? क्या सचमुच उसके कागज आगमें जल गये हैं हुजूर? तब इससे अच्छी बात क्या हो सकती है? तब तो हम इस मामले-में कानूनके ठीक शब्दोंपर ही विचार करेंगे और मुझे विश्वास है आपको निस्संदेह पूर्ण सन्तोष मिलेगा...।"

"क्या आप ऐसा समझते हैं? तब आप ख्याल रखें, मुझे आपके ही उत्साह पर विश्वास है। और बदलेमें आप...यकीन करें...।"

शाबास्कीं लगभग फर्श तक झुक गया, सलामके अनन्तर उसने विदा ली। उसी दिनसे वह अपनी योजनामें इस प्रकार जुट गया कि ठीक दो हफ्ते बाद डब्रोवस्कीको शहरकी अदालतसे एक नोटिस मिली जिसमें लिखा था कि वह तत्काल इस बातका लिखित प्रमाण पेश करे कि किश्चेनेवका नामक गाँव पर उसका ही स्वामित्व है।

आन्द्रे गैव्रिलोविचने, जो इस अप्रत्याशित और अचानक जाँच-पड़तालसे चकित और स्तंभित हो उठा था, उसी दिन जल्दीबाजीमें एक कठोर उत्तर लिख भेजा कि किश्चेनेवका नामक गाँव मेरे हाथमें मेरे पिताकी मृत्युके दिनसे ही आया। उसपर मेरा पैतृक उत्तरा-धिकार है। ट्रायेकुरोवसे इसका कोई सम्बन्ध नहीं है, और यदि कोई बाहरी व्यक्ति इस सम्पत्तिपर अपना हक दिखाता हो तो यह मेरा अपमान करने और ठगकर मेरा धन हड़पनेके लिए ही कर रहा है।

इस पत्रने शाबास्कींपर अत्यधिक आनन्दकारी प्रभाव डाला। इससे उसे दो बातोंका पता चला। पहला यह कि डब्रोवस्की चतुर व्यक्ति नहीं है, और दूसरे ऐसे क्रोधी स्वभाववाले अविवेकी पुरुषको किसी भयानक विपत्तिमें डाल देनेमें कोई कठिनाई भी न होगी।

परन्तु आन्द्रे गैब्रिलोविचने जब शान्त हृदयसे उस नोटिसको पुनः पढ़ा तो उसे मन ही मन इस कागजका पूर्ण और समुचित उत्तर विस्तारसे देनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई और उसने एक सन्तोष-जनक उत्तर देनेका निर्णय कर लिया।

उसने मतलबकी लभगभ सारी बातें लिख डालीं, किन्तु बादमें यह सब व्यर्थ सिद्ध हुईं।

मामला उलझकर लम्बा खिंच गया। यह विश्वास कर कि वह तो जमींदारीका वास्तविक अधिकारी है ही, आन्द्रे गैब्रिलोविचने मामलेमें ज्यादा दिलचस्पी न ली और न उसमें सिर खपाया; उसका न तो विचार था और न उसकी सामर्थ्य ही थी कि अदालतमें वह आगे-पीछे पैसा लुटाता चले, यद्यपि पहले वह अदालती घूसखोरी पर चिढ़ने और बिगड़नेवालोंमें पहला था, किन्तु उसने कभी यह सोचा भी न था कि वही कभी इस अपमानजनक वृत्तिका शिकार बन जायगा। ट्रायेकुरोव ने भी, जो मामला खड़ा कर दिया था, उसके दुष्परिणामको कभी गंभीरता-पूर्वक सोचा न था। मुकदमेंका कार्य शाबास्कींके हाथ देकर वह मुक्त हो गया। शाबास्कीं मामलेको आगे बढ़ा रहा था। ट्रायेकुरोवकी ओर से वह लड़ता, न्यायाधीशोंको वह अनेक प्रकारकी धमकी, घूस और प्रलोभनोंसे विचलित करता, कानूनकी व्याख्या इस प्रकार करता जिससे उसका उद्देश्य सफल हो। और अन्तमें ६ फरवरी सन् १८···को डब्रोवस्कीको अदालतसे एक सूचना मिली कि वह म्युनिसिपल अधिकारों, अपने जेनरल-इन-चीफ तथा ट्रायेकुरोवके बीच पड़े झगड़ेके बारेमें आकर अपने बयानपर हस्ताक्षर करे और निर्णय सुने। डब्रोवस्की उसी दिन शहरके लिए रवाना हो गया। जब सड़कसे वह जा रहा था, रास्तेमें उसे ट्रायेकुरोव मिला। दोनोंने परस्पर चढ़ी भौंहोंसे देखा, फिर नजरें हटा लीं। डब्रोवस्कीने स्पष्ट ही अपने शत्रुके चेहरेपर कुटिलतापूर्ण मुस्कान देखी जिससे उसका हृदय और भी कठोर हो उठा।

२

शहरमें आन्द्रे गैव्रिलोविच अपने एक सौदागर मित्रके घर ठहरा। दूसरे दिन वह जिलेके मुख्य मजिस्ट्रेटकी अदालतमें हाजिर हुआ। किसीने वहाँ उसपर ध्यान न दिया। किन्तु उसके तत्क्षण बाद ही जब किरिल्ला पेट्रोविच भीतर आया तो अदालतके सारे अहलकार अदबसे उठ खड़े हुए। किरिल्ला पेट्रोविचकी उम्र, पद और गौरवके अनुरूप उन्होंने उसका सम्मान किया और बैठनेके लिए उसे आराम कुर्सी दी गयी। वह दरवाजेके सामने भीतर कमरेमें कुर्सीपर बैठ गया—और आन्द्रे गैव्रिलोविच दीवारके सहारे खड़ा रहा—चारो ओर पूर्ण शान्ति हो गयी क्योंकि अदालतके सेक्रेटरीने अपने गंभीर सुरीले स्वरमें मुकदमेंका फैसला पढ़ना आरम्भ कर दिया था।

उसने वह पूरी कहानी कह सुनायी जिसमें उसने बताया कि जमींदारीके वास्तविक मालिकको किस प्रकार चालाकीपूर्वक अधिकारसे वंचित रखा गया था। रूसमें इस प्रकारकी घटना होते देख कोई भी व्यक्ति इसमें रस लेनेसे नहीं चूक सकता था।*

---

* पुश्किनने इस स्थलपर अदालतकी पूरी कारवाई बड़े विशद ढंगसे लिखी है जो निरंकुश राजतंत्रमें कलंकपूर्ण न्याय-शासनका

यह निर्णय जब पढ़कर सुनाया जा चुका तो उपस्थित सभी लोगोंने उसपर हस्ताक्षर किया।

सेक्रेटरी बैठ गया, तब मजिस्ट्रेट उठा और ट्रायेकुरोवको सम्बोधित करते हुए कुछ झुककर उसने उसे फैसलेपर हस्ताक्षर करनेको कहा। विजयी ट्रायेकुरोवने चारो ओर एक प्रफुल्ल मुस्कान बिखेरते हुए चिड़िये के परवाली कलम हाथमें उठायी और अपनी पूर्ण संतुष्टिके प्रमाणमें कागजपर दस्तखत कर दिया।

अब डब्रोवस्कीकी पारी थी। सेक्रेटरी कागज उसके सामने ले गया, किन्तु डब्रोवस्की सिर झुकाये, चुपचाप, स्थिर और अविचलित खड़ा रहा।

सेक्रेटरीने उसे उन्मत्त देखकर उसे दोबारा कागजपर हस्ताक्षर करनेको कहा और यह भी बताया कि यदि वह इस निर्णयसे सहमत नहीं है तो अपना विरोध ही लिख दे। तब उसने सोचा कि उच्चाधिकारियों के यहाँ इस मामलेकी अपील कानून द्वारा निश्चित अवधिके भीतर अवश्य कर देनी चाहिये।

डब्रोवस्कीने कुछ नहीं कहा········अचानक उसने सिर उठाया, उसकी आखें चमकीं, उसने अपने पैर मजबूतीसे जमीनपर अड़ा दिये, सीधा तनकर खड़ा हो गया, फिर सेक्रेटरीको इस प्रकार वेगसे ढकेल दिया कि वह अदालतके कमरेमें ही गिर पड़ा; दावातको उसने हाथसे उठा लिया और मजिस्ट्रेटके शरीरपर उसे दे मारा। उसके इस उत्तेजनापूर्ण व्यवहारसे सभी भयभीत हो गये।

सजीव चित्रण है। उस युगमें कैसे मनमाने और भयंकर फैसले कर दिये जाते थे—निर्धन और असहाय लोगोंसे किस तरह उनके अधिकार छीन लिये जाते थे—यह सब ऐसी भाषामें लिखा गया है जिसका अनुवाद अंगरेजी भाषान्तरकारी लेखक न कर सका। यह पुस्तक अंग्रेजी भाषान्तरका हिन्दी अनुवाद है। अतः अदालतकी कारवाई इसमें भी अनूदित नहीं की जा सकी।

तब वह चिल्लाने लगा—"क्या ? भगवानका घर मैला कर रहे हो ? यह न्याय और सत्यका मन्दिर है, यहाँ ईश्वरका निवास है। बाहर चले जाओ। तुम सब पापात्मा हो, तुम्हारी यह पीढ़ी पापसे भरी है"—और तब किरिल्ला पेट्रोविचकी ओर घूमकर देखते हुए उसने कहा—"भगवान-के घरमें जैसे शिकारी कुत्ते लाये जाते हैं। कुत्ते मन्दिरमें चारों ओर घूम कर उसे भ्रष्टकर रहे हैं ······कुत्ते··· ··मैं तुम्हें सिखा दूँगा······ ।"

बाहर खड़े पहरेदारने अदालतके कमरेमें यह हंगामा सुना तो वह झपटकर भीतर घुस आया। उसने कसकर ग्रैविलोविचको पकड़ लिया और अपनेको छुड़ानेका प्रयास करते हुए डब्रोवस्कीको अत्यन्त कठिनता से कब्जेमें कर लिया। डब्रोवस्कीको वह पकड़कर बाहर लाया और बरफ पर चलनेवाली उसकी स्लेज गाड़ी पर उसे बैठा दिया। ट्रायेकुरोव भी उसीके पीछे-पीछे बाहर आया जिसे अदालतके न्यायाधीश, सेक्रेटरी, मजिस्ट्रेट और दूसरे कर्मचारियोंका दल घेरे था। डब्रोवस्कीके अचानक पागलपन और उसकी विपन्नावस्था देख ट्रायेकुरोवका सारा विजयोत्साह ठंडा पड़ गया। उसकी समस्त कल्पना और सुख पलक मारते विषमय हो गया।

अदालतके न्यायाधीश, जो अपनी भारी सेवाओंकी मान्यताके सम्बन्ध-में उससे कुछ आशा लगाये थे, पेट्रोविचसे प्रेमका एक शब्द तक प्राप्त न कर सके। वह उसी दिन पोक्रोवस्कोईके लिए रवाना हो गया। डब्रोवस्की उस समय बीमार था और बिस्तरपर पड़ा था। जिलेके एक अत्तारने जो सौभाग्यवश उतना मूर्ख नहीं था जितना अमूमन अन्य होते थे—शरीरसे खून निकालकर उसकी चिकित्सा की। खून निकालनेके लिए उसने जोंक और स्पेनकी तितलियोंका उपयोग किया। उसी दिन शाम तक रोगीमें कुछ चेतनताके लक्षण दिखायी पड़े और फिर वह स्वस्थ हो गया। दूसरे दिन वह किश्चेनेवका नामक गाँव लाया गया जो अब किसी भी प्रकार उसका अपना गाँव—अपनी जमींदारी न रह गया था।

३

दिन बीतते गये, किन्तु अभागा डब्रोवस्की फिर स्वास्थ्य-लाभ न कर सका। यद्यपि पागलपनका फिर कोई दौरा उसपर नहीं हुआ, किन्तु उसकी शक्ति देखते-देखते क्षीण होने लगी। उसने अपना पूर्व पेशा छोड़ दिया, दिन-रात अपने कमरेमें पड़ा रहता, कभी बाहर न निकलता, न किसीसे मिलता और हर समय किसी गंभीर चिन्तामें गुम-सुम खोया रहता। उसके पड़ोसी उसकी यह दयनीय दशा देखकर चकित थे।

ईगोरोव्ना—एक सहृदय दयालु बुढ़िया, जो कभी उसके बेटेकी सेवा करती थी—अब वृद्ध पिताकी परिचारिका थी। उसे इस प्रकार रखती मानो वह गोदका कोई बच्चा हो, सोनेके समय उसे सोनेकी याद दिलाती, भोजनके समय खाना खिलाती और हर संभव उपायसे उसे निरोग और सुखी रखनेका प्रयत्न करती। आन्द्रे गैब्रिलोविच बिना किसी प्रतिवादके चुपचाप उसकी हर बात मान लेता। अब उसका बाहरी किसी व्यक्तिसे सम्बन्ध नहीं रह गया था। अब वह ऐसी स्थितिमें नहीं था कि ठीक-ठीक कुछ सोच सके या किसीको कोई आज्ञा दे सके।

ईगोरोव्नाने समझ लिया कि छोटे डब्रोवस्कीको, जो उस समय पीटर्सबर्गमें था और पैदल सेनाका कोई अधिकारी था, उसके वृद्ध पिता की बीमारीका समाचार भेज देना चाहिये। यह सोचकर उसने हिसाब-बहीके खातेसे कागजका टुकड़ा फाड़ा और हरीटनको, जो उस गाँवमें अकेला पत्र लिखने योग्य शिक्षित व्यक्ति था, बुलवाकर एक पत्र लिखाया और उसे उसी दिन शहरमें स्थित डाकघरमें छोड़नेके लिए भेज दिया।

किन्तु अब अवसर आ गया है कि पाठकोंको पुस्तकके वास्तविक नायकका परिचय दे दिया जाय।

ब्लादीमीर डब्रोवस्की शान्ति-सेना-दलमें शिक्षित हुआ था। वहाँ से दीक्षा प्राप्तकर लेनेपर वह अंगरक्षक सेनाका बिगुल बजानेवाला सरदार नियुक्त हुआ। उसका पिता उसके आराम और सुखके बारेमें कभी भी न झुँझलाता, अतः उसे घरसे सदा ही आशासे अधिक रुपये मिलते रहते। धीरे-धीरे वह अपव्ययी तथा महत्वाकांक्षी व्यक्ति हो गया, वह अत्यन्त आराम और विलासी जीवनमें प्रवृत्त हो गया। जुआ खेलता और इस प्रकार कर्जमें फँस गया था। भविष्यकी तनिक भी चिन्ता किये बिना वह मनमाना काम करता। जल्दी या देरसे ही एक धनी सुन्दरी युवती से विवाहकी कल्पनाने इस अज्ञात रूपसे दरिद्र हो जानेवाले युवकके सपनों को मृग-मरिचिकामें डाल रखा था।

एक दिन सायंकाल, जब अनेक अधिकारी उसके कमरेमें मुलायम गद्दोंपर बैठे हुक्का पी रहे थे, ब्लादीमीर डब्रोवस्कीके परिचारक ग्रीशाने उसे एक पत्र लाकर दिया जिसकी लिखावट और मुहर देखकर ही वह चमक उठा।

अत्यन्त शीघ्रतासे उसने मुहर तोड़ डाली, लिफाफा खोला और एक साँसमें ही निम्न पत्र पढ़ गया—

"मैं, आपकी पुरानी बुढ़िया दासी, साहस करके आपको यह सूचित करती हूँ कि हमारे मालिक ब्लादीमीर आन्द्रेयेविच, आपके पापाकी तबियत ठीक नहीं है। उनकी हालत खराब हो गयी है, कभी-कभी वह

पागलों की तरह बड़बड़ाने लगते हैं और कभी असंगत कार्य करने लगते हैं। छोटे बच्चेके समान दिन-रात चुपचाप बैठे रहते हैं। आकाशकी छतकी ओर देखकर सारी रात बिता देते हैं, किन्तु मृत्यु और जीवन तो ईश्वरके हाथकी चीजें हैं। मेरे शानदार बाज (पक्षी)! तुम्हारा भाग्य बढ़े। तुम यथाशीघ्र यहाँ चले आओ। तुम्हारे लिए मैं पेसोक्नोई घोड़े भेज दूँगी। लोग कहते हैं कि अदालतने हम लोगोंको किरिल्ला पेट्रोविच ट्रायेकुरोवकी जमींदारीके अन्तर्गत कर दिया, क्योंकि, जैसा उनका कहना है, हमारा गाँव भी उन्हींका है, किन्तु मैं तो तुम्हारी पुरानी दासी हूँ। मैंने कभी ऐसा नहीं सुना कि तुम्हारा गाँव उनका है। तुम तो पीटर्सबर्गमें रहते हो, ज़ारसे सारी बातें कहना। वह हमारा अहित नहीं होने दे सकते।

तुम्हारी विश्वासपात्र परिचारिका और दासी—
ओरिना ईगीरोव्ना बुजीरेवा

मेरा आशीर्वाद ग्रीशासे कहना। वह तुम्हारी सेवा तो करता होगा। यहाँ प्रायः एक सप्ताहसे घोर वर्षा हो रही है। रोब्या-वह गड़ेरिया, उसे तुम भूले न होगे, गत सेंट निकोलस की तिथिवाले दिन मर गया।

व्लादीमीर डब्रोवस्कीने कुछ अस्पष्ट पंक्तियोंको फिर पढ़ा। उसका मुँह असाधारण और अस्वाभाविक आवेशसे काँप उठा। बचपनमें ही अपनी माताको खो बैठा था, उनकी उसे तनिक भी याद नहीं है। आठ वर्षकी वयमें ही पीटर्सबर्ग भेजा गया जब वह बड़ी कठिनतासे पिता-को जानने लगा था, किन्तु पिताके लिए उसे एक अनिर्वचनीय स्वच्छन्द स्नेह उमड़ आता था। संभवतः इसीलिये वह बातोंके प्रसंगमें पारिवारिक जीवनके आनन्दकी सराहना किया करता था क्योंकि वह स्वयं इस सुखसे वंचित हो गया था।

पिताको भी खो बैठनेके विचारसे वह पीला पड़कर निस्तेज हो गया। जैसा कि पत्रकी भाषासे ज्ञात हो रहा था और जैसी उसने कल्पना कर ली, रोगीकी अवस्थाने उसे उत्साहहीन और भयभीत कर

दिया। अचानक उसका प्रेमाकुल हृदय आज अपने वृद्ध पिताकी असहाय अवस्थापर भीतर ही भीतर रो उठा। किस प्रकार वह सुदूर देहातमें एक फूहड़ बुढ़ियाकी सेवापर पड़े होंगे, लोग उन्हें भावी विपत्तियोंकी कल्पनासे भयभीत करते होंगे, बिना किसी प्रकारकी सहायता पाये वह शरीर और प्राण दोनोंसे दिन-दिन घुलते रहे होंगे। कितना कष्ट उन्होंने झेला होगा। अपने पिताके प्रति इस प्रकार लापरवाह रहनेके कारण अपराधी बनते हुए ब्लादीमीरने मन ही मन अपनेको खूब धिक्कारा। इधर बहुत दिनोंसे उसे पिताका कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ था। कभी उसने उनके लिए किसी प्रकारकी जाँच न की, न तो कभी पत्र लिखा—सदैव यही सोचता रहा कि या तो वह शिकार खेलकर आनन्दसे दिन बिता देते होंगे या गाँव के कामों में फँसे होंगे।

उसने गाँव जानेका निर्णय कर लिया, और यदि उसके पिताका स्वास्थ्य ऐसा न होगा जिसे छोड़कर वह लौट आये, तो वह अपनी नौकरी छोड़ देगा और पिताकी सेवा करेगा। कमरेमें उपस्थित उसके मित्रोंने उसकी यह परेशानी देखी तो वे एक-एक कर चले गये। जब वह कमरे-में अकेला रह गया तो उसने छुट्टीके लिए एक आवेदन पत्र लिखा, पाइप जलायी और चुपचाप प्रगाढ़ चिन्तामें लुढ़क पड़ा।

छुट्टीके लिए उसने उसी दिन दरख्वास्त दे दी। तीन दिन बाद उसने सुदूर गाँवमें पड़े अपने रोगी और वृद्ध पिताको देखनेके लिए यात्रा आरम्भ कर दी और बढ़ता चला गया।

अपने गंतव्य मार्गमें भारी हो रहे दिलमें शोकका प्रचण्ड तूफान लिए वह उस ठिकानपर पहुँचा जहाँसे उसे गाँव जानेके लिए रास्ता बदलना था। उसे रह-रह कर डर लगता कि अब वह जीवित मनुष्योंमें अपने पिता को नहीं देख सकता। अब तक वह शायद जीवित न हों। उसकी आँखोंमें वह दृश्य खिंच गया जब वह अनाथकी भाँति विपत्तिग्रस्त देहातमें पड़ा होगा। वह दुःखमय जीवन, जो उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, उसके सामने नाच उठा—देहातमें एकान्त...अकेले,

चिन्ता और जिम्मेदारियोंका बोझ लिये—ऐसी चिन्ताएँ और जिम्मेदारी जिनके बारेमें अब तक वह कुछ जानता तक नहीं। स्टेशनपर पहुँचते ही वह सीधा पोस्ट मास्टरके पास दौड़ा गया। उसने पूछा कि उसके लिए गाँवसे घोड़े आये हैं ? पोस्ट मास्टरने उसके गन्तव्यका पता पूछ कर बतलाया कि किश्चेनेवकासे आये घोड़े आज चार दिनोंसे उसकी प्रतीक्षामें पड़े हैं।

अभी वह बातें कर ही रहा था कि उसकी आवाज सुनकर उसका बुड्ढा कोचवान ऐन्टन उसके सामने आया जो बचपनमें उसे गोदमें उठाकर अस्तबल ले जाया करता और उसे घोड़े दिखाता। ब्लादीमीरको देखते ही ऐन्टनकी आँखोंसे अनवरत जल-धारा बहने लगी। उसने जमीन तक झुककर अपने युवक स्वामीको सलाम किया और उसे बताया कि उसके वृद्ध पिता अभी जीवित हैं। फिर वह दौड़कर घोड़ोंको तैयार कर गाड़ीमें जोतने चला गया। ब्लादीमीरको खानेके लिए बूढ़े ऐन्टन ने कुछ जलपान खरीद रखा था, उसे सामने रख कर पानी पी लेनेको कहा। किन्तु ब्लादीमीर उसे खा न सका, उसने जल-ग्रहण करनेसे इन्कार कर दिया और अत्यन्त जल्दीबाजीमें गाड़ीपर चढ़कर वहाँसे रवाना हो गया। ऐन्टन देहाती रास्तोंसे गाड़ी ले चला। रास्ते भर वे बातें करते गये।

"बाबूजी और ट्रायेकुरोवके बीच मुकदमेबाजी क्यों हुई ऐन्टन ?"

"भगवान जाने ब्लादीमीर...... लोग कहते हैं कि मालिकका किरिल्ला पेट्रोविचसे कुछ झगड़ा हो गया जिसके कारण किरिल्लाने अदालतसे मालिकपर दावा करवा दिया, यद्यपि वह खुद इतने अच्छे हैं जितने भगवान, पर हम क्या करें ? नौकरोंको मालिकसे उनकी इच्छाके बारेमें प्रश्न नहीं करना चाहिये, लेकिन इतना जरूर कहूँगा। तुम्हारे बाबूजीको किरिल्ला पेट्रोविचके खिलाफ नहीं जाना चाहिये था, नहीं, कदापि नहीं, भला चमड़ेकी पट्टीका कुल्हाड़ेसे कोई जोड़ है ?"

"तो इसके यह मतलब कि किरिल्ला पेट्रोविच यहाँ जो चाहता है, कर गुजरता है।"

"कर ही लेता है मालिक, लोग कहते हैं कि वह मजिस्ट्रेटों तकको कुछ नहीं समझता। उन्हें तो वह अँगुलीका कटा नाखून तक नहीं देता। सभी लोग, जिसे देखो वही, उसके यहाँ उसकी बड़ाई करने आते रहते हैं। ओह, कहा भी तो गया है कि जहाँ सानी खानेकी कठवत होगी वहीं सूअर भी रहता है।"

"क्या यह सही है कि वह हमारी जमींदारी ले रहा है?"

"हाँ मालिक, हम लोगोंने भी ऐसा ही सुना है। अभी कुछ ही दिनों पहले पोक्रोवस्कोई गाँवके गिरजाघरका सेक्सटन* मेरे भाईसे कह रहा था कि देखो, तुम्हारे भी दिन कभी थे, पर अब तो किरिल्ला पेट्रोविच तुम सब लोगोंको अपने अधिकारमें ले रहा है। मीकीता लोहारने भी यही कहा था: देखो सेवेलिच यह कैसा झगड़ा खड़ा हो गया है। अपने ही मित्र और संगीसे यह शत्रुता। किरिल्ला पेट्रोविच आपका मालिक है और आन्द्रे गैब्रिलोविच अपना, और रहे हम सब, वह खुद भगवान और ज़ारके अधीन हैं। तुम रियायाके मुँहपर खोंचा लगाकर उसे बन्द नहीं कर सकते।"

"अच्छा ऐन्टन, तुम क्या किरिल्ला पेट्रोविचको अपना मालिक बनते पसन्द करोगे?"

"किरिल्ला पेट्रोविच? भगवान बचाये। उसके अपने आदमियों को कौन-कौन बुरा दिन नहीं देखना पड़ा। फिर नये आदमी! उनकी तो माँस और खाल दोनों खा कर पचा जायगा। नहीं नहीं, आन्द्रे गैब्रिलो-विचको अच्छा हो जाने दो, वह एक बार फिर खड़े हो जाते! और यदि भगवानने उन्हें अपने पास बुला ही लिया तो हम सिवाय तुम्हें—

---

* गिरजाघरमें घण्टा बजानेवाला कर्मचारी जो अक्सर लोगोंके मरने पर और पूजाके अवसरपर घण्टा बजाया करता है।

अपने उपकारीको छोड़कर किसीको नहीं चाहते। हम लोगोंको उसके लिए मत छोड़ देना। तुम्हारे साथ तो हम रहेंगे ही।" कह कर ऐन्टनने घोड़ोंकी बाग ढीली की और उन्हें चाबुक मार कर तेज किया। संकेत पाते ही घोड़े द्रुतगतिसे आगे भाग चले।

इस बुड्ढे कोचवानकी भक्ति और प्रेम देखकर डब्रोवस्की द्रवित हो उठा। क्षणभर बाद वह पुनः गहरी चिन्तामें लीन हो गया। गाड़ीपर चलते उन्हें एक घन्टेसे कुछ ज्यादा ही हुआ था कि ग्रीशा सहसा बोल उठा—'वह रहा...पोक्रोवस्कोई'। डब्रोवस्कीने अपना सिर उठाया। अब वे एक विशाल झीलके किनारे चले जा रहे थे जिससे एक नदी निकलती थी जो घूमकर पहाड़ियोंके बीच बहती चली जाती थी। सामने दिखायी पड़ती पहाड़ियोंमें से एकपर सघन वृक्षोंकी डालियों और पत्तों के पीछे एक विशाल भवन खड़ा था जिसकी हरी छत और पत्थरके बड़े बड़े खम्भे, छज्जे और बुर्जियाँ साफ दिखायी पड़ रही थीं। दूसरी पहाड़ी पर एक गिरजाघर बना था जिसकी पाँच मीनारें और एक प्राचीन गुम्बद चमक रही थी जिससे विशाल घण्टा लटक रहा था। इसके चारो ओर किसानोंके छोटे-छोटे घर थे जिनमें रसोई-घर, बागीचे और कूएँ भी दिखायी पड़ रहे थे। यह स्थान डब्रोवस्कीके लिए परिचित था। उसे याद हुआ जब वह इन्ही टूहोंपर अपनेसे दो वर्ष छोटी माशा ट्रायेकुरोवके साथ खेला करता था जिसका अपूर्व सौन्दर्य यौवन काल प्राप्त करते मानो अद्वितीय शोभा और लावण्य लानेकी प्रतिज्ञा-सा कर रहा था। कितनी होनहार थी वह। उसकी इच्छा हुई कि वह ऐन्टनसे उसके भी सम्बन्धमें कुछ पूछे, किन्तु अचानक लज्जाधिक्यने उसकी वाणीपर रोक लगा दी और वह चुपचाप चलने लगा। जैसे ही वह उस घरके पास पहुँचा, सामने बागीचेमें वृक्षोंकी छायाके नीचे लहराती एक श्वेत गाउनवाली युवतीसे उसकी आँखें जा टकरायीं, किन्तु उस क्षण ऐन्टनने शहरी और देहाती दोनों ही कोचवानोंमें समान रूपसे पाये जानेवाले अभिमानसे प्रेरित हो घोड़ोंको इशारा किया जो सरपट दौड़ते हुए पुल पार कर गये और

उसी प्रकार दौड़ते रहे जबतक कि गाँव पीछे छूट नहीं गया। इस गाँवके आगे जाकर वे अब एक पहाड़ीपर चलने लगे। ब्लादीमीरने भोजपत्रके कटे हुए पेड़ोंकी झाड़ियोंको देखा जिनकी लकड़ी काट ली गयी थी। एक खुले स्थानपर बायीं ओर एक भूरे रंगका मकान था जिसकी छत लाल थी, उसका हृदय अब वेगसे धड़कने लगा। किश्चेनेवका गाँव और उसके पिताका प्रिय निवास अब उसकी आँखोंके सामने था।

दस ही मिनटमें वह अब अपने मकानके सामनेवाले मैदानमें आ गया। उसने अपने चारो ओर अवर्णनीय भावसे देखा। अपनी जन्म-भूमिको छोड़े उसे बारह वर्ष हो चुके थे। भोजपत्रके छोटे-छोटे पौधे और डालियाँ, जो उसके बचपनमें लगायी गयी थीं, अब सघन विशाल डालोंवाले वृक्ष बन गये थे। उसके बैठकखानेके सामनेका बगीचा, जिसमें कभी आयताकार तीन रविशें थी, जिनसे होकर रास्ता जाता, जिसके दोनों ओर रंग-बिरंगे फूलवाले पौधे लगे होते, अब एक उजाड़ मैदान बन गया था जिसमें कहींका छूटा हुआ एक घोड़ा घास चर रहा था। कुत्तोंने तो पहले भूँक-भूँककर बहुत शोर मचाया, किन्तु गाड़ीपर ऐन्टनको सवार देखकर उन्होंने उसे पहचान लिया और तब चुप हो कर वे अपना प्रेम दिखाने लगे। नौकरों और दासोंका दल अपने-अपने कमरोंसे निकल पड़ा और उसने गाड़ीको घेर लिया। अपने नवयुवक मालिकको देखकर वे अपार हर्षसे नाचते-से लगे। इनके बीचसे होकर उसने किसी प्रकार रास्ता बनाया और सीढ़ियोंपर दौड़ गया। बारान्देमें उसे बुढ़िया ईगोरोव्ना मिली जिसने अपने दोनों लम्बे पतले हाथोंसे अपने वर्षों पूर्वके धरोहरको पकड़ लिया और फफक-फफककर रोने लगी।

"कहाँ है पिताजी? आया, क्या वह बहुत बदल गये हैं? वह कैसे हैं?" हड़बड़ाकर ब्लादीमीर पूछने लगा। उसने रोती हुई बुढ़िया दासी को अपने कलेजेसे लगाकर उसे सात्वना दी और फिर अपने पिताके स्वास्थ्यके विषयमें पूछने लगा।

उसी वक्त एक लम्बा वृद्ध पुरुष, पीला, और निस्तेज काँपता हुआ वहाँ आया। वह अपना ड्रेसिंग गाउन और रातको पहनेवाली टोप लगाये था।

"तो तुम आगये बोलोद्या।" उसने स्फुट स्वरमें चीत्कार किया किन्तु जोरसे न कह सका। ब्लादीमीरने झपटकर अपने पिताको गले से लगा लिया।

वृद्धके लिए इतना हर्ष असह्य था। आनन्दातिरेकसे काँपकर वह झूल पड़ा। उसके घुटने लच गये। यदि उसके युवक पुत्रने अपनी बलिष्ठ भुजाओंपर उसे रोक न लिये होता तो वह धरतीपर गिर पड़ता।

"आप क्यों उठकर चले आये?" ईगोरोव्नाने पूछा।—"आप मुश्किलसे खड़े हो सकते हैं फिर भी आप औरोंकी तरह दौड़ना चाहते हैं।"

बूढ़ा अपने सोनेके कमरेमें लाया गया। उसने पुत्रसे बातें करना चाहा, किन्तु वह केवल अस्पष्ट और टूटे-फूटे अर्थहीन वाक्य ही कह सका। शीघ्र ही उसने यह कहना भी बन्दकर दिया और तत्काल अचेत हो गया। ब्लादीमीर अपने पिताकी यह दुर्बलता देख दुःख, भय और आश्चर्यसे स्तंभित हो रहा था। वह वहीं पिताके कमरेमें ठहर गया और उसने लोगोंसे कह दिया कि वे उसे कुछ देर तक अकेला छोड़ दें जिससे वह चुपचाप अपने पिताको देख सके। सेवकोंने उसकी आज्ञा मान ली और अपने साथ वे ग्रीशाको पकड़ ले गये। उसे वे अपने कमरोंमें ले गये जहाँ देहाती ढंगसे उसका सत्कार करने, उसपर प्यार दिखाने और नाना प्रकारके प्रश्न पूछने लगे।

४

गाँव आनेके कुछ दिनों बाद युवक डब्रोवस्कीने जमीदारीके कामों में मन लगानेका निश्चय किया, किन्तु उसके पिता इस समय उसे उसकी किसी आवश्यक जिज्ञासाको शांत करनेमें सर्वथा समर्थ थे और न तो उन्होंने पहले कभी कोई वकील ही नियुक्त किया था जो सभी सूचनाएँ दे सकता। हारकर ब्लादीमीरने अपने पिताके कागज-पत्रोंको उलटना शुरू किया जिसमें उसे सिवाय उस नोटिसके, जो मजिस्ट्रेट द्वारा उसके पिताको दी गयी थी, और उसके उत्तरमें लिखी उसके पिताके मसविदे की रद्दी नकल, उसे कुछ न मिल सका। इन दोनों कागजोंसे उसे मुकदमेकी वास्तविक स्थितिका अन्दाज लगानेमें कोई सहायता न मिली। अन्तमें थककर उसने मुकदमेंमें सत्यपर दृढ़ रहने और न्याय का विश्वास करके चुप रह जानेका ही विचारकर लिया।

इस बीच आन्द्रे गैव्रिलोविचका स्वास्थ्य दिनपर दिन बदतर होता गया। ब्लादीमीर भावी विपत्तियोंको घहराती देखकर निराशासे पीड़ित हो दिन-रात बापके पलंगके पास पड़ा रहता। वह उसे क्षण भरके लिए भी अकेला न छोड़ता जो वृद्धावस्थाजनित मानसिक

दुर्बलतासे इतना क्षीण हो चुका था जो न बोल पाता था और न उठ ही सकता था।

इसी फेरमें अपील करनेके लिए कानून द्वारा निश्चित अवधि बीत गयी और कोई अपील न की जा सकी। किश्चेनेवका अब ट्रायेकुरोवका हो गया। फलतः एक दिन शाबास्कीं किरिल्ला पेट्रोविचके सामने बधाई देता और शीश झुकाता हुआ आया और बोला कि अपनी नव विजित जमीदारीको किसी दिन शुभ मुहूर्तमें या तो स्वयं चलकर कब्जेमें कर लिया जाय या किसी वकीलके मार्फत किया जाय। किसी लोभपूर्ण कामनासे प्रेरित होकर नहीं, बल्कि अब उसका हृदय बहुत कुछ उदास हो चुका था। उसने सोचा कि बदला लेनेकी भावनासे वह अपने स्थानसे कितना दूर चला गया, कितना क्रूर हो उठा था। अब उसकी चेतना उसका मर्म-भेदन करने लगी। वह अपने यौवन कालके मित्र, अब शत्रु, की दीनावस्थाको भलीभाँति जान चुका था और इसीलिये मुकदमेमें जीत हो जानेपर भी उसे कुछ उल्लास न हो सका। उसने शाबास्कीं की ओर नाक-भौंह चढ़ाकर देखा और उसे बिलग करने लिए कोई बहाना सोचने लगा। किन्तु जब कोई बहाना न सूझा तो वह नाराज होकर बोला—"चले जाओ, मुझे अभी बहुत-सी बातोंपर विचार करना है।"

किरिल्ला पेट्रोविचको प्रसन्न मुद्रामें न पाकर शाबास्कीं सिर झुका कर तेजीसे कमरेसे निकल भागा। किरिल्ला जब फिर कमरेमें अकेला रह गया तो मुँहसे सीटी बजाता इधर उधर टहलने लगा और "विजयके नगाड़े बजाओ, बजाओ" वाला गीत धीरे धीरे गुनगुनाने लगा जो स्पष्ट ही उसकी मानसिक उद्विग्नता और व्याकुलताका लक्षण था।

अन्तमें उसने अपनी दो पहियोंवाली रेसकी गाड़ी मँगायी (जिसमें केवल एक ही व्यक्ति बैठ सकता है), गरम कोट पहना (यद्यपि यह सितम्बरका महीना था) और देखते-देखते अपने विशाल भवनके फाटकसे सर्वथा अकेला बाहर निकल गया।

जब उसकी आँखें आन्द्रे गैब्रिलोविचके छोटे मकानपर जाकर अड़ गयीं तो उसके हृदयमें दो प्रकारके विरोधी भाव उठने लगे। शक्तिकी चाहको तृप्त करनेकी विजयपूर्ण भावना और प्रतिशोधकी तृष्णा बुझानेके विचारोंने कुछ क्षणों तक उसके मनमें उठते मानवीय भावों का गला घोंट रखा था, किन्तु अन्तमें उत्तम भावोंकी ही विजय हुई। अब तकके जीवन-साथीके प्रति किये गये सारे कार्योंकी क्षति पूर्ति करने का उसने निर्णयकर लिया; वह उसे उसकी सम्पत्ति वापस कर अपनी समस्त कटुता धो देगा। इन विचारोंसे उसके हृदयको कुछ शान्ति मिली। दिल जब कुछ हलका हुआ तो उसने घोड़ोंको और तेजकर अपने पड़ोंसी मित्रकी जमीदारीमें प्रवेश किया और सीधा उसके बैठक-खानेके सामनेवाले चबूतरे तक चढ़ा चला गया।

रोगी दैवात् अपने सोनेके कमरेमें खिड़कीपर ही बैठा हुआ था। किरिल्ला पेट्रोविचको निकट देख और पहचानकर उसके चेहरेपर भय, और घबराहट फैल गयी, उसके पीले सूखे चेहरेपर गहरी मुर्दनी छा गयी, उसकी आँखें चमक उठीं और उसके मुँहसे कुछ अस्पष्ट आवाज सुनायी पड़ने लगी। उसके पुत्रने, जो कमरेमें ही बैठा कुछ हिसाब कर रहा था, आहट पाकर सिर उठाया और पिताके चेहरेमें यह परिवर्तन पाकर चिहुँक उठा। रोगीने क्रोध, भय और घृणा मिश्रित भावसे अँगुली उठा कर बाहर खिड़कीकी ओर संकेत किया। वह अपने ड्रेसिंग गाउनके किनारोंको शीघ्रतासे उठाने लगा, खड़ा होनेके लिए प्रयत्न करने लगा और इसी प्रयासमें कुर्सीसे उठते हुए जमीनपर अचानक गिर पड़ा। उसका लड़का दौड़कर उसके पास आया। वृद्ध जमीन पर बेहोश पड़ा था, उसकी साँस बड़ी कठिनाईसे चल पा रही थी। उसे जबर्दस्त धक्का लगा था।

"जल्दी दौड़ो, जाओ, जाओ। शहरसे किसी अत्तारको शीघ्र भेजो।" ब्लादीमीर चिल्लाया।

उसी समय एक नौकर कमरेमें घुसा और उसने बताया कि किरिल्ला पेट्रोविच उससे मिलना चाहते हैं।

व्लादीमीरने उसकी ओर हिंस्र दृष्टि देखा।

"जाकर किरिल्ला पेट्रोविचसे कह दो कि मैं अपने नौकरोंको आज्ञा दूँ कि वे उसे उठाकर फाटकके बाहर फेंक दें, इसके पहले ही वह भाग जाय, चला जाय यहाँसे जल्दीसे जल्दी। जा, कहदे।"

नौकर दौड़कर चला गया कि स्वामीकी आज्ञा उसे सुना दी जाय किन्तु ईगोरोव्नाने अपनी बाहें फैला दीं—"ओह बच्चे, मेरे मालिक तुम अपनेको बर्बाद ही कर डालोगे। किरिल्ला पेट्रोविच हमें इस हानिके बदले बहुत अधिक देगा।"

"शान्त रहो आया"—व्लादीमीर क्रोधसे बोला—"जाओ और ऐन्टनको शहर भेज दो कि वहाँसे कोई अत्तार बुला लाये।"

ईगोरोव्ना कमरेके बाहर चली गयी। अब भीतर कोई न रह गया था। सभी नौकर किरिल्ला पेट्रोविचको देखने बाहर निकल गये थे। वह दौड़ी हुई ठीक समयपर बारान्देमें जा पहुँची कि देखूँ वह नौकर अपने स्वामीकी आज्ञा किस प्रकार सुनाता है। गाड़ीमें अपनी सीटपर बैठे ही बैठे किरिलाने नौकरका उत्तर सुना जिसे सुनकर उसका चेहरा रातके समान गाढ़ा काला पड़ गया, उसके होठोंपर एक विनाशकारी उपहास नाच उठा। नौकरकी ओर धमकी भरी दृष्टि डालकर वह मुड़ा और शीघ्रतासे बाहर निकल गया। चलते-चलते उसने ऊपर उस खिड़कीपर दृष्टि डाली जहाँ रोगी आन्द्रे गैव्रिलोविच एक मिनट पहले बैठा था, किन्तु अब वह वहाँ दिखायी नहीं पड़ रहा था। बूढ़ी दासी अपने मालिककी आज्ञाकी कुछ परवाह न कर उसी प्रकार बारान्देमें खड़ी थी।

नीचे नौकर जोरोंसे इस घटनाकी चर्चाकर बहसकर रहे थे कि सहसा व्लादीमीर उनके बीच आकर खड़ा हो गया।

"अत्तारको बुलानेकी अब कोई आवश्यकता नहीं; पिताजी की मृत्यु हो गयी।" उसने कहा।

एक अजीब घबराहट फैल गयी। नौकर अपने बूढ़े मालिकके कमरे में घुस गये। वह अपनी आराम कुर्सीपर लुढ़का पड़ा था, संभवतः ब्लादीमीरने ही उसे उठाकर आराम कुर्सीपर बैठा दिया था। उसका दाहिना हाथ कुर्सीसे लटककर नीचे झूल रहा था और फर्शका स्पर्शकर रहा था। उसका सिर लटक गया था। शरीरमें जीवनका अब कोई चिन्ह शेष न था, हाँ, देह अब भी गरम थी। ईगोरोव्नाने उसपर एक चादर ढाँप दी। नौकरोंने–जिनकी जिम्मेदारीपर लाश पड़ी थी, उसे घेरकर खड़े थे। उन्होंने शवको उठाया, धोया, नहलाया और वह पोशाक उसे पहनायी जो इस कार्यके लिए सन् १७६७ से ही बनाकर तैयारकर दी गयी थी। तब उनलोगोंने उसे सजाकर उसी टेबुलपर सुला दिया जिसपर आज तक इतने दिनों उसकी सेवा करते आये थे।

५

अन्त्येष्टि क्रिया तीन दिनों बाद हुई। उस अभागे वृद्ध पुरुषका शव उसी प्रकार टेबुलपर पड़ा रहा, उसे अन्तिम वस्त्रमें लपेट दिया गया था और उसके चारों ओर मोमबत्तियाँ जल रही थीं। भोजन करनेवाला कमरा नौकरोंसे भर गया था जो शवको उसके अन्तिम विश्राम-स्थल पर ले जाये जानेका इन्तजार कर रहे थे। व्लादीमीर और तीन अन्य नौकरोंने शव उठाया। पुरोहित रास्ता दिखाता हुआ आगे-आगे चला। साथमें क्लर्क भी था। सभी अन्त्येष्टि क्रियाके समयका शोक-गीत गा रहे थे। किश्चेनेवका गाँवके स्वामीने अन्तिम बार अपने मकानकी ड्योढ़ी लाँघी और फिर कभी भीतर न जा सका। शवको वे उस जंगल तक लाये जहाँ लकड़ी काटी जाती थी। गिरजाघर भी सामने ही था। दिन स्वच्छ, प्रभापूर्ण और शीतल था—ठंडा। पतझड़ होनेसे वृक्षोंसे पत्ते गिर रहे थे।

जैसे ही वे जंगलसे आगे निकले, नीमके पेड़ोंके बीच बना पुराना गिरजाघर दिखायी पड़ा। वहाँ व्लादीमीरकी माताके शरीरके अवशेष अब भी भूमिके गर्भमें पड़े विश्राम कर रहे थे जहाँ उसकी कब्रके

बगलमें ही कल एक नया गड्ढा उसके पिताके लिए खोद दिया गया था।

गिरजा किसानोंसे भर गया था जो किश्चेनेवका गाँवके थे और जो अपने स्वामीके प्रति अन्तिम सम्मान प्रकट करने आये थे। युवक डब्रोवस्की शोक-गीत गानेवालोंके निकट खड़ा था; वह न तो प्रार्थना ही करता था और न रोता था। उसका चेहरा देखनेमें अत्यन्त भयानक हो गया था। यह शोकपूर्ण कार्य कुछ देरमें समाप्त हो गया। व्लादीमीर ने सबसे पहले शवको विदाईका नमस्कार किया और उसके नौकरोंने बारी-बारीसे उसका अनुसरण किया। शवको भीतर लाया गया और कफनको काटेंसे जड़ दिया गया। स्त्रियाँ गला फाड़-फाड़कर विलाप कर रहीं थीं और बहुतसे पुरुष भी अपनी आँखें सूखी न रख सके। अपने वस्त्रोंसे वे अपनी आँखें पोछने लगे। व्लादीमीर और उन्हीं तीन नौकरोंने शवको गिरजाघरके मैदानमें लाकर रखा, उनके पीछे गाँव के सभी लोग खड़े हो गये। शव धीरेसे कब्रमें उतारा गया, सबने बारी-बारीसे उसपर एक-एक मुट्ठी धूल डाली और जब कब्र बिलकुल भर गयी तो उससे अन्तिम विदा लेकर सब चले गये। व्लादीमीरने सबकी अपेक्षा अधिक जल्दी की और वह सबके देखते-देखते वहाँसे भागा और किश्चेनेवकाके जंगलोंमें अदृश्य हो गया।

अपने नये मालिक युवक डब्रोवस्कीकी ओरसे उसकी बुढ़िया दासी ईगोरोव्नाने सब लोगोंको श्राद्धका निमंत्रण दे दिया। उसने पुरोहित तथा उसके अन्य सभी साथियोंको इस शोक-भोजमें सम्मिलित होनेको कह दिया। उसने यह भी बता दिया कि उनके गृहस्वामी इस भोजमें स्वयं उपस्थित न रहेंगे। रास्ते भर ऐन्टन, उसकी पत्नी फेडोटोवना, पुरोहित, क्लर्क और दूसरे व्यक्ति पैदल चलकर, अपने मृत स्वामीके गुणोंका बखान करते घर आये। उन्होंने आशा प्रकट की कि बापके सद्गुण अवश्य ही उसके पुत्रमें प्रकट होंगे।

ट्रायेकुरोवके यहाँ आने और किस प्रकार उसका यहाँ स्वागत किया गया, यह सारी बात अबतक गाँव भरमें प्रत्येक व्यक्ति तक फैल चुकी थी, और बहुतसे बुद्धिमान समझे जानेवाले लोग गाँवमें कुछ नयी बात हो जानेकी भविष्य-वाणी-सी करने लगे।

"जो कुछ भी होनेको लिखा है, अवश्य होगा।" पुरोहितकी पत्नी ने कहा—"किन्तु यह शर्मकी बात है यदि ब्लादीमीर हमारा मालिक न रहे और उसके बदले कोई और हमारा मालिक बन जाय। वह एक बहादुर और साहसी नवयुवक है।"

"क्यों, दूसरा ऐसा कौन है जो हमारा मालिक होगा।" ईगोरोव्ना ने बीच हीमें बात काटी—" फिर किरिल्ला पेट्रोविचको यह सब हल्ला भी मचानेकी जरुरत न पड़ेगी, हमारे इसे तेज बाज (ब्लादीमीर) जैसा जोड़ा उसे अपनी लड़कीके लिए कहाँ मिलेगा? वह स्वयं इस कार्यके लिए खड़ा होगा और ईश्वरकी दयासे अभी ऐसे लोग हैं जो उसकी सहायता करेंगे। किरिल्ला पेट्रोविच बड़ा अभिमानी है, किन्तु जब मेरे ग्रीशाने उसे डाँटते हुए दुतकारा था—"भाग जाओ बूढ़े कुत्ते, यहाँसे अभी निकल जा", तो क्या वह छिपकर नहीं चला गया!

"अरी ओ ईगोरोव्ना!" क्लर्क बोला—"तुम्हारे उस ग्रीशाने किरिल्ला पेट्रोविचको यह सब सुनानेका साहस कैसे कर लिया, क्योंकि मैं किसी बिशपको तो भले गाली तक दे सकता हूँ, किन्तु किरिल्ला! बाप रे! मैं उसकी ओर आँखें उठाकर सीधा देख भी नहीं सकता। जानती हो क्यों? उसके देखने मात्रसे ही मुझमें भय और घबड़ाहट ऐसी भर जाती है कि मुझे पसीना छूटने लगता है। मेरी पीठ मानो आप ही आगे झुकने लगती है......।"

"अभिमानियोंमें भी अभिमानी।" पुरोहित बोला—"एक दिन उसके लिए भी इसी प्रकार अन्त्येष्टि क्रिया होगी, जैसा कि अभी आन्द्रे गैव्रिलोविचके लिए हुआ है। संभव है उसकी अन्त्येष्टि ज्यादा शानदार हो, उसमें ज्यादा भीड़ हो, ठीक है, किन्तु ईश्वरकी दृष्टिमें सब एक से हैं।"

"अरे पिता (पुरोहित) ! हमलोग तो सारे गाँवको निमंत्रित करना चाहते थे, किन्तु ब्लादीमीर आन्द्रेयेविच हम लोगोंको यह करने न देगा। खानेकी यहाँ क्या कमी है, हमलोग पूरी दावत दे सकते हैं, किन्तु यह सब तो होना न था। आह, चूँकि हमारे मेहमान बहुत कम हैं, अतः हम आपलोगोंका सत्कार भली प्रकारसे कर सकते हैं।"

ऐसी सत्कारपूर्ण बातें और प्रसन्नतापूर्ण तैयारी देखकर लोग जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने लगे। शीघ्र ही वे डब्रोवस्कीके घर आ गये जहाँ पहलेसे ही टेबुल तैयार थे और वोडका (शराब) भरी थी।

इसी बीच ब्लादीमीर उधर जंगलके भीतर चलता गया, थकावट होने पर भी गतिसे प्रेरित हो वह गहरे वनमें घुस गया जहाँ बैठकर अपनी व्यथा मिटा ले। वह यह न जानता था कि कहाँ जा रहा है और न उसे इसकी चिन्ता ही थी। उसके हाथों और चेहरेपर झुकी हुई डालियोंकी अनवरत चोटसे काफी घाव लग चुके थे। पैरमें पत्थरके टुकड़ोंसे अँगुलियाँ फूट गयीं। फिर भी वह बढ़ता गया था। बीच-बीच में उसे दलदल मिलता जिसमें उसके पाँव धँसते, किन्तु उसने इसकी भी परवाह न की। अन्तमें वह ऐसे स्थानपर पहुँचा जो चारों ओरसे झाड़ियोंसे घिरा हुआ था। इसी जगह सघन वृक्षोंके नीचेसे चक्कर काटकर एक घुमावदार नदी बहती चली गयी थी। पतझड़के कारण वृक्षों की पत्तियाँ आधी गिर चुकी थीं।

यहाँ आकर ब्लादीमीर ठहर गया। एक स्वच्छ और शीतल घाससे ढँकी जमीन देखकर वह उसीपर बैठ गया और फिर उसी निराशामय विचारोंके प्रखर प्रवाह में अपनेको छोड़ दिया।

अपने अकेले हो जानेकी भावनासे उसे मर्मान्तक वेदना पहुँच रही थी। उसका भविष्य जैसे भयावने काले बादलोंसे ढँक गया था। ट्रायेकुरोवकी शत्रुतासे नयी विपत्तियोंकी आशंका-सी उठ खड़ी हुई थी। उसकी सारी सम्पत्ति—जो बहुत छोटी थी दूसरेके हाथ चली जानेवाली थी और तब उसके लिए केवल दारिद्रय ही बाट देख रहा था। वह

बहुत देर तक स्रोतके तटपर मौन और निश्चेष्ट बैठा रहा, यद्यपि आँखें सरिताकी तीव्र धारामें बहती पत्तियोंपर नाच रही थीं, किन्तु मनमें विचारोंका भीषण ऊहापोह चल रहा था। जीवन और मृत्युका पत्तियोंके झड़ने और सरितामें बह जानेके साम्य और कल्पनापर उसका ध्यान गया। अन्तमें उसे बढ़ते हुए अन्धकारका ज्ञान हुआ। वह उठ खड़ा हुआ और अन्धेरेमें भटकने लगा। घर आनेके लिए उसे मार्ग न मिलता था। अन्तमें बहुत भटकनेके बाद उसे एक ऐसा रास्ता मिल गया जिससे वह अपने घर चला गया।

रास्तेमें डब्रांवस्कीको पुरोहित और उसके सहायकोंका दल जाता हुआ मिला। उसके मनमें आया कि यह शकुन ठीक नहीं•••और वह अपने इस स्वभावके कारण बगलमें हट गया। एक बड़े वृक्षकी छायामें उसने अपनेको छिपा लिया जिससे वे उसे देख न सके और आपसमें बातें करते हुए आगे बढ़ गये।

"बुराइयोंसे बचो और नेक कार्य करो"—पुरोहित अपनी पत्नीको समझा रहा था—"ऐसी कोई शक्ति नहीं जो हमें यहाँ बाँध रखे। जो कुछ भी हो रहा है, इससे तुम्हारा कोई सरोकार नहीं•••।"

उत्तरमें उसकी पत्नीने भी कुछ कहा, किन्तु ब्लादीमीर उसे सुन न सका।

ज्यों ही वह घर पहुँचा, उसने बाहर चबूतरेपर बड़ी भीड़ देखी। गाँवके किसान और घरके नौकर-चाकर बाहर एकत्र हो गये थे। दूरसे ही ब्लादीमीरने भीड़की आवाज सुनी थी। मकानके सामने तीन घोड़ोंवाली दो गाड़ियाँ खड़ी थीं। बहुतसे अजनबी पुरुष यूनिफार्म पहने बारामदेमें खड़े थे जो किसी बातपर तर्क करते-से दिखलायी पड़ रहे थे।

"यह सब क्या तमाशा है?" उसने ऐन्टनसे पूछा जो उसे दूर से आता देखकर ही आगे बढ़कर उससे मिलने आ रहा था—"वे लोग कौन हैं और चाहते क्या हैं?"

"ओह ब्लादीमीर आन्द्रेयेविच, मेरे मालिक !" बूढ़ेने कराहकर कहा—"वे लोग जिलेकी अदालतसे आ रहे हैं। वे हमें आपसे छीनकर ट्रायेकुरोवको दे देना चाहते हैं।"

ब्लादीमीरने अपना सिर लटका दिया। उसके सभी दास-सेवक और भृत्य अपने उस अभागे और उदास स्वामीको घेर कर खड़े हो गये।

"आप हमारे पिता तुल्य हैं"—वे चिल्लाये। उसका हाथ पकड़ कर उसे चूमते हुए उन्होंने कहा—"हम सिवाय आपके और कोई मालिक नहीं चाहते। हमें आप कुछ कहें और तब हम जजोंके फैसले का मजा दिखायें। हम आपको छोड़कर कहीं अन्यत्र जानेसे मर जाना अधिक पसन्द करते हैं।"

जैसे ही उसने उन सबपर अपनी दृष्टि डाली एक अजीब विचार उसके मनमें आ टकराया।

"तुम सब यहीं रुको, मैं जाता हूँ और उन कर्मचारियोंसे बातें करके आता हूँ।"

"उनसे बातें कर लो मालिक"—भीड़मेंसे आवाजें आयीं—"कोशिश करो और इन चमरपिल्लोंको लजवाओ।"

ब्लादीमीर धीरे-धीरे चलकर कर्मचारियोंके पास पहुँचा। शाबास्कीं, जो हाथके केहुने और कलाइयाँ कमरपर रखे था, एक हाथमें टोपी लिये चुपचाप यह दृश्य देख रहा था। इस्प्रावनिक—उनके अधिकारीने, जो एक लम्बा और भरकम आदमी था, जिसकी आयु लगभग पचास वर्षकी और चेहरा लाल और बिना दाढ़ीका था, आते हुए डब्रोवस्कीको देखा और सूअरकी तरह वह गुर्राने लगा।

"मैं तुमसे एक बार फिर कहता हूँ"—वह बड़े कठोर स्वरमें बोला—"जिलेकी अदालतकी आज्ञानुसार अब तुम किरिल्ला पेट्रोविच ट्रायेकुरोव-के अधीन हो गये जिसका प्रतिनिधि मजिस्ट्रेट शाबास्कीं यहाँ उपस्थित है। उसकी प्रत्येक आज्ञाका पालन करो; और जहाँ तक तुम्हारा प्रश्न है

...तरुणियाँ...तुम खुद ही उन्हें प्रसन्न करना जानते होगे क्योंकि वह तुम्हें बहुत ही चाहता है।"

प्रधान अधिकारी (इस्पावनिक) जोरसे हँसा, अपने उपहासपर उसका मन प्रसन्न हो उठा। शाबास्कीं और दूसरे कर्मचारियोंने ही-ही करके उसके हास्यमें अपनी हँसी मिला दी। व्लादीमीर व्यंगसे जल उठा।

"क्या मैं आपसे इन सब बातोंका अर्थ पूछ सकता हूँ?" उसने फूल कर कुप्पा होते हुए इस्पावनिकसे इस प्रकार पूछा मानो वह बोलना नहीं चाहता, बल्कि बलपूर्वक बोल रहा है।

"मैं बतला दूँ इसका मतलब। इसका यही अर्थ है"—उस चतुर अधिकारीने उत्तर दिया—"कि हम लोग किरिल्ला पेट्रोविच ट्रायेकुरोवके अधिकारोंको स्थापित करने और कुछ दूसरे लोगोंको राय देने तथा उन्हें ले जानेके लिए यहाँ आये हैं।"

"यहाँ मेरे किसानोंको एकत्र कर उन्हें भड़कानेके पूर्व आप मेरे पास आये होते और मुझसे सारी बातें कह डालते...।"

"तुम कौन होते हो?" शाबास्कीं बोला—इस गाँवका पहला मालिक, आन्द्रे, जो गैब्रिल डब्रोवस्कीका पुत्र था, ईश्वरकी इच्छासे मर चुका। और हम न तो तुम्हें जानते हैं और न जाननेकी इच्छा ही हमें है।"

"यह हमारे नये मालिक हैं—व्लादीमीर आन्द्रेयेविच" भीड़में से किसीने उच्च स्वरमें कहा जिसे सबने सुन लिया।

"कौन वहाँ यह सब कहनेका दुस्साहस कर रहा है?" प्रधान अधिकारी इस्पावनिकने धमकी भरे स्वरमें झुड़क कर पूछा—"कैसा मालिक? कौन व्लादीमीर आन्द्रेयेविच? तुम्हारा मालिक अब किरिल्ला पेट्रोविच ट्रायेकुरोव है। सुना तुम लोगोंने मेरी बात? उजड्ड!"

"नहीं नहीं, वह हमारा मालिक नहीं है।" उसी स्वरने फिर कहा।

"यह तो दंगा मालूम होता है, जैसे सब फसादपर अमादा हों। बुड्ढे ! इधर आओ।" इस्प्रावनिक चिल्लाया।

गाँवका एक बुड्ढा आगे बढ़ा।

"जरा पता तो लगाओ वह कौन छोकरा है जो भीड़में से इस प्रकार मेरी बात काट कर जवाब दे रहा है। मैं उसे अवश्य ही उसके सिपुर्द कर दूँगा।"

बुड्ढा भीड़की ओर मुड़ा और उसके निकट जाकर खड़ा हो गया ; पूछा कि वह कौन व्यक्ति है जो पहले बोल रहा था, किन्तु किसी ने एक शब्द न किया। फिर सहसा पिछली ओर से कुछ फुसफुसाहट उठी जो देखते-देखते चारो ओर फैल गयी और शनैः शनैः तीव्रतर हो गयी। उस उच्च निनाद में कोई बात सुनायी पड़ना भी कठिन हो गया। कान जैसे बहरे हो रहे थे।

"चले आओ जवानो—हम किसलिए प्रतीक्षा करें?" नौकरोंने चिल्लाकर कहा—और भीड़ आगेकी ओर टूट पड़ी।

शाबास्की और उसके दूसरे साथी शीघ्रतामें घबराकर मकानके भीतर घुस गये और भीतरसे उन लोगोंने ताला बन्द कर दिया।

"बाँध लो, उन्हें गिरफ्तार कर लो जवानो।" उसी व्यक्ति की आवाज थी। भीड़ आगे बढ़ी।

"ठहरो"—डब्रोवस्की चिल्लाया—"अरे मूर्खो, तुम यह क्या करने जा रहे हो? तुम सब बर्बाद हो गये हो। मुझे भी बर्बाद कर दोगे? सब अपने घरोंमें चले जाओ और मुझे यहाँ अकेला छोड़ दो। तनिक भी न डरो। हमारा ज़ार बड़ा दयालु है। मैं उससे सारी बात कहूँगा, वह कभी हमारा अहित नहीं देख सकता। हम सब उसके बच्चे हैं, किन्तु यदि तुम इस प्रकार दंगा करोगे और अशान्ति उत्पन्न करोगे तो वह तुम्हारी क्या रक्षा करेगा?"

युवक डब्रोवस्कीके शब्दों, उसकी गूँजती अवाज और उसके प्रभावशाली व्यक्तित्वने इच्छित प्रभाव डाला। भीड़ शान्त हो गयी, लोग

बँट गये और देखते-देखते मैदान खाली हो गया। कमीशनके अधिकारी अब भी प्राण-रक्षाके भयसे भीतर घुसे थे। अन्तमें शाबास्कीने बिना किसी प्रकारका शब्द किये धीरेसे दरवाजा खोला, सिर निकालकर बाहर झाँका और भीड़ तितर-बितर देखकर बाहर बारान्देमें आया। उसने ब्लादीमीरको धन्यवाद दिया कि उसीकी दया और रक्षासे उनके प्राण बचे।

ब्लादीमीरने चुपचाप क्रोधपूर्वक उसकी बात सुन ली, किन्तु कुछ कहा नहीं।

मजिस्ट्रेटने फिर कहा—"हमने निर्णय कर लिया है। आपकी आज्ञासे हम लोग आजकी रात यहीं रहते हैं। क्योंकि अब तो अँधेरा भी बढ़ चला है। रात हो गयी है, फिर कहीं आपके किसान और नौकर हमपर रास्तेमें आक्रमण न कर दें। क्या आप हम लोगोंके लिए उस बड़े हॉलमें फर्शपर कुछ पुआल नहीं डलवा देंगें? हम लोग रात भर उसी पर पड़े रहेंगे और पौ फटते ही यहाँसे चल देंगे।"

"जो इच्छा हो करो।" डब्रोवस्कीने निरुत्साह होकर कहा—"अब मैं यहाँका मालिक नहीं रह गया।" इन शब्दोंके साथ वह अपने पिताके कमरेमें चला गया और भीतरसे दरवाजा बन्द कर लिया।

"सो सब समाप्त हो गया।" उसने अपने मनमें सोचा—"अभी आज सबेरे तक मुझे प्रश्रय देनेवाला और अपना कहलानेवाला एक घर था और रोटीका एक रास्ता था। अब वह सब चला गया। कल सबेरे मुझे यह घर—जिसमें मेरा जन्म हुआ था, छोड़ देना पड़ेगा। इसी घरमें मेरे पिताकी मृत्यु हुई है। यह घर भी मुझे उसी व्यक्तिके लिए छोड़ना पड़ेगा जो मेरे पिता की मृत्युका और मेरी इस दरिद्रताका कारण बन बैठा है।"

उसकी आँखें अपनी माताके चित्रपर जा लगीं। चित्रकारने उसे किसी रेलिंगके सहारे केहुना धरे चित्रित किया था। वह प्रातःकालके श्वेत वस्त्रोंमें थी और उसके बालोंमें लाल गुलाब लगा हुआ था।

"यह चित्र कल मेरे पिताके शत्रुओंके हाथ लगेगा।" ब्लादीमीरने सोचा—"इसे रद्दी-सामानोंके कमरेमें फेंक दिया जायगा जहाँ यह टूटी कुर्सियों वगैरहके बीच पड़ा रहेगा या किसी रास्तेकी जगहपर लटका दिया जायगा जिसे हर आने-जानेवाला देखेगा, हँसेगा, उपहास करेगा। और उसके सोनेके कमरेमें जहाँ मेरे पिताकी मृत्युकी हुई है—वह अपना हरम या बैठकखाना बनायेगा। नहीं, नहीं, यह शोकग्रस्त मकान, जिससे वह मुझे निर्वासित कर रहा है, उसकी सम्पत्ति नहीं बन सकता, नहीं, किसी प्रकार नहीं। या तो...।" ब्लादीमीरने हाथोंसे अपना जबड़ा दबाया—उसके मनमें भयानक विचार चक्कर काट रहे थे। क्लर्कोंकी आवाज उसके कानमें बराबर पड़ रही थी—वे भीतर घरमें पड़े-पड़े हुक्म चला रहे थे। कभी यह माँगते, कभी वह। आज इस शोकपूर्ण अवसरपर उसकी दुख-मग्न स्थितिमें भी अशान्ति मचा रहे थे। फिर धीरे-धीरे सब शान्त हो गया।

ब्लादीमीरने अब अलमारियों, सन्दूकों आदिके खानों, दरवाजोंको खोलकर अपने पिताके कागजोंसे कुछ जानना चाहा। उनमेंसे अधिकांश घरके हिसाब-किताबसे सम्बन्धित थे, अनेकमें दूसरी आवश्यक बातें लिखी थीं। ब्लादीमीरने इन्हें बिना पढ़े फाड़ डाला। किन्तु इन्हीं कागजोंके पुलिन्देके बीच उसे एक लिफाफा मिल गया जिसपर लिखा था : मेरी पत्नीके पत्र। ब्लादीमीरने उलट-पुलट कर उनकी परीक्षा की। तीव्र व्याकुलताके लिए यह अच्छा आखेट था ये पत्र किश्चेनेवका' से उस समय लिखे गये थे जब टर्कोंने रूसकी भूमिपर घेरा डाल रखा था, पत्रोंपर पता सेनाका ही था उसने पत्रोंमें अपनी एकान्तता, सूनापन और नीरस जीवनका वर्णन करते हुए उसे घरके झंझटोंका ध्यान दिलाकर शीघ्र ही वापस लौट आनेको लिखा था। एक पत्रमें उसने अपने बच्चे, नन्हें ब्लादीमीरके स्वास्थके सम्बन्धमें चर्चा की थी; दूसरे पत्रमें उसने उनके लिए प्रसन्नता व्यक्त की थी कि वह अच्छे पदपर जायँ और तरक्की करें। पत्र पढ़नेमें ब्लादीमीर इतना दत्तचित् हो गया, अपने घरके सुख

और अपने माता-पिताके जीवनमें वह इतना रम गया कि उसे समयका कुछ ज्ञान न रह गया। तब तक बड़े घण्टाघरसे ग्यारह बजनेकी आवाज आयी। पत्रोंको उसने जेबमें डाला, एक मोमबत्ती उठा ली और बाहर चला गया। तीनों कर्मचारी और क्लर्क भीतर हालमें फर्शपर पड़े सो रहे थे। टेबुलपर शीशे पड़े थे और भीतरसे रम शराब की तीव्र गन्ध आ रही थी। घबराता हुआ उन्हें छोड़कर ब्लादीमीर आगे बढ़ गया और दरवाजे तक आया। यह बन्द था। उसमें ताला लगा था, तालीका पता नहीं, न जाने किसके पास थी। ताली ढूँढ़नेके लिए ब्लादीमीर फिर हॉलमें आया। ढूँढनेपर ताली टेबुलपर पड़ी मिल गयी। ब्लादीमीरने दरवाजा खोला, बाहर निकलते ही एक आदमीसे टकरा कर लड़खड़ाया जिसके हाथमें एक कुल्हाड़ा था। उसकी ओर मोमबत्ती करते ही उसने पहचान लिया, वह आर्खिप नामका लोहार था।

"तुम यहाँ क्या कर रहे थे ?" उसने पूछा।

"ओह तुम, ब्लादीमीर आन्द्रेयेविच।" आर्खिप भुनभुनाया—भगवान तुम्हें बचायें और तुम्हारी रक्षा करें। अच्छा ही हुआ कि तुम मोमबत्ती लेकर आये।"

ब्लादीमीर चकित हो उसकी ओर देख रहा था।

"तुम यहाँ क्या छिपा रहे हो, किस लिए ?" उसने लोहारसे पूछा।
—मैं चाहता था···मैं यहाँ आया था···कि हर चीज अपनी जगहपर तो है न।"

"फिर यह कुल्हाड़ी किस लिए ?"

"कुल्हाड़ी ? भला आपही बताइये, आजकलके नाजुक समयमें बिना कुछ हाथमें लिये कोई कैसे बाहर निकले ? ये क्लर्क इतने दुष्ट हैं, आप देख ही रहे हैं, इस बातका कोई पता-ठिकाना नहीं कि वे कब क्या हो जायँ ?"

"मालूम होता है तुमने पी ली है—कुल्हाड़ी धर दो और जाओ सो जाओ···।"

"पीया है ? व्लादीमीर आन्द्रेयेविच, भगवान साक्षी है, मैंने कभी एक बूँद तक नहीं पी है। फिर भला आज पीनेकी क्या बात ! किसीने क्या आज तक सुना है कि क्लर्क जमींदारपर शासन करे और उसे उसकी जमीनसे निकाल दे। जरा उनके नाक बजनेकी आवाज सुनो ! नरकमें जायँ सब ! उनके लिए हम एक ही बारमें हमेशाके लिए इन्तजाम कर सकते हैं। हमसे कोई रत्ती भर भी बुद्धिमान नहीं है।"

डब्रोवस्की चिढ़ उठा।

"सुनो आर्खिप", कुछ रुककर उसने कहा—"तुम अच्छा काम नहीं कर रहे थे। इसमें क्लर्कों की गलती नहीं है। लालटेन जलाओ और मेरे पीछे-पीछे चले आओ।"

आर्खिपने अपने मालिकके हाथसे मोमबत्ती ले ली, चूल्हेके पीछे ही उसे एक लालटेन मिल गयी। उसने उसे जलाया। अब वे दोनों चुपचाप बारान्देसे निकलकर सामने चबूतरेपर आये। रातका पहरेदार पहलेसे ही अपना लोहेवाला घण्टा बजा रहा था और कुछ कुत्ते भूँक रहे थे।

"कौन पहरा दे रहा है ?" डब्रोवस्कीने पूछा।

"हम हैं मालिक ! तत्काल एक तैयार कण्ठसे किसीने कहा"—वासीलीसा और लुकरया।"

"तुम दोनों अपने घर चली जाओ"—डब्रोवस्की बोला—"अब तुम्हारी आवश्यकता नहीं है।"

"तुम लोग जा सकती हो।" आर्खिपने भी आज्ञा दी।

"भगवान आपका भला करें मेरे बाप"—उन औरतोंने कहा और तत्काल वे अपने घरके लिए चल पड़ीं।

डब्रोवस्की आगे बढ़ा। दो आदमी उसके निकट आये। उन्होंने जब उसे पुकारा तो उनके स्वरसे डब्रोवस्कीने पहचान लिया कि वे ऐन्टन और ग्रीशा थे।

"क्यों, अभी तक तुम लोग सोये नहीं ?" उसने पूछा।

"हम लोग कैसे सो सकते हैं ?" ऐन्टन बोला—"हम लोग जो कर आये हैं, उसे सोचकर किसे नींद आयेगी......कौन विश्वास कर सकता था कि ...।"

"चुप रहो"—डब्रोवस्कीने बीच ही में उसे रोक दिया—"ईगोरोव्ना कहाँ है ?"

"इस बड़े भवनमें—अपने कमरेमें।" ग्रीशा बोला।

"जाओ, उसे यहाँ भेज दो और अपने सारे नौकरों, और आदमियों को, सिवाय उन क्लर्कोंके–घरके बाहर निकाल दो। क्लर्कोंके अतिरिक्त भीतर कोई न रहने पाये। और तुम ऐन्टन, गाड़ी तैयार करो।"

ग्रीशा चला गया और कुछ ही क्षणोंमें अपनी माँके साथ वापस लौट आया। बुढ़ियाने उस रात अपनी ओढ़नी वगैरह भी न ली थी। अब सिवाय उन क्लर्कोंके घरमें कोई न रह गया था जो आँखें बन्द किये पड़े सो रहे थे।

"क्या सब लोग यहाँ आ गये ? भीतर कोई छूट तो नहीं गया ?" डब्रोवस्कीने पूछा।

"नहीं, केवल वे क्लर्क ही पड़े सो रहे हैं।" ग्रीशाने उत्तर दिया।

"अब कुछ पुआल या सूखी घास लाओ।" डब्रोवस्कीने आज्ञा दी।

एक आदमी दौड़कर अस्तबलमें चला गया और सूखी घासके गट्ठर साथ लेकर लौटा।

आर्खिपने लालटेन खोली और डब्रोवस्कीने लकड़ीका एक तिनका उसकी लपटमें जलाया।

"एक मिनट रुको" उसने आर्खिपसे कहा—मुझे ऐसा ख्याल है कि हॉलके दरवाजेपर मैंने ताला लगा दिया है, दौड़ जाओ और उसे खोल आओ।"

आर्खिप भीतर दौड़ गया, दरवाजे खुले थे। उसने कुञ्जी घुमायी और मन ही मन बुदबुदाया— खोल दूँ इसे......ओह नहीं ...।" फिर वह डब्रोवस्की के पास वापस लौट गया।

डब्रोवस्की ने मँगाये हुए घास के गट्ठर में जलती मशाल लगा दी। आग की जिह्वा निकालती और चारों ओर प्रकाश फैलाती हुई सूखी घास जल उठी।

"अरे···अरे···ऐ···।" ईगोरोव्ना करुणासे कातर हो चीख उठी। "तुम यह सब क्या कर रहे हो ब्लादीमीर आन्द्रे येविच?"

"चुप"— डब्रोवस्कीने शासनके स्वरमें डाँटा"—अच्छा मेरे प्यारो, अब मैं बिदा लेता हूँ। भगवान जहाँ मुझे ले जायगा वहीं मैं चला जाऊँगा। अपने नये मालिक के साथ आराम से रहना।"

"पिता, हमारे उपकारी, बाबू, कहाँ जाते हो हमें छोड़ कर—" वे रोने लगे—"तुम्हे छोड़कर अकेले रहने से अच्छा है कि हम मर जाँय—हम सब तुम्हारे ही साथ चलेंगे।"

घोड़े तैयार किये गये, उन्हें एक किनारे लाया गया—डब्रोवस्की गाड़ीमें चढ़कर ग्रीशाके बगलमें जा बैठा और कभी-कभी मिलने आनेके लिए अपने आदमियोंको एक जगह बताया—किश्चेनेवका गाँवमें भोजपत्रके जंगलके बीच। ऐन्टनने घोड़ोंको चाबुक लगाया और वे घरके सामनेसे बाहर निकल गये।

हवा चलने लगी। कुछ ही क्षणमें लपटोंने सारा मकान घेर लिया। लाल रंगका धूँआ छतके ऊपर छा गया। खिड़कियों और दूसरी जगह लगे शीशे कड़क-कड़ककर तड़ातड़ टूटने लगे और छितराकर भूमिपर बिखर उठे। आकाशमें आँखोंको चौंधिया देनेवाली लपटें नाच रही थीं और मकानके भीतरसे कराहती हुई कातर चीख सुनायी पड़ रही थी—"हम जल रहे हैं, बचाओ, हमें बाहर निकालो······।

"ओह नहीं···न···न···न···।" धूँआ उगलती लपटोंकी ओर देखते हुए आर्खिपने कहा और शैतानकी-सी हँसी उसके होठोंपर झलक उठी।

"आर्खिप, मेरे प्यारे बेटे"—ईगोरोव्ना बोली—"भगवानके लिए इन्हें बचाओ, हतभाग्य बेचारे जल रहे हैं; ईश्वर तुम्हें आशिर्वाद देगा।"

"अरे हटाओ" लोहारने कहा।

उसी समय अदालतके तीनों क्लर्क खिड़कीपर दिखायी पड़े जो उसके दोहरे पल्लोंको तोड़नेकी चेष्टा कर रहे थे। किन्तु अचानक चटखकर ऊपरकी छत घहराती हुई गिर गयी जिसमें चीखती हुई वे आवाजें सदाके लिए लीन हो गयीं और फिर न सुनायी पड़ीं।

थोड़े ही पलमें नीचे चबूतरेपर घरके सभी नौकर-चाकर एकत्र हो गये। स्त्रियाँ घिघियाकर अपने प्यारे बच्चों और स्वजनोंको जलनेसे बचने के लिए चिल्लाने लगीं। बच्चे ऊपर-नीचे कूद रहे थे। लपटें देखकर उन्हें आनन्द आ रहा था। चिनगारियोंका झंझावात ही चल पड़ा था जिससे इस विशाल भवनके अगल-बगलके मकानोंमें भी आग लग गयी थी।

"अब सब ठीक हो गया, आर्खिप बोला—"कैसा जल रहा है!" पोक्रोवस्कोईसे यह बहुत शानदार लगता होगा!"

किन्तु अब अचानक उसकी दृष्टि खिंचकर एक नयी जगह जा अड़ी। जलते हुए एक कमरे की छतपर एक बिल्ली घूम रही थी, नीचे कूदनेके लिए चारो ओर देखती और पागलोंकी तरह भटक रही थी; अब वह चारो ओर लपटोंसे घिर चुकी थी। मूक दीन पशुने सहायताके लिए कई बार अपनी भाषामें म्याऊँ-म्याऊँ किया। उसके कष्टोंका आनन्द उठाते हुए बच्चोंको एक नया तमाशा मिल गया था।

"अरे ओ छुटंकियो, किस बातपर तुम लोग इतने उछल रहे और हँस रहे हो!" लोहारने क्रोधपूर्वक पूछा— "क्या तुम सब भगवान् से नहीं डरते। भगवान का एक प्यारा जन्तु यहाँ जल रहा है और तुम लोगोंको मजा आ रहा है! किसी काम लायक तुम लोग नहीं हो......!" फिर दीवारके सहारे सीढ़ी लगाकर वह आगकी लपटोंके बीचसे भयभीत बिल्लीको बचानेके लिए चढ़ा! बिल्ली उसका अभिप्राय समझ गयी और तीव्र कृतज्ञता दिखाती हुई उसके कन्धोंपर कूद गयी। लोहार यद्यपि बुरी तरह जल गया था, किन्तु अपना पुरस्कार लिये हुए नीचे उतरा।

"अच्छा मेरे भाइयो, अब मैं चला"—सभी उपस्थित और संतप्त लोगोंकी ओर देखकर वह उनसे बोला—अब मेरे यहाँ रहनेका क्या काम? और मैंने कभी किसीकी बुराई की हो तो उसे माफ कर देना......।"

लोहार वहाँसे चला गया। आग कुछ देर तक उसी विभिषिकाके साथ लहराती रही। अन्तमें लपटें शान्त हो गयीं और अन्धकारमें जलती हुई चीजों की राशि दूरसे ही चमकने लगी। गृह-विहीन किसान उसके आसपास चक्कर काटकर रो रहे थे।

७

आग लगनेकी खबर दूसरे ही दिन सारे जिलेमें फैल गयी। प्रत्येक व्यक्ति, जिसने भी यह समाचार सुना, घटनाके सम्बन्धमें अपना अनुमान और तर्क उपस्थित करता। कुछ लोगोंने यह हल्ला मचाया कि डब्रोवस्कीके ही आदमियोंने शोक-भोजमें अत्यधिक शराब पी लेनेसे मत्त होकर लापरवाही और नशेमें आग लगा दी; कुछने सारा दोष क्लर्कोंपर मढ़ा, जिनके बारे में उनका कहना था कि वे मकान गरम रखने की ज़िद कर रहे थे; कुछ दूसरे ऐसे भी थे जिन्होंने कहा कि आग अचानक लग उठी, उसे किसीने लगाया नहीं, संयोग ही ऐसा था कि आग लग गयी और अदालतके सारे कर्मचारी तथा घरवाले उसमें जल मरे। किन्तु उन्हींमें कुछ आदमी ऐसे भी थे जिनका सन्देह डब्रोवस्कीपर था। उन लोगोंका कहना था कि पैतृक सम्पत्ति हाथसे चले जानेके क्रोधसे डब्रोवस्कीने ही यह कार्य किया है और फिर भाग गया। उसीके कारण यह भयानक विपत्ति आयी है।

ट्रायेकुरोवने दूसरे ही दिन आगसे ध्वस्त मकानका निरीक्षण किया और दुर्घटनाके सम्बन्धमें जाँच आरम्भ कर दी। जले हुए मलबे और राखकी ढेर हुए सामानोंको हटवानेसे पता चला कि अदालतका बड़ा

अधिकारी (इस्प्रावनिक), उसका एटर्नी, क्लर्क, साथ ही ब्लादीमीर डब्रोवस्की, उसकी आया ईगोरोव्ना, नौकर ग्रीशा, कोचवान ऐन्टन और लोहार आर्खिप गायब थे। उनका पता न था। ढूँढनेसे भी वे नहीं मिले। दूसरे दिन नौकरोंने बताया कि क्लर्क तो उसी समय दबकर जल मरे जब कि ऊपरकी छत घहराकर गिरी; बादमें कुछ हड्डियाँ मिलनेसे यह सन्देह भी विश्वासमें बदल गया। वासीलीसा और लुकरया नामक दोनों पहरा-देनेवाली औरतोंने बताया कि आग लगनेसे कुछ ही देर पहले उन्होंने डब्रोवस्की और आर्खिपको साथ-साथ बातें करते देखा था। प्रायः सभी लोगों की धारणा थी कि आर्खिप लोहार जिन्दा था और यदि वही पूर्ण जिम्मेदार नहीं था तो भी अग्निकाण्डके लिए प्रधान कारण तो अवश्य ही रहा। भिन्न-भिन्न प्रकारके तीव्र सन्देह होने लगे। किरिल्ला पेट्रोविचने घटना-का पूरा विवरण गवर्नरको लिख भेजा और अब एक नया मामला खड़ा हो गया।

बहुत शीघ्र ही दूसरे समाचारोंने लोगोंकी जिज्ञासा और बढ़ा दी। तरह-तरहके अनुमान लगाये जाने लगे। कुछ लोगोंका कहना था कि डाकुओंका एक दल अस्त्र-शस्त्रसे सज्जित हो दिखलायी पड़ा है जो आसपास के क्षेत्रोंमें सर्वत्र आतङ्क फैला रहा है। उनके विरुद्ध अधिकारियों द्वारा उठाया गया कदम बिलकुल अपर्याप्त और दुर्बल था। एकके बाद एक, कहीं न कहीं डाके पड़ने लगे, हर अगला डाका पिछलेवालेसे भयंकर होता। अब न तो गाँव का रहना ही खतरेसे खाली था और न सड़कसे चलना ही निरापद। तीन घोड़ेवाली कई गाड़ियाँ (ट्रायेकाज), जो डाकुओंसे भरी रहती थीं, दिन दहाड़े रोशनीमें सरपट दौड़तीं; सारे इलाकेमें वे डाकू दिखायी पड़ते, यात्रियोंको पकड़ लेते, यात्रा करनेवाली और डाक ले जानेवाली गाड़ियों को भी लूट लेते, गाँवमें घुस जाते, वहाँ किसानों और गृहस्थोंके घरपर डाका डालते और उनमें आग लगा देते। इस दलका सरदार अपनी निपुणता, वीरता और एक प्रकारकी शान के लिए शीघ्र ही मशहूर हो गया। उसके सम्बन्धमें आश्चर्यजनक

बातें कही जाने लगीं। डब्रोवस्की का नाम सबकी जबानपर छा गया, सबको विश्वास था कि दूसरा कोई नहीं, बल्कि वही है जो इन निर्भयता-पूर्ण दुष्ट कार्योंको कर रहा है।

एक चीज से सबको आश्चर्य था—ट्रायेकुरोवकी जमींदारी ज्यों की त्यों छोड़ दी गयी थी। डाकुओंने उसके इलाकेमें न कभी लूट-पाट की और न कोई अत्याचार ही किया। उसके गाँवमें उन्होंने किसी किसानकी गाड़ी को भी नहीं पकड़ा। स्वभावसे ही अभिमानी ट्रायेकुरोव बड़े दंभसे इसका कारण अपना वह रोआब बताता था जिसके कारण वह अपने इलाकेपर निरंकुश शासन करता और जिसके लिए उसने उतनी शानदार पुलिस व्यवस्था कर रखी थी। डाकू इसी भयसे उसकी जमीदारीमें घुसनेका साहस नहीं करते! पहले तो गाँववाले ट्रायेकुरोवकी अपने को इतना ऊँचा सम्मान देने की बातपर हँसे और उन्हें विश्वास था कि शीघ्र ही किसी न किसी दिन डाकू उसके गाँव पोक्रोवस्कोईपर भी टूटेंगें ही जहाँ उनके लिए आनंद और आकर्षणकी प्रचुर सामग्री थी, किन्तु उन्हें अन्तमें बाध्य होकर उसकी बात मान लेनी पड़ी कि डाकू उससे भयभीत होकर ही उसका अदब करते हैं और उसकी ओर ताकने तकका साहस नहीं करते।

जब कभी कहीं नया डाका पड़नेका समाचार सुनायी पड़ता तो ट्रायेकुरोव डब्रोवस्कीकी युक्ति और सफलतापर विजयकी हँसी हँसता, साथ ही वह सरकारी अधिकारियोंकी मूर्खता और उनके हाथसे डब्रोवस्की के बिना किसी प्रकार की क्षति पाये बच निकलने पर व्यंग करता, सेनाके अधिकारियों और गवर्नर का मज़ाक उड़ाता तथा डब्रोवस्की की बड़ाई करता।

धीरे-धीरे पहली अक्टूबर का दिन आ पहुँचा जो ट्रायेकुरोव के गाँव पोक्रोवस्कोई के रक्षक देवता की तिथि थी। किन्तु उस दिन होनेवाले उत्सव या घटनाओंका विवरण देनेके पूर्व अच्छा होगा कि पाठकोंको कुछ उन पात्रोंसे परिचित करा दिया जाय जो उनसे अबतक अपरिचित रहे हैं या जिनका कहीं-कहीं कथाके आरम्भमें कुछ उल्लेख मात्र किया गया है।

८

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पाठकोंने पहले ही अनुमान लगा लिया होगा कि किरिल्ला पेट्रोविचकी युवती कन्या ही, जिसके विषयमें कुछ लिखा जा चुका है, इस कथाकी नायिका है। जिस समय कहानी आरम्भ हुई, उसकी उम्र सत्रह वर्षकी थी, जब वह अपसे पूर्ण विकासपर थी। उसका पिता उसे अत्यधिक स्नेह करता था, किन्तु उसके साथ भी वह अपनी स्वाभाविक निरंकुशता और स्वेच्छाचारितासे व्यवहार करता। कभी-कभी तो उसकी छोटीसे छोटी बातको भी संतुष्ट कर देता और कभी-कभी उसे ऐसे भयसे आतङ्कित कर देता जो बहुधा निर्दयतामें परिणत हो जाता। अपने प्रति कन्याकी ममता वह जानता था, किन्तु उसपर कभी उसे विश्वास न हुआ। अब वह धीरे-धीरे उससे अपने विचारों और भावोंको छिपानेकी आदी हो गयी थी क्योंकि उसे कभी यह अन्दाज न हो पाता कि पिताजी उसके विचारोंको किस रूपमें ग्रहण करेंगे।

लड़कियोंमें कोई उसकी सहेली न थी और वह एकान्त और अकेले में ही पली थी। आसपास रहनेवाले पड़ोसियोंके बाल-बच्चे तक कभी किरिल्ला के घर नहीं गये क्योंकि उसकी छोटी और अल्प बातें तथा विनोदके

ढंग ऐसे होते थे जिसमें केवल पुरुष वर्गकी ही आवश्यकता पड़ती और जिसमें महिलाओंकी उपस्थिति अनावश्यक होती। अतः यह सुन्दरी बाला भी शायद ही कभी अपने उन अतिथियोंके बीच आयी हो जो उसके पिताके साथ भोज आदिमें सम्मिलित होते। उसके लिए एक विशाल पुस्तकालय घरमें खुला हुआ था जिसमें मुख्यतः फ्रान्सके अठारहवीं शताब्दीके लेखकोंकी रचनाएँ संग्रहीत थीं। उसका पिता, जिसने जीवनमें सिवाय "मोहिनी रसोइयाँदारिन" (दी डिलेक्टेड कुक-मेड) के कुछ और न पढ़ा था, अपनी कन्याके लिए पुस्तकें चुनने और तत्सम्बन्धी सुझाव देनेमें सर्वथा अनुपयुक्त था; परिणामतः युवती माशा हर प्रकारकी पुस्तकोंको अत्यन्त सावधानीसे खोजकर स्वभावतः उपन्यास ही पढ़ना चाहती थी।

इस प्रकार इस तरुणीने अपनी शिक्षा पूरी की जो बहुत पहले ही मैडमोसली मिमी द्वारा आरम्भ करायी गयी थी और जिनके ऊपर किरिल्ला पेट्रोविचका प्रगाढ़ विश्वास और प्रेम था तथा जिसे वह किसी दूसरे इलाकेपर केवल इसीलिए भेज देनेपर बाध्य हुआ था कि उन दोनोंमें ममत्वकी मात्रा अत्यधिक बढ़नेसे उसका परिणाम स्पष्ट दिखायी देने लगा था। मेडमोसली मिमी अपने पीछे अत्यन्त सुखद स्मृतियाँ छोड़ गयी थीं। एक सरल बालक—जिसने कभी भी अपने निर्विवाद प्रभावके लिए किरिल्ला पेट्रोविचसे झगड़ा नहीं किया, यद्यपि इस विषयमें उसका अन्य लोगोंसे मतभेद था जो लोग अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक एकके बाद एक कर बदलते गये थे। किरिल्ला पेट्रोविच स्वयं इसे बहुत प्यार करता दिखायी पड़ता और काली आँखोंवाले नौ वर्षके छोटे बालक को, जिसका चेहरा मैडमोसली मिमीकी दक्षिणी आकृतिसे इतना मिलता कि उसने उसे पाल लिया और उसे अपना पुत्र कहता, हालाँकि स्वयं पेट्रोविचकी शकलके अनेक लड़के उसकी खिड़कीके नीचेसे नंगे पाँव घूमा करते जिन्हें किसानोंके ही बच्चे समझा जाता था।

अपनी बेटी माशाके लिए किरिल्ला पेट्रोविचने मास्कोसे एक फ्रांसीसी अध्यापक बुलाकर घर पढ़ानेके लिए रखा। यह अध्यापक पाक्रोवस्कोई उस समय आया जिस समय उक्त घटना हो रही थी।

किरिल्ला पेट्रोविच इस अध्यापकपर उसकी सरलता और मनपसन्द चाल-ढालके कारण प्रसन्न था, साथ ही उसने ट्रायेकुरोवके एक निकट सम्बन्धी का—जिनके यहाँ वह वर्षोंतक अध्यापक रह चुका था—चरित्र विषयक प्रमाण-पत्र पेश किया। इस फ्रांसीसी युवकमें एक ही बात जो उसे नापसन्द और अरुचिकर थी, वह थी उसकी जवानी, और यह इसलिए नहीं कि वह यौवनको एक सुखकारी बुराई समझता था जो धैर्य और अनुभवसे असंगत थी और किसी अध्यापकमें अत्यन्त आवश्यक थी। उसके मनमें अपने ढंगके कुछ सन्देह थे जिन्हें उसने तत्काल अध्यापकको बता देनेका निश्चय किया। इस उद्देश्यसे उसने माशाको बुलवा लिया क्योंकि वह स्वयं फ्रेञ्च भाषा जानता न था। अतः माशाको दुभाषिया बनाना पड़ा।

"माशा, इधर आओ—और इन महाशयसे कहो कि और तो सब ठीक है। मैं उन्हें रख लूँगा, किन्तु इतना उन्हें समझा दो कि वह हमारी लड़कियोंसे न उलझने का ख्याल रखे रहें। अगर वह ऐसा करेंगे तो हम उन्हें कुत्तोंसे नुचवा देंगे। इसे फ्रांसीसी भाषामें उसे समझा दो माशा।"

माशा लजा गयी; अध्यापककी ओर मुड़कर उसने फ्रांसीसी भाषामें कहा कि उसके पिता उसके भद्र जनोचित व्यवहार और शुद्ध आचरण पर विश्वास करते हैं।

फ्रांसीसी युवकने सिर झुका लिया और उसने जवाब दिया कि वह प्रतिष्ठा प्राप्त करनेकी ही आशा कर रहा था, भले उसके साथ पक्षपात न हो।

माशाने उसके उत्तरका एक-एक शब्द अनूदित कर डाला।

"ठीक है तब"—किरिल्ला पेट्रोविचने कहा—प्रतिष्ठा और पुरस्कार चाहिये तो ठीक है। साशाकी देखभाल रखना, उसे व्याकरण और भूगोल पढ़ाना उसका काम होगा। इसे अनुवाद करके कहो... ।"

मेरिया किरिलोव्नाने अपने पिताके शब्दोंका फ्रांसीसी अनुवाद सुनाते हुए उसकी कठोर अभिव्यक्तिको सरल बनानेका ही प्रयास किया और तब किरिल्ला पेट्रोविचने उसे विदाकर अपने मकानका वह भाग उसे दिखा दिया जहाँ उसे रहना था और एक कमरा इसीलिए उसे दे दिया गया।

माशाने इस फ्रांसीसी युवकपर विशेष ध्यान न दिया; स्वेच्छाचारी प्रवृत्तियोंसे प्रेरित हो वह अभिमानपूर्ण विचारोंमें ही डूबी रहती। उसने अध्यापकको भी कोई सेवक या मिस्त्री समझ लिया था जो उसकी दृष्टिमें मनुष्य थे ही नहीं और न तो उसने कभी वह प्रभाव ही लक्षित किया जो उसने अनजानमें ही उस अपरिचित युवक—मोशिये डीफोर्ज पर डाला था। उसकी व्यग्रता, भय, क्षोभ, संभ्रम और बदला हुआ स्वर जो कुछ परिचय देते, माशाने उसपर कभी ध्यान न दिया। वह कई दिनों बाद उससे मिली और फिर बराबर मिलती रहती, किन्तु उसने उस युवकपर कुछ ध्यान देनेका कोई लक्षण ही न दिखलाया। उसे उससे अप्रत्याशित ढंग पर कुछ सीखना था, दूसरी ही दृष्टिसे उसका सम्मान करना था।

किरिल्ला पेट्रोविचकी जमींदारीपर सदैव भालूके दो-चार छोटे-छोटे बच्चे अवश्य पाले जाते और ये पशु पाक्रोवस्कोई गाँवके स्वामीका अच्छा मनोरंजन करते। जब कि वे बहुत छोटे रहते, तभीसे किरिल्ला पेट्रोविचके बैठकखानेमें नित्य लाये जाते। किरिल्ला पेट्रोविच पिल्लों और बिल्लीके बच्चोंसे उन्हें लड़ाता और घन्टों इसका आनन्द लेता। जब वे बड़े हो जाते तो उनसे लड़ाईका पूरा काम लेनेके लिए सिकड़ीमें बाँधकर रखा जाता था। कभी-कभी वे

मकानकी खिड़कियोंके सामने लाये जाते और शराबका एक खाली पीपा, जिसके चारों ओर काँटे जड़े रहते थे, लुढ़का दिया जाता था। भालू उसे सूँघता फिर तुच्छ समझकर झटकेसे उसे छूता जिससे काँटे चुभ जानेसे उसके पंजे चोटीले हो जाते। अब क्रुद्ध होकर भालू पीपेको वेगसे ढकेल देता जिससे वह और जख्मी हो जाता। पशु इतनी चोट खाकर उन्मत्त हो जाता और वह भयंकर गर्जन करता गुर्राता हुआ पीपे पर टूट पड़ता, किन्तु तब यह भयंकर काँटेदार पीपा उस अभागे पशु के सामनेसे हटा दिया जाता था।

दूसरे अवसरों पर दो भालू गाड़ीमें जोत दिये जाते जिसमें घर आने वाले अतिथियों को, चाहे वे बैठना पसन्द करें अथवा नहीं, जबर्दस्ती बैठा दिया जाता था और उनसे गाड़ी चलवायी जाती थी। किन्तु किरिल्ला पेट्रोविचका जो इससे भी आनन्दपूर्ण और साधारण मनोविनोद होता उसके लिए कुछ और स्पष्टीकरण करना होगा।

किसी भूखे भालूको एक बन्द कमरेमें छोड़ दिया जाता था जिसे दीवारमें जड़ी एक कड़ीसे बँधे लम्बे रस्सेसे बाँध दिया जाता था। यह रस्सा कमरेकी लम्बाईसे कुछ ही छोटा होता, जिससे जब यह भयंकर पशु किसी पर आक्रमण कर देता तो रक्षाके लिए केवल कमरेके कोनेमें ही शरण मिल पाती। किसी नवसिखुआ आदमीको भीतर कमरे में ढकेलकर दरवाजा बाहरसे बन्द कर दिया जाता और वह अभागा मनुष्य उस रूखे बालवाले विकराल मौनी पशुके रु-ब-रु सामने पड़ जाता। यह दुर्भाग्य-ग्रस्त आदमी, जिसके कोट टुकड़े-टुकड़े हो जाते, जो भालूके नाखूनोंकी खरोंच और नोचनेसे लुहलुहान हो जाता, भयवश चारो ओर देखता और बन्द कमरेमें कहीं रक्षाका स्थान न पाकर अन्तमें उस कोनेमें जाकर दीवारसे सटकर खड़ा हो जाता। कभी-कभी उसे तीन-तीन घन्टों तक इसी स्थितिमें उस आक्रमणकारी हिंस्र-जीवको टकटकी बाँधे देखते रहकर रहना पड़ता जब कि वह क्रुद्ध भालू

उससे दो ही तीन कदम आगे गुर्राता, मुँह बाता, उछलता-कूदता, अपने पिछले दोनों पैरोंपर खड़े होकर, अगले दोनों हाथोंसे शत्रुको पकड़नेकी चेष्टा करता और असफल होने पर रस्सेको ही झटका देता रहता था। उस भद्र-रूसी महाशयके अमीराना मनोरंजन ऐसे ही प्रकार के होते !

इस नये अध्यापकके आनेके कुछ ही दिनों बाद अचानक ट्रायेकुरोव को उसका स्मरण हो आया और उसने एक बार इस अध्यापकको भी भालू-घरकी हवा खिलानेकी सोच लिया। इस विचारसे उसने एक दिन प्रातःकाल उस फ्रांसीसी अध्यापकको बुलवा भेजा; अँधेरे रास्तोंसे उसे लाया गया जहाँ एक स्थान पर अचानक एक दरवाजा खुल गया जहाँ दो नौकरोंने जान-बूझकर उसे धक्का दिया जिससे वह कमरेमें स्वयं फेंका गया। दरवाजा तब बाहरसे बन्दकर दिया गया। जब वह आपेमें आया तो उसने अपनेको एक बँधे हुए भयानक भालूके सामने खड़ा पाया जो दूरसे ही इस नवागत व्यक्तिको देखकर जोरसे श्वाँस खींचता और गुर्राता था। भालू अचानक दोनों पिछले पैरोंपर खड़ा हो गया और अपने हाथोंको फैलाकर उस पर झपटा। अब भालू उसके बिलकुल निकट आ गया था। डीफोर्जने अपनी जेबसे एक छोटी पिस्तौल निकाली, क्रुद्ध पशुके कानोंके ठीक सामने उसका मुँह किया और उसे चला दिया। भालू वहीं ढेर हो गया। आवाज सुनकर चारो ओरसे लोग दौड़ पड़े, दरवाजा चटपट खोल दिया गया। किरिल्ला पेट्रोविच भीतर घुसा। अपने मजाककी यह परिणति देख उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ।

किरिल्ला पेट्रोविचने डीफोर्जसे घटनाका विस्तृत विवरण बताने की आज्ञा देते हुए जवाब तलब किया—जब उसने इस प्रायोगिक घटनाकी सूचना उसे पहले ही दी थी, तब वह उसने जेबमें भरी पिस्तौल क्यों रख ली थी ? उसने माशाको बुलवाया। घटनाका समाचार सुनते ही

माशा वहाँ दौड़ती आयी। अपने पिताके प्रश्नोंका उसने तुरन्त अनुवाद कर फ्रांसीसी युवकसे भालूको मारने और पिस्तौल रखनेका कारण पूछा।

"भालूके सम्बन्धमें मुझसे कदापि किसीने न कहा था"—डीफोर्ज ने उत्तर दिया—"और रही पिस्तौल, उसे मैं सदैव साथ रखता हूँ। अपमान न सह सकनेका स्वभाव होनेके कारण अपने मनको सन्तुष्ट करने का यही साधन है...।"

माशा उसकी ओर विस्मयसे ताकती रह गयी और तब उसने अध्यापककी बातोंका भाषान्तर कर पिताको सुना दिया। किरिल्ला पेट्रोविच ने कोई उत्तर न दिया। उसने भालूको हटा ले जाने और उसका चमड़ा उतार लेनेकी आज्ञा दी। तब अपने घरके सब लोगोंको सम्बोधित करते हुए उसने कहा—"क्या यह सचमुच अच्छा आदमी नहीं है? यह कायर नहीं है। मैं जोर देकर यह कह सकता हूँ''प्रमाणितकर सकता हूँ।" उसी क्षणसे वह इस फ्रांसीसी युवकको चाहने लगा और फिर कभी उसकी किसी प्रकारकी परीक्षा न ली।

इस घटनाने किसी अन्य व्यक्ति पर वैसा गहरा प्रभाव न डाला जितना मेरिया किरिलोव्नापर। उसका मन डीफोर्जकी आँखोंका शिकार बन चुका था; उसकी उस दिनकी स्थितिसे इसका अनुमान ही बदल गया जब कि मृत भालूके निकट खड़े होकर उसने अत्यन्त शान्तिपूर्वक उसे अपने स्वभावका परिचय दिया था। उसने अब जान लिया कि साहस, गौरव, आत्म-सम्मान किसी वर्गविशेषकी अपनी वस्तु नहीं और उस दिनसे वह इस युवक अध्यापकको आदरसे देखने लगी; उसके साथ अब उसके व्यवहारोंमें भी अन्तर आ गया जो दिन-दिन बढ़ता हुआ अब अत्यन्त स्पष्ट होने लगा था। उनके बीच अब एक निश्चित सम्बन्ध स्थापित हो चुका था। माशाका स्वर अत्यन्त मधुर और संगीत के लिए सर्वथा योग्य था। डीफोर्ज उसे संगीत पढ़ाता था।

इतना लिख देनेके बाद हमारे पाठकोंको यह समझ लेनेमें कोई कठिनाई न होगी कि माशा उस पर अनुरक्त हो चुकी थी। उसने अनजानमें ही इस अपरिचित परदेशी युवकको अपना हृदय कब सौंप दिया इसका उसे बहुत दिनों तक पता न चला।

९

छुट्टीकी संध्यासे ही मेहमान जुटने लगे। कुछ तो इस विशाल भव्य मकान या उसके खंडमें रह गये और कुछ दूसरे अतिथि सेवकों और पुरोहितके घर ठहराये गये, इसके बाद भी जब अतिथि बढ़ने लगे तो उन्हें गाँवके अच्छे किसानोंके घर टिकाया गया। अस्तबल गाड़ियोंके घोड़ोंसे भर गये थे, मैदान और शेड सभी-प्रकारकी गाड़ियोंसे भरे थे।

सबेरेकी प्रार्थनाकी याद दिलाते हुए गिरजाघरके घन्टेने ९ बजाये। सभी लोग घण्टेकी आवाज सुनते ही गाँवमें किरिल्ला पेट्रोविच द्वारा ईंटोंसे बनवाये उस नये गिरजाघरकी ओर चल पड़े जो उसके वार्षिक उपहारोंसे खूब सजाया गया था। वहाँ पूजा करनेवाले विशिष्ट सज्जन इतनी अधिक संख्यामें एकत्र हो गये थे कि साधारण किसानोंको भीतर गिरजाघरमें जगह न मिल सकी। अतः वे बाहर बारान्दे और मैदानमें ही खड़े रह गये। प्रार्थना अभी आरम्भ नहीं हुई थी—किरिल्ला पेट्रोविचके आगमनकी प्रतीक्षाकी जा रही थी।

वह छः अन्य व्यक्तियोंके साथ एक गाड़ीमें सवार होकर आया और अत्यन्त गर्वसे चल कर अपनी जगहपर जाकर बैठ गया। उसकी युवती

कन्या मेरिया किरिलोव्ना उसके साथ थी जिसकी ओर वहाँ उपस्थित सभी पुरुष और महिलाओंकी आँखें घूम गयीं। पुरुषोंने मेरियाके अनिंद्य सौन्दर्यकी प्रशंसा की और स्त्रियोंने उसके वस्त्रोंमें ही अपना ध्यान लगाया।

अब प्रार्थना आरंभ हो गयी। भजन मण्डलीने घरमें गाये जाने वाले दैनिक भजनसे प्रार्थना आरंभ की। किरिल्ला पेट्रोविचने स्वयं दबे कंठसे गुनगुनाकर इस प्रार्थनामें योग दिया। वह न तो अपने दायें देखता और न बायें और जब पुजारीने उसकी दानशीलताके बारेमें उच्च स्वरोंमें कहना शुरू किया कि किस प्रकार उसने इस गिरजा-घरकी स्थापनाकी तो किरिल्ला गर्वभरी नम्रतासे सिर लटकाकर नीचे ताकने लगा।

प्रार्थना समाप्त हो गयी। किरिल्ला पेट्रोविच ही पहला व्यक्ति था जो पवित्र क्रास (काँटे के चिन्ह) के पास गया। अन्य लोग उसके चारो ओर घूम रहे थे और तब उसके पड़ोसी उसके प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए आने लगे। स्त्रियोंने माशाको घेर रखा था। किरिल्ला पेट्रोविचने गिरजाघरसे बाहर निकलते हुए सभी उपस्थित लोगोंको अपने घर होने वाले भोजमें आमंत्रित किया और अपनी बेटी सहित गाड़ीपर चढ़कर घर लौट आया। उसके मेहमानोंने अपनी-अपनी गाड़ीमें बैठकर उसका अनुसरण किया।

यहाँ घरमें सभी कमरे मेहमानोंसे भर गये थे। तब भी नये अतिथि दल बाँधे चले ही आ रहे थे। उनकी संख्या इतनी अधिक हो गयी थी कि नये आनेवालोंको गृहस्वामी तक पहुँचने का अवसर ही नहीं मिल पाता था। स्त्रियाँ एक ओर सिमटकर वृत्ताकार घेरेमें बैठ गयी थीं। वे अच्छे, कीमती और भड़कीले वस्त्र पहने थीं और उनके गलेमें लटकती मोतीकी मालाएँ और दूसरे रत्नजटित आभूषणोंके साथ हीरे आदि अत्यन्त तेजीसे चमक रहे थे। पुरुषगण टेबुलके चारो

और एकत्र हो गये थे जिस पर वोडका (शराब) सजाकर रख दी गयी थी। वे जोरोंसे बातें करते और परस्पर बहस करते जा रहे थे।

हालमें जो बड़ा टेबुल लगा था उस पर अस्सी मेहमानोंके भोजन के लिए प्रबन्ध था। नौकर आपसमें झाँव-झाँव करते, टेबुल पर का कपड़ा बड़ी सफाईसे झाड़-पोछकर ठीककर देते थे। अन्तमें रसोईयाने आकर सूचना दी कि भोजन तैयार है।

किरिल्ला पेट्रोविच टेबुलके प्रधान स्थान पर पहले बैठ गया। उसके बाद स्त्रियाँ आयीं जो वय और गम्भीरताके अनुसार क्रमसे बैठ गयीं। युवती लड़कियाँ एक साथ झुण्ड बाँधकर इस तरह बैठ गयी जैसे चञ्चल और शरारती हरिणियोंका दल। वे एक-एक कर बैठ गयीं। उनके सामने पुरुषगण बैठ गये। टेबुलके अन्तमें फ्रान्सीसी अध्यापक डीफोर्ज और छोटा साशा बैठा।

सेवकोंने एक-एककर चीजें परोसना और सेवा करना आरम्भ किया। चाकू, चम्मच, काँटों और प्लेटोंकी खड़खड़ाहट लोगोंकी बातचीतके हल्लेमें लीन हो गयी। किरिल्ला पेट्रोविचने अभिमान-भरी दृष्टि टेबुल पर डाली। अतिथिसत्कारी गृहस्वामीकी तृप्तिका आनन्द उसे मिल रहा था।...उसी समय छः घोड़ोंसे जुती एक गाड़ी आकर दरवाजे पर खड़ी हुई।

"कौन आया ?" किरिल्लाने पूछा।

"ऐन्टन पैफ्नुटिच।" कई व्यक्तियोंने एक साथ कहा।

दरवाजा खुला और ऐन्टन पैफ्नुटिच, जो प्रायः पचास वर्षका मज-बूत और तगड़ा आदमी था, जिसका चेहरा गोल और चमकदार था, जिस पर तीन निशान थे, इस हालमें घुसा। उसने भीतर आतेही मुस्कुरा कर और सभी लोगोंको अभिवादन करते हुए अपने देरसे आनेके लिए क्षमा माँगी।

"नये आने वाले यहाँ बैठें—मेरे पास"—किरिल्ला बोला—"आओ

ऐन्टन पेफ्नुटिच, इधर आओ। शान्तिसे बैठो और बताओ कि क्या कारण है जिससे तुम मेरी प्रार्थनामें सम्मिलित न हो सके और भोजमें भी विलम्बसे आ रहे हो। यह तुम्हारे जैसे विनम्र, पवित्र और भोज-भात के शौकीन आदमीके लिए तो उपयुक्त नहीं है।"

"क्षमा करें"—ऐन्टन पैफ्नुटिचने अपने कोटके हरी मटरके रंग के काजमें रुमालका टुकड़ा लगाते हुए कहा—"मेरा दोष नहीं है किरिल्ला पेट्रोविच। मैं ठीक समयपर यहाँ आनेके लिए रवाना हुआ। लेकिन मुश्किलसे मैं दस फर्लाङ्ग चला होऊँगा कि मेरी गाड़ीके अगले एक पहिये का टायर टूट गया। सौभाग्यसे हम लोग एक गाँवके निकट थे। वहाँ हमारे कुछ परिचित आदमी मिल गये जिन्होंने कहींसे एक लोहार ढूँढ निकाला जिसने सारी चीजें ठीक कर दीं। इसमें पूरे तीन घन्टे लग गये। क्या किया जाता? और कोई उपाय न था। हम असहाय थे। किश्चेनेवका गाँवसे रास्ता काटकर आनेमें मुझे उस जंगलका बड़ा भय था, इसीसे रास्ता घूमकर आना पड़ा...... ।"

"ओ हो .. !" किरिल्ला पेट्रोविचने बीचमें ही बात काटकर कहा—"तुम भी क्या मर्द हो। किस बातसे तुम्हें डर लगता है?"

"किस बातका डर? किरिल्ला पेट्रोविच आप क्या कहते हैं? क्यों, उस डब्रोयस्कीका। इसका पता लगे कि आप कहाँ हैं, बस वह आप पर टूट पड़ेगा, अपने पंजे में कस लेगा और यह तो सभी जानते हैं कि वह कैसा आदमी है! वह उधरसे किसी यात्रीको नहीं जाने देता और मुझपर तो खासकर कठोर होगा... ।"

"क्यों भाई, तुम्हारे साथ यह भेद-भाव क्यों?" किरिल्लाने पूछा।

"यह तो आप स्वयं जानते हैं पेट्रोविच। उसी पुराने झगड़ेके कारण जो मृत आन्द्रे गैब्रिलोविचके विरुद्ध चलाया गया था। क्या मैंने उस मुकदमेमें—आपको प्रसन्न रखनेके लिए—मेरा मतलब है सच ही, न्याय और सत्यके आधारपर यह प्रमाणित नहीं किया था कि डब्रो-

वस्की किश्चेनेवका गाँवका असल मालिक नहीं, बल्कि गैरकानूनी कब्जा हासिल किये था और केवल आपकी कृपासे उसे पाया था। मृत गैब्रिलोविचने, भगवान उसे शान्ति प्रदान करे—मुझसे भी बदला लेने का वादा किया था और उसका पुत्र, स्वाभाविक है कि पिताका बदला मुझसे ले। अब तक तो भगवान मुझे बचाता गया। उन्होंने अब तक केवल मेरा एक कोठार ही लूटा है। किन्तु मुझे भय है एक न एक दिन वह मेरा घर भी लूट लेंगे। भगवान बचाये !

"और भगवान ही जानता भी होगा कि तुम्हारा घर कितना लूटने योग्य है !" किरिल्ला पेट्रोविचने व्यंग किया—"मैं इसे दावेके साथ कह सकता हूँ कि तुम्हारी वह छोटी अन्टी तो एक दम भरी है !"

"अब नहीं महाशय, किसी समय यह भरी रहती थी, किन्तु अब तो खाली हो गयी है।"

"उसकी भी बात नहीं ऐन्टन पैफ्नुटिच ! हम सब तुमको भली भाँति जानते हैं ! तुम अपने उन रुपयोंका करोगे क्या ? तुम रहते तो सूअर के पिल्लोंकी तरह हो, न कभी किसीको निमंत्रित करो और न कभी सभा-समाज जुटाओ। अपने किसानोंको लूटते और रुपयोंसे घर भरते हो। रुपयोंके अलावा तुमने कभी कुछ और भी सोचा ?"

"तुम तो सदा मजाक ही करते हो किरिल्ला पेट्रोविच" क्रोध मन ही मन पीकर बलपूर्वक हँसनेकी चेष्टा करके कहा—हम लोग तो बर्बाद हो गये हैं।" कहकर ऐन्टन पैफ्नुटिचने अपने गृहपति द्वारा प्रदत्त एक बड़ी-सी मछलीके टुकड़े को मुँह भरकर ठूँस लिया और उसे निगल गया।

किरिल्ला पेट्रोविचने अब उसे शान्तिसे खानेके लिए छोड़ दिया और नये इस्प्रावनिक (अदालतके अधिकारी) की ओर मुँह किया जिसे इसके पहले कभी भी किरिल्लाका आतिथ्य ग्रहण करनेका अवसर न मिला था; यह टेबुलके अन्तमें अध्यापकके बगलमें बैठा था।

"अच्छा मास्टर इस्प्रावनिक! क्या तुम डब्रोवस्कीको नहीं पकड़ सकते?"

इस्प्रावनिक लजा उठा; कुछ झुका, मुस्कुराया और अन्तमें धीरेसे बोला—"हुजूर हम कोशिशकर रहे हैं।"

"हुँः" कोशिश कर रहे हैं! सभी तो पता नहीं कबसे कोशिश ही करते आ रहे हैं, लेकिन आज तक कुछ कर न सके। फिर एक बात और है। तुम उसे पकड़ोगे भी क्यों? डब्रोवस्कीकी डकैती तो पुलिस वालोंके लिए एक स्वर्ण अवसर बन गया है। क्यों, है या नहीं? यात्रा, उसका भत्ता, जाँच-पड़ताल, बिना पैसेकी सवारी, मुफ्त भोजन" आखिर यह सब पैसा तुम लोगों की जेबमें जाता ही है। तब तुम लोग अपने ऐसे उपकारीका विनाश क्यों करोगे? क्या यह सच नहीं है, ऐसी बात नहीं है क्या इस्प्रावनिक?"

"ठीक कहते हैं हुजूर", अत्यन्त कुंठित होते हुए इस्प्रावनिक बोला। अन्य अतिथि जोरसे ठहाका लगाकर हँस पड़े।

"मैं इस आदमी को उसकी सचाईके कारण मानता हूँ। फिर भी यह बड़े दुःखकी बात है कि हम लोगोंका वह पुराना इस्प्रावनिक टारस आन्द्रेयेविच हमलोगोंके बीचसे उठ गया। अगर डाकुओंने उसे आगमें जला न दिया होता तो जिलेकी हालत और शान्त रहती। अच्छा, डब्रोवस्कीका क्या समाचार है। अन्तिम बार वह कहाँ दिखायी पड़ा था?"

"मेरे मकानमें ही महाशय पेट्रोविच। गत मंगलवारको ही उसने हमारे साथ एकही टेबुल पर बैठकर भोजन किया।" एक गंभीर स्वर वाली महिलाने कहा।

सबकी आँखें अन्ना साविश्ना ग्लोबोयाकी ओर घूम गयीं जो स्पष्ट बोलनेवाली एक विधवा थी तथा जो अपनी दयालुता और प्रसन्न रहनेकी आदतके कारण सबसे प्रतिष्ठा और स्नेह पाती थी। सभी उसकी ओर

इस प्रकार कौतूहलसे देखने लगे कि अब यह महिला इस डाकूके सम्बन्धमें क्या कहेगी।

"आप तो जानतेही होंगे कि तीन सप्ताह पूर्व मैंने अपने एक नौकर को कुछ रुपये देकर शहर स्थित डाकघर भेजा कि वह मेरे पुत्र वान्युशा-को वे रुपये भेज दे। मैं अपने पुत्रको विनष्ट नहीं करती, और सच ही मैं इस स्थितिमें हूँ भी नहीं कि उसे मनमाना रुपया भेजती रहूँ—यदि कभी मैंने ऐसा चाहा भी तो भेज न पायी। किन्तु इतना तो आप लोग जानते ही हैं कि वह शहरमें अंगरक्षक सेना का अफसर है। उसे वहाँ ठाट-बाटसे रहना चाहिये। मैं अपनी छोटी-सी आयमेंसे अपने बेटे वान्युशा के लिए भी कुछ निकाल रखती हूँ और जितना कर सकती हूँ उसके लिए कर देती हूँ। सो, मैंने उसे दो हजार रूबल भेजा। यद्यपि डब्रोवस्कीका ख्याल मेरे मनमें कई बार आय, किन्तु, मैंने सोचा कि शहर नजदीक ही है। भगवान् हमारे लिए अच्छा ही करेगा, परन्तु शामको मेरा नौकर उदास, पीला चेहरा लिये वापस लौट आया। उसके कपड़े लत्ते-लत्ते हो चुके थे और वह नंगे पाँव था। मैं घबड़ायी।

"क्या हुआ है? क्या बात हो गयी?"—मैंने पूछा। और उसने बताया कि मुझे उन बदमाश डाकुओंने लूट लिया। वे तो मुझे मार डालने जा रहे थे। डब्रोवस्की भी उन सबके साथ था। वे सब तो मुझे शूली चढ़ा देते, किन्तु डब्रोवस्कीने ही मुझपर दया दिखायी और मुझे छोड़ दिया। किन्तु उन लोगोंने मेरी प्रत्येक वस्तु लूट ली, यहाँ तक कि घोड़ा और गाड़ीतक ले लिया।

मैं तो यह सब सुनकर स्तब्ध हो गयी। भगवान दया करें! अब मेरा वान्युशा क्या करेगा? अब मेरे लिए इतना ही रह गया था कि बिना एक पाई भेजे उसे सारी घटनाकर विवरण लिख भेजूँ।

एक सप्ताह बीता। दूसरा चल ही रहा था कि अचानक एक दिन एक गाड़ी मेरे द्वार आ खड़ी हुई। किसी जनरलने मुझसे मिलना चाहा। प्रसन्नता-

पूर्वक मिल सकते हैं, मैंने कहा। तब तक प्रायः ३५ वर्षका एक पुरुष, जिसका चेहरा गहरे रंगका, बाल काले, मूँछ-दाढ़ी रखे, भीतर चला आया। वह देखनेमें ऐसा लगता जैसे कुलनेवकी मूर्ति। उसने मुझे मेरे स्वर्गीय पतिका मित्र और सेनामें सहअधिकारी बताकर अपना परिचय दिया। अपना नाम उसने ईवान आँन्द्रेयेविच बताया। उन्होंने कहा कि वह उधरसे गुजर रहे थे तो यह जानकर कि मैं यहीं रहती हूँ, सोचा कि रास्तेसे चल रहा हूँ तो अपने मित्रकी विधवासे मिलता और उनका समाचार लेता चलूँ। मेरे घरमें उस समय जो रूखा-सूखा था, मैंने उनके सम्मुख उपस्थित किया। भोजनके समय हमलोग बहुत-सी बातें इधर-उधरकी करते रहे और अन्तमें बात डब्रोवस्की पर आ गयी। डब्रोवस्कीके दल द्वारा हुई अपनी हानिकी कहानी मैंने कह डाली, किन्तु इतना सुनतेही वह सरदार लाल हो उठा।

"आश्चर्य"—उसने कहा—"मैंने सुना है कि डब्रोवस्की केवल अन्याइयों को ही लूटता है। गरीबोंसे तो वह बोलता नहीं। वह तो धनी-मानी यात्रियों और सेठों-साहुकारोंके दल पर धावा करता है और उसमें भी अपना हिस्सा मात्र लेता है। कुल माल भी नहीं लूटता। आज तक कोई उसपर हत्याका आरोप नहीं करता। यहाँ जरूर कोई बदमाशी हुई है; कृपया आप अपने नौकर को बुलवाइये।"

मैंने तत्क्षण अपने उस नौकरको बुलवाया और वह झटपट आ गया। जैसे ही उसने इस जनरल को देखा कि उसके देवता कूचकर गये। वह तो जैसे गूँगा हो गया, निर्वाक्...।

"भाई मुझे बताओ तो"—उसने नौकरसे कहा—"डब्रोवस्कीके दलने तुम्हे किस प्रकार लूटा और किस तरह वे तुम्हारी हत्या करने जा रहे थे?"

"मेरा वह नौकर अब काँपने लगा और वह जनरलके चरणोंपर गिर पड़ा—"मुझे क्षमा करें, माफ कर दें मालिक!" वह रोने लगा—

"शैतानने मुझे लालचमें डाल दिया और उससे प्रेरित हो मैंने सारी बात बनाकर झूठ कहा है।"

"अच्छा, तब तो सारी बात अपनी मालकिनके सामने कह डालो जिससे मैं भी सुन लूँ।" जनरलने मेरे नौकर से कहा। मेरा नौकर अपने को सँभाल नहीं पा रहा था—"कहो, कहो, कह डालो—"जनरल बोले —"हाँ, हमें यह बताओ कि डब्रोवस्की तुमसे मिला कहाँ?"

"उन्हीं दोनो ताड़के पेड़ोंके पास मालिक, ताड़के पेड़ोंके ही पास...।"

"अच्छा, तब उसने तुमसे क्या कहा?"—पूछा जेनरलने।

"उसने मुझसे यह पूछा कि मैं किसका नौकर हूँ, कहाँ जा रहा हूँ और क्यों?"

"ठीक है, तब क्या हुआ?"

"मैंने सब बता दिया तो उसने वह पत्र और रुपया माँगा।"

'ठीक है।'

"तब मैंने वह पत्र और रुपया उसे दे दिया।"

"और उसने? उसने उत्तरमें क्या कहा और क्या किया?" जनरलने भेदभरी दृष्टि डालकर नौकरसे पूछा जो अत्यधिक थरथरा रहा था।

'क्षमा करें मालिक। डब्रोवस्कीने मुझे रुपया वापस कर दिया, पत्र-भी लौटा दिया और कहा कि शीघ्र पोस्टआफिस चले जाओ और इन्हें जहाँ भेजना है, भेज दो।"

"तब तुमने क्या किया?" जनरलने उसी प्रकार पूछा।

"मैं आपसे कुछ भी नहीं बता सकता मालिक!"

"अच्छा श्रीमतीजी, आप इस दुष्टको मेरे हवाले कर दें। मैं अभी इससे सच्ची बात कबूल करा लेता हूँ।" जनरलने मुझसे कहा—"मैं इसे ऐसी शिक्षा दूँगा कि हमेशा याद रखे। यह ख्याल रखो कि डब्रोवस्को

स्वयं किसी समय सेनामें अंगरक्षकों का अफसर था। वह अपने किसी साथी पर आक्रमण कर उसका अहित नहीं कर सकता।"

"मैं समझ गयी कि वह व्यक्ति कौन था। मैंने उससे ज्यादा तर्क करना उचित न समझा। उसके गाड़ीवानने मेरे उस नौकरको अपनी गाड़ीपर सन्दूकके ऊपर बाँध लिया और तब रुपयोंका पता चल गया। जनरल भोजन तक मेरे यहाँ रुके रहे और तब अचानक चले गये। जाते समय वह मेरे उस नौकरको भी लेते गये। वह दूसरे दिन जंगलमें पाया गया, सिन्दूरके विशाल पेड़से बँधा और इतना पीटा गया कि मृतप्राय हो रहा था।"

सभी लोग जैसे मन्त्र-मुग्ध होकर अन्ना साविश्नाकी बातें सुन रहे थे, विशेषकर नवयुवतियाँ उसकी बातमें अधिक तन्मय हो गयी थीं। उनमें अनेकने मन ही मन डब्रोवस्कीके साथ पूर्ण सहानुभूति दिखायी और उसे रोमांसके लिए अच्छा नायक समझा। खासकर किरिल्ला पेट्रोविचकी बेटी मेरिया किरिलोव्ना—वह दिवास्वप्न देखनेवाली सुकुमार युवती, जो अब तक केवल मिस्टर रेडक्लिफके रहस्यों, रोमांच और आतङ्क में ही इतनी बड़ी हुई थी, का मन अचानक इस युवक दस्युके प्रति सरस हो उठा।

"अच्छा अन्ना साविश्ना, क्या तुम ऐसा समझती हो कि डब्रोवस्की स्वयं तुम्हारे टेबुलपर बैठा खाना खा रहा था और तुमसे बातें कर रहा था?" किरिल्लाने पूछा—"तब तुम सचमुच गुमराह हो गयी हो। मैं नहीं कह सकता कि वह अजनबी कौन था, किन्तु इतना निश्चय है कि वह डब्रोवस्की नहीं था।"

"डब्रोवस्की नहीं था? महाशय, तब कौन सड़कोंपर इस प्रकार लोगोंको रोक लेता और उनकी तलाशी लेता है?"

"मैं नहीं कह सकता कि वह कौन है, लेकिन इतना जरूर कह सकता हूँ कि वह डब्रोवस्की नही था। मुझे ठीक याद है, मैंने उसे बचपनमें देखा है—जहाँ तक मैं याद कर सकता हूँ, उसके बाल अलबत्ता घने और काले

हो गये होंगे, किन्तु वह तो घुँघराले बालवाला एक सुन्दर छोकरा था। डब्रोवस्कीके बारेमें एक बात जो मैं निश्चित रूपसे जानता हूँ, वह यह है कि वह मेरी माशासे पाँच वर्ष बड़ा है और इसलिए इस समय उसकी उम्र तेईस वर्ष होनी चाहिये और यह नहीं कि पूरे पैंतीस वर्ष...", किरिल्ला बोला।

"हुजूर ठीक फरमाते हैं!" इस्प्रावनिकने कहा—"मेरी जेबमें व्लादीमीर डब्रोवस्कीके सारे शारीरिक लक्षणोंका परिचय लिखा है। उसमें उसकी आयु स्पष्टतः तेईस वर्ष लिखी है...।"

"आ हा: .." किरिल्ला चिल्ला उठा—"ठीक है, उसे पढ़कर हम सबको सुनाओ। हम सब सुनेंगे। क्योंकि हम लोग जानते हैं कि वह वह किस तरहका है, आखिर कभी न कभी तो हम उसे पकड़ ही लेंगे। ईश्वरकी इच्छा होगी तो वह अब हम लोगोंसे भाग भी नहीं सकता।"

इस्प्रावनिकने अपने कोटकी जेबसे एक मटमैले रंगका कागज निकाला। उसे खोला और जैसे गीत गा रहा हो, ऐसे स्वरमें पढ़ने लगा—"व्लादीमीर डब्रोवस्कीके व्यक्तिगत शारीरिक चिह्न...उसके पहले वाले नौकरोंके बयानके आधारपर लिखा गया—

तेईस सालकी उम्र, कद मँझोला, मूँछ-दाढ़ी साफ, बाल कटे हुए, गोरा चि[illegible]ा, आँखें भूरी, बाल काले, नाक सीधी। विशेष पहचान कुछ नहीं।"

"क्या इतना ही या कुछ और भी लिखा है?" किरिल्लाने पूछा।

"इतना ही है।" कागज को सावधानीसे मोड़ते हुए इस्प्रावनिकने कहा—"मैं तुम्हें बधाई देता हूँ इस्प्रावनिक। यह तुम्हारे लिए शिनाख्त का कागज है न? यह हुलिया लिखनेकी अपेक्षा डब्रोवस्कीको गिरफ्तार करनेके लिए हम लोगोंसे पूछ लेना कहीं अच्छा था। भला बताओ, हम लोगोंमें से कौन मझोले कद का नहीं है, किसके बाल काले नहीं हैं, नाक सीधी और आँखें भूरी नहीं है? मैं तुमसे शर्त बद सकता हूँ कि सही

कागजके आधार पर यदि तुम रह गये तो तीन घन्टों तक डब्रोवस्कीसे बातें करके भी उसे नहीं पहचान सकते। समझे महाशय ? क्या दिमाग है इन क्लर्कों का; शिः क्या कहूँ इन्हें !"

इस्प्रावनिकने लजा कर कागज मोड़ कर जेबमें रख लिया और चुपचाप भुनी गोभी और माँस खाने लगा। इस बीचमें नौकर रह-रह कर बारी-बारीसे सभी सामान लाते। जो चीज जिसकी तश्तरीमें न रहती, वह उसमें डाल देते और सब मेहमानोंकी गिलास भर देते। काकेशस प्रदेश की न जाने कितनी बोतलें खुलीं, कार्क निकालनेसे उत्पन्न ध्वनि होती और बोतलोंसे फेन निकलता। शैम्पेनके नाम पर लोग उसे गलेके नीचे उतारते जाते और गिलास खाली कर देते। अब लोगोंके कपोल चमकने लगे थे, आवाज तेज होने लगी थी और पहलेकी अपेक्षा अधिक उखड़ी रहती।

"आह ठीक है," किरिल्ला पेट्रोविचने फिर कहना आरम्भ किया—"हम लोगोंने टारस अलेक्जेयेविच जैसा तो इस्प्रावनिक ही न देखा। वह चूकने वाला थोड़े था, कभी गलती न करता, उसकी आँखोंसे कभी कोई चीज निकल न सकी। यदि वह मरा न होता, क्या एक भी व्यक्ति इस दलका उसके हाथसे बचा होता ? डब्रोवस्की स्वयं कहीं न निकल पाता और न इस आजादीका मजा ही ले पाता। टारस भले अपना हिस्सा ले लेता, किन्तु वह उसे कदापि यों न छोड़ देता। यह तरीका था उस स्वर्गीय अफसर का। मैं देखता हूँ कि मुझे आखिर इस मामले हाथ डालना ही पड़ेगा और उस बदमाशके पीछे अपने आदमी लेकर जाना ही होगा। वे सब उसका छिपनेवाला जंगल साफ कर देंगे। मैं अपने नौकरोंके बारे में झूठ नहीं कहता। उनमेंसे कोई भी खाली हाथ भालूसे लड़ सकता है। डाकुओं के दलसे मुड़ना तो वे जानते ही नहीं।"

"आपका भालू कैसा है किरिल्ला पेट्रोविच ?" ऐन्टन पेफ्नुटिचने पूछा, जिसे भालू शब्दने उस घटना की याद दिला दी जब एक बार अचा-

नक वह भी इस भालू-विनोदका पात्र बन चुका था और उसका पूरा आनन्द उठा लिया था !

"ब्रुइनने गोलीका सामना किया"—किरिल्लाने उत्तर दिया—"उसने अपने शत्रुके हाथों वीरगति प्राप्त की; शानदार मौत पायी···वह रहा उसका विजेता···।" किरिल्ला पेट्रोविचने डीफोर्जकी ओर संकेत किया—"उसने तुम्हारा बदला चुका लिया · यदि मैं कहूँ···तुम्हें याद होगा, है न याद ?"

"मैं समझता हूँ मुझे याद है ।" ऐन्टनने अपने सिरके पीछे पड़े खरोंचके निशान दिखाये और बोला—"मुझे अच्छी तरह याद है । सो ब्रुइन मार डाला गया···बेचारा ब्रुइन ! सचमुच इसके लिए मुझे दुःख हुआ । कितना अच्छा मनोविनोद करनेवाला जानवर था वह, और कितना चतुर ! अब आप उसके जैसा भालू कदापि नहीं पा सकते । मोशियेने उसे मार क्यों डाला ?" किरिल्लाने प्रशंसासूचक दृष्टिसे अध्यापक-की ओर देखा और काफी बढ़ा-चढ़ाकर उसकी कहानी कहने लगा कि उसमें आत्मभिमान और आत्मरक्षाकी कैसी भावना और शक्ति है । श्रोता गण बड़े कौतूहल और चावसे ब्रुइनका मृत्युकी कहानी सुन रहे थे, वे डीफोर्जकी ओर चकित हो देख रहे थे जो इस वार्तालापके रहस्यसे सर्वथा अनभिज्ञ था और नहीं जान पाया कि बातका सिलसिला इस समय उसके साहस पर चला आया है । वह चुपचाप अपनी जगह पर बैठा रहा और रह-रह कर अपने नन्हें शिष्य से गप करने लगता ।

भोज, जो लगभग तीन घन्टे तक चलता रहा, अब जाकर समाप्त हुआ । गृहस्वामीने टेबुल पर अपनी रूमाल छोड़ दी । सभी लोग उठ गये । हाथ धोया और वहाँसे बैठकखानेमें चले गये जहाँ काफी, ताश, और शराबका दूसरा दौर उनकी प्रतीक्षा कर रहा था ।

१०

प्रायः सात बजे सायंकाल कुछ अतिथियोंने चले जानेका प्रस्ताव किया, किन्तु गृहस्वामीने जो विदूषकोंके विनोदसे अत्यन्त आनन्दित हो उठा था, आज्ञा दी कि घरके सभी फाटक सवेरे तकके लिए बन्दकर दिये जायँ और यह घोषितकर दिया जाय कि कोई मेहमान अपनी जगहसे न हिले। शीघ्र ही संगीत आरंभ हो गया; नाच-घरके फाटक खुल गये और नाच आरम्भ भी हो गया। घरका मालिक अपने कुछ यार-दोस्तोंके साथ एक कोनेमें बैठा गिलासपर गिलास गटकता जाता और वहींसे बैठे-बैठे प्रशंसापूर्ण नेत्रोंसे युवक-युवतियोंके आनन्दमें रस ले रहा था। कुछ प्रौढ़ स्त्रियाँ ताश खेल रही थीं। उन सब स्थानोंकी तरह जहाँ कोई सैनिक केन्द्र या घुड़-सवार और भालावाले सैनिकोंका अड्डा नहीं होता है, वहाँ स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुष बहुत कम होते हैं, यद्यपि सभी योग्य पुरुष चुन लिये जाते हैं। ऐसे लोगोंमें अध्यापक सबसे स्पष्ट और ध्यान खींचनेवाला था और किसी भी व्यक्तिकी अपेक्षा उसने अधिक बार नृत्य किया। सभी लड़कियोंने उसे अपना जोड़ा चुना और मन ही मन अनुभव किया कि वे उसके साथ अच्छी प्रकार गोलाईमें घेरकर और उसे बीचमें रखकर नाच सकती हैं।

उसने और मेरिया केरिलोव्नाने कमरेके कई चक्कर लगाये; दूसरी नवयुवतियोंने उसपर व्यंगपूर्ण और ईर्षाभरी दृष्टिसे संकेत भी किया,

किन्तु वह उसके साथ नाचती रही। अन्तमें जब रात लगभग आधी बीत चुकी थी, किरिल्ला पेट्रोविचने, जो काफी थक गया था, नाच बन्द करनेकी आज्ञा दी और रातका भोजन करनेके लिए सबसे कहा और स्वयं सोनेके लिए चला गया।

उसकी अनुपस्थितिने उपस्थित लोगोंको मिलने, और परिचय प्राप्त करनेकी स्वतंत्रता प्रदान कर दी; भद्र पुरुष अब महिलाओंके बगलमें बैठनेका साहस करने लगे थे, लड़कियाँ अपने बगलवाले युवकोंको देखकर आपसमें कुछ फुसफुसातीं और हँसने लगतीं। वृद्धा स्त्रियाँ टेबुलके किनारे बैठकर और जोरसे बातें करने लगीं। लोगोंने और मदिरा पी; आपसमें वे खूब बहस करते, हँसते—संक्षेपमें कहा जा सकता है कि रातके समयका भोजन अत्यधिक आनन्दप्रद रहा और अपने पीछे यह अनेक स्मृतियाँ छोड़ गया।

केवल एक व्यक्तिने इस साधारण आनन्द-प्रवाहमें कोई भाग न लिय—ऐन्टन पैफ्नुटिच, वह भौंहें चढ़ाये चुपचाप बैठा था, बिना मनका; खिन्न भावसे उसने भोजन किया और वह अत्यन्त दुःखी मालूम होता था। डाकुओंके ही सम्बन्धमें इन सारी बातोंने उसके चित्को चंचल बना दिया था। यह शीघ्रही पता चल जायगा कि उसके इस प्रकार भयभीत हो जानेके कारण काफी प्रबल थे।

यह देखनेके लिए उसकी कि रत्नपेटिका खाली तो नहीं हो गयी है, ऐन्टन पैफ्नुटिचका भगवान्को स्मरण करना कोई अपराध न था। रत्नोंसे भरी रहनेवाली उसकी पेटिका सचमुच खाली थी और जो रकम वह पहले इसमें रखता था उसे उठाकर चमड़ेकी एक छोटी थैलीमें डालकर कमीजके नीचे छातीपर लटका लिया था। इस थैलीको वह हर समय प्राणोंके समान साथ लिये घूमता रहता। सबके प्रति उत्पन्न उसके अविश्वासको शान्त करनेका सचमुच इससे अच्छा कोई उपाय न था। आज जब वह एक अजनबी मकानमें रात बितानेके लिए बाध्य कर दिया गया था, उसे डर

लग रहा था कि कहीं उसे ऐसा खंड न दे दिया जो काफी दूर हो क्योंकि चोर वहाँ आसानीसे आ सकते थे।

अब उसने अपनी सहायताके लिए एक मजबूत तथा विश्वासी आदमीको साथ रखनेका विचार किया। उसका मन अन्तमें फ्रांसीसी अध्यापक डीफोर्जपर जा अटका। शारीरिक शक्तिके उसके वाह्य लक्षणोंके अतिरिक्त उस घटनाने, जब उसने एक भालूके सम्मुख साहस दिखाकर उसे मार डाला था—उसपर विशेष विश्वास उत्पन्न किया। जब सब मेहमान टेबुलपरसे, उठने लगे, ऐन्टन पैफ्नुटिच दौड़कर फ्रांसीसी युवकके पास गया। अपना गला साफकर, खाँस-खाँसकर हकलाते हुए केवल इतना ही वह व्यक्त कर सका—"हूँ... क्या यह रात मैं आपके कमरेमें नहीं बिता सकता मोशिये? आप देख ही रहे हैं...।"

उसके प्रति आदरका भाव दिखाते हुए अध्यापकने झुककर अभिवादन किया और बोला—"आप क्या चाहते हैं मोशिये?"

"अरे मोशिये! यह बहुत बुरी बात हुई। आप रूसी भाषा नहीं जानते। खैर, आजकी रात मैं आपके साथ बिताना चाहता हूँ।" उसने टूटी-फूटी फ्रांसीसी भाषामें कह सुनाया।

"रहें, कोई हर्ज नही।" अध्यापक बोला।

अपने फ्रेन्च बोल पाने और कुछ जान लेनेके आनन्दसे प्रसन्न होकर ऐन्टन पैफ्नुटिच वैसी ही व्यवस्थाके लिए आज्ञा देने चला गया। मेहमान अब एक दूसरेसे विदा ले रहे थे और अपने लिए निश्चित् कमरेमें सोने जा रहे थे। ऐन्टन पैफ्नुटिचने अध्यापकका साथ कर लिया और उसीके साथ-साथ मकानके उस खण्डमें चला जिसमें उसे कमरा मिला था।

रात अँधेरी थी। डीफोर्जने रास्तेमें रोशनीके लिए एक लालटेन जला लिया। ऐन्टन पैफ्नुटिच प्रसन्न चित्त उसके पीछे पीछे चला जा रहा था। वह रह-रहकर अपनी छातीपर छिपायी हुई थैलीको छूकर, दबा-

कर देख लेता, मानो वह अपने मनको बार-बार विश्वास दिला देना चाहता था कि उसका धन सुरक्षित है।

कमरेमें पहुँचकर अध्यापकने एक मोमबत्ती जलायी। दोनो अपने-अपने कपड़े उतारने लगे। जब वह अपने कपड़े बदल रहा था, ऐन्टन पैफ्नुटिच कमरेके चारो ओर घूम गया, उसने तालों और खिड़कियोंकी परीक्षा ली, अपना सिर हिलाया, क्योंकि परीक्षासे उसे सन्तोषजनक तृप्ति नहीं हुई। दरवाजा केवल एक सिटकिनीके सहारे बन्द होता था और खिड़कियोंमें जोड़के लिए दुहरे पल्ले अभीतक लगे न थे। उसने डीफोर्जसे इस बातकी शिकायत करनी चाही, किन्तु ऐसे कठिन भावोंको व्यक्त करने लायक उसे फ्रेञ्च आती न थी। अध्यापक कुछ समझ न सका और इधर-उधरकी बातें करनेके बाद ऐन्टन पैफ्नुटिचने भी शिकायत करनी बन्द कर दी। उनके बिस्तर एक दूसरेके सामने दूरपर थे। जब वे उस-पर जा लेटे त्यों ही अध्यापकने मोमबत्ती बुझा दी।

"बुझी हुई मोमबत्तीको जला दीजिये...जला दीजिये, आपने उसे क्यों बुझा दिया" ऐन्टन पैफ्नुटिच घबराकर बोला—घबराहटमें वह रूसी भाषाकी क्रिया 'बुझाना'को ही फ्रांसीसी रूपमें कहने लगा और उसी भाँति लँगड़ी फ्रेञ्च भाषा में कहा—"मैं अँधेरेमें सो नहीं सकता।"

डीफोर्ज उसकी तकलीफों और विरोध का अर्थ समझ न सका। अतः वह उसे नमस्कार कर सोनेमें लग गया।

"इन विदेशियोंका सत्यानाश हो।" कम्बलको अपनी छाती और गले के चारो ओर सावधानी से लपेटता हुआ ऐन्टन पैफ्नुटिच भुनभुना उठा—"तब भला उसने मोमबत्ती जलायी ही क्यों थी। यह तो मेरे लिए और बुरा हुआ। मैं अँधेरे में सो नहीं सकता! रोशनी करनी ही होगी......मोशिये......मोशिये......वह कहता गया और अस्पष्ट रूसी-फ्रेञ्च मिश्रित बोली में कुछ निरर्थक शब्द कह गया। किन्तु फ्रांसीसी युवक ने कोई उत्तर न दिया और वह शीघ्र ही खर्राटे लेने लगा।

"यह फ्रेञ्च युवक कैसा जानवरों सा घुर्र-घुर्र कर रहा है," ऐन्टन पैफ्नुटिचने सोचा—मैं तो अपनी एक आँख तक नहीं बन्दकर सकता। चोर किसी भी समय इन खुले दरवाजोंसे आ सकते हैं या खिड़कियोंसे ही चढ़ सकते हैं और यह जानवर तो ऐसा बेफिक्र सो रहा है कि बन्दूककी आवाज होने पर भी न जागेगा।

"मोशिये, मोशिये......उठो तो, कुछ बातें ही करो.........ऐसी नींद! शैतान तुम्हें उठा ले जाय।"

ऐन्टन पैफ्नुटिच शान्त हो गया। थकावट और मदिराके प्रभावसे वह धीरे-धीरे संज्ञाहत होने लगा। वह खर्राटे लेने लगा और बहुत शीघ्र गाढ़ी नींदमें सो गया।

जागरण उसके लिए अत्यन्त विस्मयकारी हुआ। नींदमें ही उसे अनुभव हुआ कि कोई उसकी छातीपर चढ़कर उसके गलेका कालर खोल रहा है। उसने डरकर अपनी आँखे खोलीं और पतझड़ ऋतुके प्रातःकालीन मन्द प्रकाशमें डीफोर्ज को अपने सामने खड़ा पाया। अपने एक हाथमें यह फ्रांसीसी अध्यापक एक जेबी पिस्तौल लिये था और दूसरेमें वह बहुमूल्य चमड़ेवाली थैली लटक रही थी। ऐन्टन पैफ्नुटिच यह देखते ही जड़ हो गया।

"यह क्या, यह क्या मोशिये?" वह चिल्लाया—"यह क्या?"

"हुश, अपनी जबान रोको।" अध्यापकने विशुद्ध रूसी भाषा बोलते हुए कहा—"अपनी जबान रोको, नहीं अभी समाप्तकर दूँगा। मैं डब्रोवस्की हूँ।"

११

अब हम अपने पाठकोंसे अपनी कथाके उस प्रसंगकी ताजी घट-नाओंका विवरण देनेकी अनुमति चाहते हैं जिसे अब तक हमने नहीं बताया है।

स्टेशनके निकट जिस डाक-घरका उल्लेख पहले किया जा चुका है, कोनेमें एक यात्री बैठा था जो देखनेमें अत्यन्त साधारण स्तरका व्यक्ति मालूम होता था। वह कोई विदेशी भी हो सकता था; वह ऐसी स्थितिमें दिखायी पड़ रहा था जिसका पोस्टमास्टरकी दृष्टिमें कोई मूल्य न था। उसकी छोटीसी हलकी गाड़ी बाहर खड़ी थी जिसके पहियोंकी मरम्मत हो रही थी। गाड़ीमें उसके बिस्तर का बंडल और दूसरे गट्ठर पड़े थे जो अपने स्वामी की निर्धनताकी प्रत्यक्ष साक्षी दे रहे थे। यात्रीने न तो काफी माँगा और न चाय, बल्कि वह खिड़कीके बाहर सिर निकाले सामने देखता और सीटी बजाता रहा जिसपर पोस्टमास्टरकी पत्नी बहुत नाराज हो रही थी जो सामनेकी दीवारसे ही लगी बैठी थी।

"भगवानने यहाँ हमारे लिए एक सीटी बजानेवाला भेज दिया है" वह धीरेसे बुदबुदायी—"जब देखो सीटी बजाना, अभिशप्त विदेशी, जैसे मालूम होता है कि इसका भीतरी हिस्सा भी सड़-गल गया है।"

"क्यों न बजाये ?"—पोस्टमास्टर बोला —"इसमें हर्जही क्या होता है ? बजाने दो उसे सीटी ।"

"हर्ज !—"उसकी क्रुद्ध पत्नीने चिढ़कर कहा—"क्या तुम नहीं जानते कि यह स्वर अत्यन्त मनहूस और अपशकुन है ।"

"अपशकुन ? तुम समझती हो कि सदा रुपया ही बजाया जाय । आह, पाखोमोव्ना, सीटी बजे या न बजे । इस समय हमें कहींसे पैसा आनेका लक्षण नहीं दिखायी पड़ता ।"

"हटाओ उसे, सिडोरिच तुम किस लिए उसे ठहराये हो ? उसे घोड़ी दे दो और कह दो चला जाय जहन्नुम में ।"

"वह प्रतीक्षा कर सकता है पाखोमोव्ना ! इस समय तो हमारे अस्त-बलमें केवल तीन ही ट्रोयेका (तीन घोड़ोंवाली गाड़ी) हैं । चौथी भी पड़ी है । किसी भी समय कोई धनी मुसाफिर आ सकता है । मैं इस फ्रेञ्च यात्रीके लिए अपना गला नहीं फँसाऊँगा । क्या मैंने ठीक नहीं कहा ? मालूम होता है कोई घोड़ा दौड़ाये शायद भागा चला आ रहा है । कितनी तेजीसे ! लगता है जैसे कोई जनरल हो ।"

पोस्ट-आफिसके बारान्देके सामने एक गाड़ी आकर रुकी । गाड़ी परसे नौकर नीचे कूद पड़ा । उसने गाड़ीका दरवाजा खोला और दूसरे ही क्षण सेनाका कोई युवक अधिकारी अपने लम्बे कोट और सफेद नोकीले टोप पहने पोस्टमास्टरके सामने आ खड़ा हुआ । उसके पीछे एक नौकर खड़ा था जिसके हाथ में एक रत्नपेटिका थी जिसे उसे खिड़की के पत्थर पर धर दिया ।

"घोड़े !" उस युवक अधिकारीने तेज स्वरमें कहा, जैसे उत्तरके लिए उसके पास समय ही न हो ।

"इसी क्षण !"—पोस्टमास्टरने कहा—"आपकी आज्ञा भर होनी चाहिये ।"

"मेरा कोई हुक्म नहीं है, कोई आज्ञा नहीं। मैं ......तक जाना चाहता हूँ। क्या तुम नहीं जानते मैं कौन हूँ?"

पोस्टमास्टर क्षण भरके लिए स्तब्ध हो एक पग पीछे हटता सा लगा और तब कोचवानोंको सहेजनेके लिए शीघ्रतासे दौड़ गया। कमरेमें इधर उधर चहल कदमी करनेके बाद युवक अधिकारी उस दीवारके पास गया और पोस्टमास्टरकी पत्नीसे विनम्र स्वरमें पूछा कि वह दूसरा यात्री कौन है?

"भगवान जाने! नेक स्त्रीने उत्तर दिया—"कोई फ्रांसीसी मालूम होता है। घोड़ोंके लिए यह यहाँ पाँच घन्टोंसे प्रतीक्षा कर रहा है और तबसे सीटी बजा रहा है। मैं तो इस अभागेसे घबड़ा गयी हूँ।"

अब इस नवयुवकने यात्रीसे फ्रेञ्च भाषामें ही बोलना आरम्भ किया—"क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि आप कहाँ जा रहे हैं?"

"बगलवाले शहरमें"—फ्रांसीसीने उत्तर दिया—"और वहाँसे मैं एक जमींदारके घर जाऊँगा जिसने मुझे पत्र लिखकर अध्यापक नियुक्त करनेके लिए बुलाया है। मुझे आशा थी कि अपने गन्तव्य तक मैं आज ही पहुँच जाऊँगा, मोशिये! पोस्टमास्टर ऊपरसे देखनेमें कुछ दूसरे ही तरह का लगता है। इस देशमें मोशिये अधिकारी! घोड़े मिलना भी कठिन होता है।"

"यहाँके किस जमींदारके यहाँ आप जाना चाहते हैं?" अफसरने पूछा।

"मोशिये ट्रायेकुरोवके घर।"

"ट्रायेकुरोव...... यह कौन है।"

"मोशिये अफसर! मैंने उसकी बड़ाईकी कोई बात न सुनी। लोग कहते हैं कि बड़ा ही क्रूर अभिमानी और स्वेच्छाचारी पुरुष है। अपने घरके प्राणियों तकसे वह कठोरतासे पेश आता है। लोगोंका यह भी कहना है कि कोई भी आदमी ज्यादा समय तक उसके पास नहीं ठहरा।

लोग तो उसका नाम सुनते ही काँप जाते हैं। कहते हैं वह अपने अध्यापकोंसे भी सख्ती बर्तता है और सुना तो यह गया है कि उसने दो अध्यापकोंको मरवा डाला।"

"और तब भी आप ऐसे शैतानकी नौकरी करनेके लिए जा रहे हैं?"

"मैं कर ही क्या सकता हूँ मोशिये अधिकारी? वह मुझे अच्छा वेतन देगा। तीन हजार रूबल वार्षिक... सभी नये सिक्के। हो सकता है कि मैं और अध्यापकोंकी अपेक्षा कुछ सौभाग्यशाली होऊँ। मेरी माँ अतिशय वृद्ध है। आधी तनख्वाह मैं उनकी जरूरतोंके लिए उन्हें भेज दूँगा। इस प्रकार भी पाँच वर्षमें मेरे पास पर्याप्त धन संचित हो जायगा, इतना कि भविष्यके लिए स्वतंत्र रूपसे कोई कार्य कर सकूँ और ईश्वरकी कृपा होगी तो पेरिस लौट जाऊँगा और आराम से जीवन व्यतीत करूँगा।"

"ट्रायेकुरोवके परिवारमें क्या कोई आपको जानता है?"

"कोई नहीं"—फ्रांसीसी अध्यापकने उत्तर दिया—"उसने मुझे अपने एक मित्रके जरिये मास्कोसे बुलवाया है जो स्वयं भी वहीं रहते हैं। वह मेरे भी हितैषी हैं। मेरे लिए उन्होंने सिफारिश कर दी। आपको शायद ज्ञात न होगा कि मैंने अपनी शिक्षा कानफेक्शनरके क्षेत्रमें ग्रहण की है, अध्यापककी नहीं, किन्तु यह सुना कि आपके देशमें अध्यापकका काम और कार्यों की अपेक्षा अधिक लाभप्रद है......।"

अफसर किसी सोचमें मग्न सा मालूम पड़ता था।

"सुनो"—अध्यापककी ओर मुँहकर और उसके बोलते रहनेका प्रवाह रोकते हुए उसने कहा—"अच्छा मान लो कि यह कार्य छोड़कर तुम्हें तत्काल पेरिस चले जानेपर यदि कोई दस हजार रूबल दे तो...?"

फ्रांसीसी इस अधिकारीकी ओर विस्मय विस्फारित नेत्रोंसे देखने लगा, तब कुछ हँसा और उसने सिर हिला दिया।

"घोड़े तैयार हैं"—पोस्टमास्टरने कमरेमें घुसते हुए कहा। नौकरने भी यही बात दोहरायी।

"क्षण भर रुको"-अधिकारी बोला—"कृपया एक पलके लिए यह कमरा छोड़ दो, हट जाओ।" नौकर और पोस्टमास्टर बाहर चले गये—"मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ"—उसने फ्रांसीसी भाषामें ही कहा—"मैं तुम्हें दस हजार रूबल अभी दूँगा। मैं केवल इतना चाहता हूँ कि तुम अपने इस सिफारिशी पत्रके साथ गायब हो जाओ—वहाँ मत जाओ।" कहते हुए उसने अपनी रत्नोंवाली पेटी खोली और उसके भीतरसे कई मुट्ठी नये नोटोंका बण्डल निकाला।

फ्रांसीसी आखें फाड़कर देखने लगा। वह समझ न पा रहा था कि क्या करना चाहिये।

"मेरी अनुपस्थिति,...मेरा कागज...।" उसने उसी भाँति आश्चर्य-चकित होकर कहा—"यह है वह सिफारिशी पत्र...लेकिन मुझसे हँसी कर रहे हैं। आप मेरे इस कागजको क्यों माँग रहे हैं?"

"इससे आपका क्या मतलब। मैं किसी भी कार्यके लिए उसे चाहता हूँ। आप केवल इतना ही बतायें कि आप मेरी शर्तपर तैयार हैं या नहीं।

फ्रांसीसीने, जिसे अब भी इन बातों पर विश्वास न हो रहा था, अपना सिफारिशी पत्र और दूसरे कागजात उस नवयुवक अधिकारीको थमा दिये जो कागज लेते ही उसे जल्दी-जल्दी पढ़ने लगा।

"अच्छा यह रहा आपका पासपोर्ट...ठीक! और यह है आपका परिचय-पत्र; इसे मुझे जरूर देख लेना चाहिये। यह है जन्म-तिथिका प्रमाण पत्र...शाबाश। सब ठीक है। अब आप अपनी रकम सँभालिये और चुपचाप उल्टे पाँव अपने देश लौट जाँय। अच्छा नमस्ते।"

फ्रांसीसी युवक ऐसा दिखायी पड़ रहा था जैसे पत्थरकी मूर्त्ति हो। अफसर फिर उसके पास आया।

"मैं खास बात तो भूल ही गया था। आप मुझे विश्वास दें कि जो

कुछ भी वार्ता यहाँ मेरे आपके बीच हुई है, वह केवल हम दोनों तक ही सीमित रहेगी। मुझे विश्वास दिलाइये...।।"

"मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ...वचनबद्ध होता हूँ। फ्रांसीसी बोला—"लेकिन मेरे कागजात ..उनके बिना फिर मैं क्या करूँगा ?"

"जब आप निकटके शहरमें पहुँच जाँय तो वहाँ आप यह प्रचारित कर दें कि रास्तेमें आप डब्रोवस्की द्वारा लूट लिये गये। लोग आपकी बात पर विश्वास कर लेंगे और आवश्यक प्रमाण-पत्र आपको फिर प्राप्त हो जायँगे।...अच्छा विदा—भगवान आपको सकुशल पेरिस पहुँचा दे और आप अपनी माताको स्वस्थ और प्रसन्न देखें, यही मेरी कामना है...विदा।"

डब्रोवस्की विदा लेकर कमरेके बाहर आया, नौकर सहित वह गाड़ी पर चढ़ा, फिर दौड़ते हुए घोड़ोंने उसे क्षण भरमें आँखोंसे ओझल कर दिया।

पोस्टमास्टर अपनी खिड़कीसे सिर निकालकर बाहर झाँकता रहा। गाड़ी जब आँखोंसे ओझल हो गयी तो वह लौटकर अपनी पत्नीके पास गया।

"क्या तुम जानती हो पाखोमोव्ना कि यह पुरुष, जो अभी क्षणभर पहले यहाँसे गया है, कौन था ? वह डब्रोवस्की था।" उसने भय और आश्चर्यमिश्रित वाणीमें कहा।

उसकी पत्नी तेजीसे दौड़कर खिड़कीपर गयी। पल्लोंको हटाकर आँखें फाड़-फाड़कर उस अत्यन्त प्रख्यात डाकू सरदारको देखनेका प्रयत्न करने लगी, किन्तु वह तो अबतक बहुत दूर जा चुका था। कुछ क्षण पहले आकर यह सूचना न देनेके कारण वह पति पर बिगड़ उठी।

"क्या तुम्हें ईश्वरका भी भय नहीं है सिडोरिन्च ! वह चिल्लाने लगी—"यही बात तुमने मुझे पहले क्यों न बतायी ? कम से कम एक बार मैं भी तो डब्रोवस्की को देख लेती और भगवान जाने, वह फिर कभी इस

रास्ते यहाँ आवेगा या नहीं। तुम पूरे बेहया हो—हाँ-हाँ, तुम ठीक यही हो...बेहया, बेशरम।"

फ्रांसीसी अब भी उस स्थानपर वैसे ही खड़ा रहा मानों वह जमीनसे सट गया हो या निर्जीव हो। अभी-अभी यहाँसे जानेवाले अधिकारीसे पक्की की गयी शर्तें, अपने वचन, उसके रुपये, सब मानो स्वप्नवत लगते। लेकिन नोटोंका बण्डल उसकी जेबमें पड़ा हुआ था, उसने जेबमें हाथ डालकर एक बार फिर उन्हें भीतर ही उलट-पुलट कर देखा, परीक्षा ली और तब उसे विश्वास हो गया कि वह जागता है और यह विस्मयजनक घटना सच ही दो क्षण पहले हो गयी है।

उसने अब शहरतक चले जानेके लिए घोड़ा किरायेपर लेनेका निश्चय किया। कोचवान बहुत धीरे-धीरे गाड़ी चलाता था और जब वह शहर में पहुँचा तो रात हो चुकी थी।

फ्रांसीसीने कोचवानको शहरके फाटकके बाहर ठहराया जहाँ सन्तरीके बैठनेकी जगह दिखायी पड़ रही थी, वह गाड़ीसे उतर पड़ा और पैदल ही जाने लगा। कोचवानको उसने समझा दिया कि वह गाड़ी और संदूक बख्शीशके तौर पर ले जा सकता है। कोचवान इस दरिद्र यात्री की दयालुता देखकर वैसा ही स्तब्ध हो उठा जैसे स्टेशनपर उस अधिकारी डब्रोवस्कीका प्रस्ताव सुनकर फ्रांसीसी चकित हो गया था। किंतु यह सोचकर कि यह विदेशी संभवतः पागल हो गया है, कोचवानने उसे धन्यवाद दिया, झुककर उसे चावसे सलाम किया, फिर शहरमें न जानेकी इच्छासे प्रेरित होकर, मनोरञ्जनके लिए एक ऐसे मकानमें चला गया जो उसका जाना-सुना था और जिसका स्वामी उसका अच्छा-खासा दोस्त था। वहाँ उसने सारी रात बितायी और दूसरे दिन घरके लिए रवाना हो गया; उसकी आँखें लाल थीं, चेहरा भींगा हुआ था, उसने गाड़ी और सन्दूक वहीं छोड़ दी थी।

उस फ्रान्सीसी युवकसे उसका सिफारिशी पत्र और और अन्य प्रमाण-

पत्र लेकर—जैसा हम ऊपर देख चुके हैं—डब्रोवस्की निर्भयतापूर्वक ट्रायेकुरोवके सम्मुख जा खड़ा हुआ, जहाँ उसकी नियुक्ति अध्यापक पद पर हो गयी और वह उसीके मकानके एक खण्डमें रहने लगा। उसका उद्देश्य चाहे जो भी रहा हो (जिसका वर्णन आगे किया जायगा), उसके आचरण और व्यवहारमें ऐसी बात न थी जिससे सन्देह उत्पन्न होता। यह सही है कि वह कभी उस छोटे बच्चे साशाकी शिक्षापर न जोर देता और न उसके लिए अधिक परिश्रम करता—उसे खेलनेके लिए पूरी छूट दे देता और जो पाठ उसे पढ़नेको दे दिये होता उसे पूछने और उसकी परीक्षा लेनेका भी वह इसलिए बहुत कम प्रयत्न करता कि वह बारबार न मिला करे। उसकी उपस्थितिसे वह बचना चाहता था। इसके प्रतिकूल अपने दूसरे शिष्यकी संगीत-शिक्षाकी प्रगतिपर वह काफी ध्यान देता, उसमें रुचि लेता, प्यानोंपर घन्टों उसके साथ बैठकर उसके सम्पर्कका आनन्द लेता।

घरके सभी लोग इस अध्यापकसे खुश थे—किरिल्ला पेट्रोविच शिकारमें उसकी निर्भय वीरता देखकर प्रसन्न था, मेरिया केरिलोवना उसके अदम्य उत्साह और लजालु व्यवहार पर रीझ गयी थी, साशा उसे इस-लिए चाहता कि वह उसे खेलनेकी पूरी छूट दे देता, नौकर उसकी दया-लुता और उदार चरित्रके कारण उसे चाहते जो वे अन्यत्र नहीं पाते थे। वह स्वयं ऊपरसे देखनेसे सम्पूर्ण परिवार और नौकर-चाकरोंसे घनिष्ट रूपसे ममतामें बँधा था जिनके बीच उसे ऐसा लगता मानों वह अपने ही घरमें हो।

इस अध्यापककी नियुक्तिसे लेकर उस अविस्मरणीय भोजवाले दिन तक प्रायः एक महीना बीत गया, किन्तु किसी को यह सन्देह भी न हो सका कि यह विलक्षण चतुर और कला-प्रवीण फ्रांसीसी युवक अध्यापक ही वह हिंस्र डाकू है जिसके नाममात्र ले लेनेसे आसपासके जमींदारों की छाती काँप जाती और उनके प्राण सिकुड़ जाते थे। इस बीच डब्रो-

वस्की पोक्रोवस्कोई छोड़कर कहीं न गया, फिर भी उसके नामसे लूट और डाकोंके समाचार इस प्रकार आते रहते कि आतङ्क और निराशाका जो भाव पहले बन चुका था उसमें कोई कमी न आने पाथी। इसके दो कारण हो सकते हैं। या तो ये सब समाचार देहातके किसानोंके मस्तिष्ककी उपज थे जो बराबर कुछ न कुछ समाचार गढ़कर बातें फैलाया करते या यह भी हो सकता है कि डब्रोवस्कीके साथी ही अपने सरदारकी अनु पस्थितिमें भी अपना काम चालू रखते रहे हों।

जब उस रातको उसने अपने कमरेमें उस व्यक्तिको अकेले सोता देखा जो उसका विनाश और दुर्भाग्य लानेमें प्रधान सहायक था, तो बदला लेनेकी तीव्र भावनाको डब्रोवस्की दबा न सका। ऐन्टन पैफ्नुटिचकी छाती पर रखी कमीजके नीचे छिपायी थैलीका मर्म डब्रोवस्की जान चुका था और उसने उसपर अधिकार कर लेनेका निश्चय कर लिया। पूर्व परिच्छेदमें हम देख चुके हैं कि एक सरल अध्यापकसे भयानक डाकू बनकर उसने अभागे ऐन्टन पैफ्नुटिचको किस प्रकार संकटमें डाल दिया।

दूसरे दिन सबेरे ६ बजे सभी मेहमान, जो उस रात पोक्रोवस्कोई रुक गये थे, बैठकखानेमें नये-नये वस्त्र पहनकर और सज-धजकर एकत्र होने लगे, जहाँ वह फ्रांसीसी अध्यापक मेरिया केरिलोब्नाके बगलमें बैठा प्रातःकालीन वस्त्र धारणकर धुँआ उड़ा रहा था। किरिल्ला पेट्रोविच फला-लैनका लबादा और चप्पल पहने एक बहुत बड़े प्यालेमें कोई पेय पी रहा था। सब लोग यथास्थान बैठ गये। सबके अन्तमें ऐन्टन पैफ्नुटिच था जो इतना निस्तेज, विवर्ण और क्षुब्ध लगता मानों उसे असीम कष्ट हो जिसे वह कह नहीं पा रहा हो। किरिल्ला पेट्रोविचने उससे पूछा कि खैरियत तो है? ऐन्टन पैफ्नुटिचने अस्पष्ट शब्दोंमें कुछ उत्तर दिया जिसका अर्थ कोई समझ न सका। उसकी दृष्टि सामने ही बैठे उस अध्यापकपर पड़ चुकी थी जो चुपचाप इस प्रकार बैठा था मानो कुछ हुआ ही न हो। कुछ देर बाद एक नौकर भीतर आया, उसने सूचना दी कि ऐन्टन पैफ्नु-

टिचकी गाड़ी तैयार है। अपने गृहस्वामीके बार-बार अनुरोध और रुक जानेका आग्रह सुनकर भी ऐन्टन पैफ्नुटिच्चने शीघ्रातिशीघ्र सबसे विदा ली और तत्काल गाड़ीपर चढ़कर वहाँसे भाग गया। सभी लोग विस्मय प्रकट कर रहे थे कि आखिर ऐन्टन पैफ्नुटिचको हो क्या गया है? जब कोई इसका समुचित उत्तर न बता सका तो किरिल्ला पेट्रोविचने निर्णय किया कि ऐन्टन पैफ्नुटिच्चने बहुत ज्यादा खा लिया है—मेहमानोंने उसे अधिक खिला दिया, इसीसे वह बीमार पड़ गया है। विदाईका नाश्ता और चाय आदिके बाद सभी मेहमान एक-एक करके चले गये और शीघ्र ही पोक्रोवस्कोई नये आदमियोंसे खाली हो गया। सभी काम पूर्ववत् होने लगे।

१२

कई दिन बीत गये, किन्तु कोई उल्लेख्य घटना न हुई। पोक्रोवस्कोईके निवासियोंका जीवन निरानन्द और उदास-सा था। किरिला पेट्रोविच प्रतिदिन शिकार खेलने जाता—पढ़ना, टहलना, घूमना और संगीतकी शिक्षा-ग्रहण करना, ये ही काम मेरियाके थे जिनमें भी वह संगीतको ही प्रथम स्थान देती। अब मेरिया अपने हृदयमें छिपी बातोंका कुछ-कुछ रहस्य समझने लगी थी और उन्हें वह चुपचाप स्वीकार कर लेती—उसने यह भली भाँति अनुभव कर लिया कि इस दक्ष फ्रांसीसी युवककी योग्यताके प्रति वह लापरवाह नहीं बनी रह सकती। उधर उस युवकने मर्यादा और संयमकी सीमासे अधिक एक पग न बढ़ाया। उसने उस सुन्दरीके अभिमानको भीतर ही भीतर बढ़ने दिया जिसकी भावनाएँ अपनी डाल-पात अज्ञात रूपसे फैला रही थीं। नित्य बढ़ते हुए विश्वासोंके साथ उसने हर्षदायक पुलकावेगोंके सम्मुख अपना आत्म-समर्पण कर दिया।

डीफोर्ज जब न रहता, कहीं किसी कार्यवश बाहर चला गया होता तो उसकी अनुपस्थिति अब उसे खटकती। वह उदास हो जाती और

उसे कुछ भी अच्छा न लगता। और जब वह उसके पास उपस्थित रहता तो वह घरके किसी भी काम, किसी व्यक्तिके प्रति तनिक भी ध्यान न देती; उसके ही निकट रहनेकी चेष्टा करती, हर बातमें उसकी राय जानना चाहती और जब वह अपना अभिमत सुना देता तो वह उसे सहर्ष स्वीकार कर लेती। वास्तवमें उसकी राय भी वही होती जो अध्यापककी। हो सकता है कि मेरियाके हृदयमें प्रेमकी वह आग न जल रही हो, किन्तु भावना और आवेशोंकी लपटें चमकने और भभक उठनेको तैयार थीं। किसी विघ्न, प्रतिरोध या भाग्य-निर्णयके प्रश्नपर वह भावुकताभरी मन ही मन इस विदेशी युवकके प्रति ही आकृष्ट होती।

एक दिन जब वह बड़े हालमें संगीत सीखनेके लिए आयी, उसे यह देखकर अत्यन्त विस्मय और दुःख हुआ कि अध्यापकका मुँह पीला, उदास और चिन्तातुर था। उसने प्यानो बजाना शुरू किया, दो-एक कड़ी गायी भी, किन्तु डब्रोवस्कीने सिरदर्दका बहाना कर उसे बीच ही में रोक दिया, संगीतकी पुस्तक उसने बन्द कर दी और कुछ छिपाते हुए गुप्त रीतिसे एक मुड़ा हुआ कागज उसके हाथोंमें दे दिया। मेरिया केरिलोव्नाने कागज ले लिया, किन्तु वह अच्छा नहीं कर रही है, अपने कार्य पर उसे पश्चात्ताप हो, इसके पूर्व ही डब्रोवस्की कमरेके बाहर चला गया था। कागज लेकर मेरिया केरिलोव्ना अपने कमरेमें चली गयी। चारो ओर सतर्कतापूर्ण दृष्टिसे देखकर उसने कागज खोला और उसमें पढ़ा—

"आज शामको सात बजे नदीके किनारेवाले उस लता-कुंजमें मिलना। मुझे तुमसे कुछ आवश्यक बातें कहनी हैं। जरूर आना।"

कौतूहल और विस्मयसे वह काँप उठी। अध्यापकके मनोभावोंकी स्वीकृतिकी वह बहुत पहलेसे ही प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसकी स्वीकृतिकी जितनी इच्छुक थी, उतनी भयभीत भी। उसने अपने अनुमानको पुष्ट कर लेना चाहा, किन्तु साथ ही उसने यह भी अनुभव किया कि वह उस

विदेशी युवकके मनोभावोंको एकान्तमें सुने, यह अनुचित है, उसके लिए हितकर नहीं है। क्योंकि अध्यापककी सामाजिक स्थिति ऐसी न थी जो इस स्वीकृतिके बाद भी उसे मेरियाका पाणिग्रहण करानेमें समर्थ होती।

यद्यपि वह किसी एक बातपर स्थिर न हो सकी, किन्तु मिलनके लिए नियुक्त स्थानपर उसने एक बार जानेका निश्चय कर लिया, कैसी होगी उसकी स्वीकृति ? वह उसके प्रति अपना प्रेम किस प्रकार प्रकट करेगा—किसी स्वेच्छाचारीके रोषयुक्त वचनोंसे, अथवा मित्रोंके मधुर उलाहनों और शिकायतोंसे, या उपहास, विनोद और हँसीसे, या कि फिर मौन सहानुभूतिसे ? किन्तु अब लगातार घड़ी देखते रहना उसके लिए कठिन हो गया। गोधूलिकी बेला ढल चुकी थी। चारो ओर अँधेरा छा गया था। किरिल्ला पेट्रोविच शिकारसे लौट आया था और अब वह अपने उन कुछ पड़ोसियोंके साथ, जो उससे मिलने चले आये थे, बैठकर शतरंज खेल रहा था। भोजनवाले कमरेमें लगी घड़ीने सवा सातकी घंटी बजायी। मेरिया चुपचाप घरसे निकलकर दालानमें आयी—वहाँसे हलके पैर बढ़ाती बारान्देमें आयी। चारों ओर सावधानीसे देखा। जब कोई न दिखायी पड़ा तो चुपचाप चोरोंकी तरह बगीचेकी ओर अत्यन्त शीघ्रतासे चली गयी।

उस दिनकी वह संध्या बहुत ही घनी थी, चारों ओर अँधेरा छा गया था। आकाशमें काले बादल छा गये थे। अन्धकार इतना गाढ़ा था कि दो कदम आगेकी चीज दिखायी पड़ना कठिन था, किन्तु मेरिया परिचित रास्तों और पगडण्डियोंसे अँधेरेमें भी शीघ्रतासे बढ़ती गयी और क्षण भरमें ही वह मिलनके लिए पूर्वनिश्चित स्थलपर पहुँच गयी। वहाँ वह एक क्षणके लिए रुकी, अपनी स्वाभाविक दशा बना लेनेके लिए, जिससे डीफोर्जके सम्मुख जाकर वह लापरवाही और निरुद्देश्य भाव प्रदर्शित कर सके। लेकिन डीफोर्ज तो पहलेसे ही वहाँ खड़ा था जो अब उसके सामने था।

"मेरी प्रार्थना तुमने अस्वीकार नहीं की, इसके लिए धन्यवाद।" उसने अत्यन्त दबी और दुःखपूर्ण वाणीमें कहा—"यदि तुम मेरे पत्रपर ध्यान न देतीं और मेरा अनुरोध अस्वीकार कर देतीं तो मुझे बहुत दुःख होता।"

मेरिया केरिलोव्नाने देशमें प्रचलित परिपाटीके अनुसार कहा—"मुझे विश्वास है आप मुझे अपने निर्णयके लिए दुखी होनेका अवसर न देंगे।"

उसने कुछ उत्तर न दिया; ऐसा लगता मानो वह अपना साहस बटोर रहा था।

"परिस्थिति ही कुछ ऐसी है...........अब मुझे तुम लोगोंको छोड़कर चले जाना होगा"—उसने अन्तमें किसी प्रकार कहा—"तुम शायद शीघ्र ही सुन भी लो कि .... किन्तु जानेके पूर्व मैं चाहता था कि.....कुछ बातें ऐसी हैं जो तुम्हें बता जाऊँ।"

मेरियाने कोई उत्तर न दिया। वह धड़कते दिलसे सारी बातें सुनती गयी। उसने समझ लिया कि यह बात उस आगे आनेवाली प्रेमकी स्वीकृतिकी पूर्वभूमिका है।

"जो तुम मुझे समझ रही हो, वह मैं नहीं हूँ...।" उसने अपना सिर झुका दिया और कहा—"मैं फ्रांसीसी डीफोर्ज नहीं हूँ, मैं डब्रोवस्की हूँ।"

मेरिया चिल्ला उठी।

"शोर न करो, मैं प्रार्थना करता हूँ। मेरी बात सुन लो, मेरे नामसे ही मत डरो। मैं ही वह अभागा हूँ जिसे तुम्हारे पिताने एक टुकड़ी रोटीके लिए मुहताज कर दिया, मुझे अपनी पैतृक जमींदारीसे निकाल बाहर किया, मेरा सुख और भविष्य लूट लिया और इस प्रकार मुझे राहका लुटेरा बना दिया। किन्तु तुम मुझसे तनिक भी न डरो—न तो अपने लिए और न उनके लिए ही चिन्ता करो। जो कुछ था, वह तो हो गया।

मैंने उन्हें क्षमा कर दिया है। यह भी जान लो कि तुम्हारे ही कारण मैंने उन्हें छोड़ भी दिया। मैंने पहले दिलमें यही ठाना था कि अपना पहला हिंसक कार्य उनसे ही बदला लेकर आरम्भ करूँगा। मैं नित्य तुम्हारे इस मकानके चारों तरफ घूमता और यही सोचता कि आग कहाँसे लगाऊँ, किस जगहसे उनके शयनागारमें घुसूँ, भीतर चला जाऊँगा तो कैसे बच निकलूँगा,—लेकिन उसी समय तुम रास्तेसे निकल गयीं, मेरे सामनेसे, जैसे ईश्वरकी कोई विभूति, और तुम्हें देखकर मेरा हृदय पराजित हो उठा। मेरा पूर्व विचार नष्ट हो गया। मैंने अपने मनमें कहा कि जिस घरमें तुम रहती हो वह पवित्र है और ऐसा कोई भी व्यक्ति जो तुम्हारे रक्तके धागेसे सम्बन्धित है, मेरे कोपका शिकार नहीं हो सकता। मैंने बदला लेनेका वह पागलपन मनसे दूर कर फेंका। महीनोंतक मैं पोक्रोवस्कोईके बाहरी बगीचों और मैदानोंमें केवल इसीलिए घूमता रहा कि दूरसे ही तुम्हें उन रंगीन वस्त्रोंमें लिपटी अप्सराकी भाँति सौन्दर्य लुटाते देख लूँ। तुम्हारी असावधानी और अनजानेमें मैंने तुम्हारा पीछा किया, एक झाड़ीसे दूसरी झाड़ीमें छिपकर जाता, चोरोंकी तरह छिपकर सदैव तुम्हारे पीछे लगा रहता और इसी विचारसे प्रसन्न रहता कि मैं तुम्हारी रखवाली कर रहा हूँ और जहाँ मैं तुम्हारे अनजानेमें भी रहूँगा वहाँ तुम्हारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता। अन्तमें एक दिन एक मौका भी आया। मैं तुम्हारे ही घरमें रह गया। तीन हप्तोंका यह समय मेरे लिए स्वर्गका सुख देनेवाला था। इनकी यादसे ही मेरे दुखी जीवनमें आनन्दकी हलकी रेख प्रकट होती रहेगी। किन्तु मुझे कुछ ऐसे समाचार मिले हैं जिससे मेरा यहाँ रहना अब असम्भव हो गया है। अब आज मैं तुमसे विदा लेता हूँ। इसीलिए यहाँसे ··· किन्तु जानेके पहले मैंने तुम्हें सारी स्थिति बता देना चाहता हूँ जिससे तुम मुझे गालियाँ देकर बुरा न कहो। कभी डब्रोवस्कीकी भी याद कर लेना। सोच लेना कि वह कोई दूसरा भाग्य लेकर ही जन्मा था, किन्तु उसका दिल सदा तुम्हारे ही प्रेममें पगे रहनेका अभ्यस्त और··· ।"

इसी समय एक सीटी सुनायी पड़ी और डब्रोवस्कीने कहना बन्द कर दिया। उसने कसकर मेरियाकी हथेलियोंको पकड़ लिया, उन्हें उठाकर अपने जलते होठोंसे लगाया। सीटीकी आवाज फिर सुनायी पड़ी।

"मुझे क्षमा करना"—डब्रोवस्की बोला—"मेरे लिए यही लिखा है, मुझे जाना ही पड़ेगा। एक क्षणका विलम्ब भी मुझे विनष्ट कर सकता है।"

वह उसके पाससे कुछ कदम आगे बढ़ा, मेरिया ज्यों की त्यों अपनी जगहपर निस्पंद, अपलक खड़ी थी। अचानक डब्रोवस्की लौट आया, उसने फिर मेरियाका हाथ पकड़ लिया।

"यदि कभी,—वह अत्यन्त नम्र और करुणार्द्र वाणीमें बोला—यदि कभी...तुम्हें कोई खतरा हो, किसी प्रकारकी विपत्तिकी आशंका हो और अपनी रक्षा तथा सहायताकी जरूरत आ पड़े तो क्या तुम मुझे वचन देती हो कि मुझे सूचित करोगी? मेरी सहायताके लिए क्या मेरी भी ओर देखोगी? तब उस समय तुम्हारी मुक्तिके लिए मैं कुछ उठा न छोड़ूँगा। क्या तुम मेरी इस ममताको न तोड़नेका वचन देती हो?"

मेरिया चुपचाप रो रही थी। सीटी तीसरी बार बजी।

"क्या तुम मुझे नष्ट हो जाने देना चाहती हो—बोलो, जल्दी बोलो। जब तक तुम हाँ नहीं कह दोगी, मेरे प्रश्नका उत्तर न दे लोगी, मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगा। क्या तुम वचन देती हो, या 'ना' ही कह दो।"

निराश सुन्दरीने रोते हुए कहा—"वचन देती हूँ।"

मेरिया केरिलोव्ना बगीचेसे चली गयी। डब्रोवस्कीसे मिलकर उसे अत्यन्त वेदना हो रही थी। जब वह लौटकर चलने लगी तो उसे ऐसा लगा मानो कुछ लोग भागे जा रहे हों। उसका घर लोगोंसे भर गया था, आँगनमें काफी भीड़ जुट गयी थी। बारान्देमें तीन घोड़ोंवाली गाड़ी-ट्रायेका खड़ी थी और किरिल्ला पेट्रोविचकी आवाज साफ सुनायी पड़ रही थी, दूरसे। वह शीघ्रतासे घरकी ओर भागी। उसे भय हुआ कि उसकी

अनुपस्थितिका पता लोगोंको चल गया। अब उसे अपनी स्थितिका पता चला। अवश्य ही लोग जान गये होंगे। उसका पिता भीतर हालमें उससे मिला, जहाँ हमारा परिचित इस्प्रावनिक—जिलेका अधिकारी—सैकड़ों आदमियोंसे घिरा खड़ा था और जिससे लोगोंने प्रश्नोंकी झड़ी लगा दी थी। वह यात्राकी पोशाक पहने था, सिरसे पैर तक अच्छी तरह लैस था। अस्त्र-शस्त्र भी उसके पास सजे-सजाये थे। लोगोंके प्रश्नोंके उत्तरमें इस्प्रावनिकने रहस्यसूचक दृष्टिसे देखा।

"तुम कहाँ चली गयी थी माशा ?" उसके पिताने पूछा—"तुम तो मोशिये डीफोर्जसे न मिली होंगी, क्या वह तुम्हें दिखायी पड़ा था ?"

नकारात्मक उत्तर देनेमें माशाको ऐसा लगा मानो उसकी सभी शक्ति लग गयी।

"केवल ख्याल है ! किरिल्लाने उसी प्रकार कहा—यह इस्प्रावनिक उसे गिरफ्तार करने आये हैं। यह मुझे विश्वास दिला रहे हैं कि हमारे मोशिये अध्यापक ही डब्रोवस्की हैं; क्या मूर्खता है ?"

"सभी हुलिया मिल है रही हुजूर !"—इस्प्रावनिकने कहा—"एक-एक गुण, एक-एक बात ··· ।"

"अरे भाई !" किरिल्ला बोला—"तुम जा सकते हो, तुम्हीं अपनी हुलिया और रूप रंगके बारेमें ज्यादा जानते हो। मैं अपने फ्रांसीसी अध्यापकको तुम्हें नहीं दूँगा, गिरफ्तार करनेके लिए जबतक मैं खुद उससे बातें करके भलीभाँति न देख-सुन लूँ, समझ लूँ। कौन उस बेवकूफ ऐन्टन पैफ्नुटिचकी बातका विश्वास कर सकता है ? सदाका झूठा। उसने सपना देखा होगा कि मास्टर उसे लूट रहा है। अच्छा, तुम्हीं बताओ, यदि अध्यापक ही डब्रोवस्की है और उसने उसे उस रात लूट लिया तो दूसरे दिन सबेरे जानेके पहले उसने मुझे सारी बातें क्यों न बतायी ?"

"फ्रांसीसी अध्यापकने उसे डपट कर मना कर दिया था सरकार !"—

इस्प्रावनिक बोला—"उसने इससे कसम ले ली थी; जो यह किसीसे बताता तो डब्रोवस्की उसे मार डालता।"

"झूठकी गठरी"—किरिल्ला बिगड़ उठा—"मैं अभी सारी बात स्पष्ट कर देता हूँ। आने दो उसे। कहाँ चले गये हैं मास्टर साहब?" उसने उस नौकरसे पूछा जो अभी-अभी कमरेमें भीतर आया।

"हुजूर! वह तो कहीं भी दिखलायी नहीं पड़ते।" नौकर बोला।

"तब उसे ढूँढ़ो" द्रायेकुरोव गरज उठा—वह सन्देहोंका अब स्वयं शिकार हो रहा था—"अच्छा इस्प्रावनिक तुम्हीं मुझे वे अपने मूल्यवान पहचान तो दिखाओ—जरा देखूँ।"

इस्प्रावनिकने कागज बढ़ा दिया।

"हुँः, उम्र तेइस साल, कद मझोला, साफ चिट्टे गाल, दाढ़ी नदारद, आँखें भूरी…ठीक है…किन्तु इतने ही से क्या होता है।" फिर एक दूसरे आदमीकी ओर घूमकर उसने पूछा—"क्या मास्टरका कुछ पता चला?"

"वह तो कहीं मिल ही नहीं रहे हैं सरकार!" नौकरने फिर कहा।

अब किरिल्ला घबड़ाया। उसका मन चञ्चल हो उठा और मेरिया केरिलोव्ना तो ऐसी लगती मानो वह जीवित होनेकी अपेक्षा मरी हुई थी…निर्जीव निस्पंद…।

"तुम क्यों पीली पड़ गयी हो माशा"—किरिल्लाने कहा—"इन लोगोंने तुम्हें घबरा दिया है।"

"नहीं पापा, नहीं, मुझे सिर-दर्द हो रहा है।" वह बोली।

जाओ, अपने कमरेमें चली जाओ बेटी। तुम चिन्ता न करो—जाओ।"

माशाने पिताका हाथ चूमा और दौड़ती हुई अपने कमरेमें चली गयी। भीतर जाते ही वह पलंगपर गिर पड़ी और भावावेशमें आकर सिसकने लगी। दासियोंने उसकी यह दशा देखी तो वे दौड़ी आयीं।

किसी प्रकार, बड़ी कठिनतासे उन्होंने ठंडे पानीका छींटा देकर नौसादर सुँघाकर उसे शान्त किया। तब वे उसे बिस्तरपर सुलाकर चली गयीं जहाँ कुछ देर बाद उसे नींद आ गयी।

किन्तु तबतक अध्यापकका कुछ पता न लग सका। किरिल्ला पेट्रोविच ऊपरसे नीचे आता-जाता, पैर पटककर कमरेमें टहलता और चिल्लाता—"बजाओ, विजयके नगाड़े बजाओ।" बड़े ही व्यंग और क्रोधसे वह कहता। आनेवाले लोग आपसमें ही फुसफुसाते। इस्प्रावनिक मूर्खोंकी तरह खड़ा था—और फ्रांसीसी मास्टर जो लापता हुआ फिर उसकी छाया तक न दिखलायी पड़ी। इसमें सन्देह नहीं कि वह भाग गया था। उसे सूचना मिल चुकी थी और वह सतर्क हो गया था। किन्तु यह सूचना उसे किससे मिली, किसने उसे खबर दी, यह अब भी रहस्य ही बना रह गया।

घड़ीने ग्यारह बजाये, तब भी कोई सोनेका नाम न ले रहा था। अन्तमें किरिल्ला पेट्रोविचने इस्प्रावनिकसे क्रोधभरी वाणीमें कहा—"तो अब आप यहाँ रातभर आराम नहीं कर सकते! मेरा घर कोई सराय नहीं है। तुम इतने वीर नहीं हो कि डब्रोवस्कीको पकड़ पाओगे, यदि वह सच ही डब्रोवस्की है। घर चले जाओ और दूसरी बार कुछ ज्यादा सावधान रहना।" फिर अन्य लोगोंकी ओर देखकर बोला—"अब आप लोग भी जा सकते हैं। सोनेका समय हो गया है। मैं भी सोने जाता हूँ।"

इस प्रकार अत्यन्त कठोरतापूर्वक उसने सभी अभ्यागतोंको वापस कर दिया और सोने चला गया।

१३

फिर एक सप्ताह बीत गया जिसके बीच कोई महत्वपूर्ण घटना न घट सकी। किन्तु अगले वर्ष गरमी आरम्भ होते ही किरिल्ला पेट्रोविचके परिवार में परिवर्तन होने आरम्भ हो गये।

किरिल्ला पेट्रोविचकी जमींदारी पोक्रोवस्कोईसे लगभग दस कोसपर प्रिंस वेरेस्कीकी अपनी विशाल जागीर थी। प्रिंस इधर बहुत दिनोंसे दूर-दूर देशोंकी सैर कर रहे थे। जागीरका कार्य वह अपने एक स्वजन और सेनासे अवकाशप्राप्त मेजरके निपुण हाथोंमें देकर गये थे। तबसे पाक्रोवस्कोई और आरबाटोवोके बीच किसी प्रकारका आना-जाना, सम्बन्ध आदि न रह गया था। किन्तु मईके अन्तमें, जब प्रिंस वेरेस्की विदेशोंकी यात्रा करके लौटे और अपने घर आये तो लगेहाथ वे अपने उस गाँव भी चले गये जहाँ वह पहले कभी न गये थे और जिसका परिचय उनके लिए यह पहिली बार हो रहा था। सदा मस्ती और आराममें ही दिन बितानेका अभ्यास रहनेके कारण वह गाँवका सूनापन बर्दाश्त न कर सके। फलतः अपने आगमनके तीसरे ही दिन वह ट्रायेकुरोवसे भेंट करनेके लिए निकल पड़े जिससे बहुत पहले उनकी कुछ बातचीत और परिचय था।

प्रिंसकी उम्र यों तो पचास वर्षकी थी, किन्तु देखनेमें वह और वृद्ध लगते। जीवनमें हर प्रकारके अतिवादने उन्हें खोखला कर दिया था। भोग-विलास और स्वेच्छाचारिताने उनके शरीर और चेहरेपर अमिट छाप छोड़ दी थी, किन्तु इन बातोंके बाद भी उनका चेहरा आकर्षक और सुन्दर लगता और साधारण लोगोंसे पृथक, एक विशेष प्रकार था जो लोगोंपर प्रभाव डालता था। सदैव आगे-पीछे दस-पाँच आदमी रखने और सभा-समाजमें रहनेके स्वभावने उनमें एक प्रकारकी अहमन्यता और शूरताका भाव भर दिया था; यह भाव तब विशेष रूपसे प्रकट होता जब वे महिलाओंके बीच होते। वह सदैव चित्तको विह्वल कर देनेके आदी थे और शायद इसीलिए लोग उनसे थककर उकता जाते थे।

किरिल्ला पेट्रोविच उसके आगमनसे बहुत प्रसन्न हुआ जिसने अनेक देशोंकी यात्रा करनेवाले और लाखों प्रकारके मनुष्योंसे मिलनेवाले राजकुमार जैसे आदमी द्वारा इस प्रकार अपनी गणना होते देख इसे अपनी प्रतिष्ठा ही समझी कि जमींदारीपर लौटनेके तीसरे ही दिन राजकुमार उससे भेंट करने स्वयं उसके घर पधारे। अपनी आदत और परम्पराके अनुसार पेट्रोविचने सर्व प्रथम राजकुमारको अपनी जमींदारीके अच्छे-अच्छे दृश्य दिखाये और उनका मनोरंजन किया; खास करके अपना कुत्ता-बाड़ा भी उसने उन्हें दिखाया, किन्तु कुत्तों ही कुत्तोंके विवरण और कुत्ता वातावरणसे राजकुमार शीघ्र ही ऊब उठे।

उन्होंने अपनी नाकपर तीव्र सुगन्धसे सनी एक रेशमी रुमाल रखी और नाक-भौंह सिकोड़कर वहाँसे जल्दीसे जल्दी हट गया। पुराने ढंगके कटे और सजाये हुए नीबूके पेड़, आयताकार तालाब और मनोहर रास्ते उनकी पसन्द लायक न थे। वह अंग्रेजी ढंगके बगीचे पसन्द करते थे जिन्हें वह असली "प्रकृति" कहा करते और उसकी वे प्रशंसा करते और सराहते।

तबतक एक नौकरने सूचना दी कि भोजन तैयार है। यह सुनकर वे

पुनः मकानके भीतर गये। राजकुमार जो चलते-चलते थक गये थे और और अब भचकने लगे थे, यहाँ आनेपर मन ही मन पछता रहे थे। किन्तु हालमें उन्हें मेरिया किरिल्लोव्ना बैठी हुई मिली जिसके अनुपम सौन्दर्यको देखकर यह पुराना हेंगा ठिठक गया। ट्रायेकुरोवने अपने अतिथिको अपनी सुन्दरी कन्याके बगलमें स्थान दिया। प्रिंसमें मानो नयी जान आ गयी हो। अपने बगलमें एक कोमलांगिनी अप्सरा सदृश सुन्दरी युवतीको पाकर उनकी शक्ति मानो एकत्र होने लगी और अपनी आदतके अनुसार उन्होंने अपनी यात्राके रोचक वृत्तान्तों और अनेक प्रकारकी कहानियोंसे इस युवतीका मन अपनी ओर आकृष्ट करनेका प्रयत्न करने लगे। भोजनके बाद किरिल्ला पेट्रोविचने घुड़सवारीका प्रस्ताव किया, किन्तु राजकुमारने अपने मखमली जूतों और घुटनेमें होनेवाले गठियाकी ओर विनोदपूर्ण ढंगसे संकेत करते हुए क्षमा माँगी। इसके प्रतिकूल उसने अपने लिए बग्घीमें बैठकर सैर करनेका प्रस्ताव किया जिससे उसके बगलमें बैठनेवाली यह षोडशी उसके साथ रह सके।

बग्घी उसी दम तैयार कर दी गयी। बूढ़े राजकुमार और नवयुवती सुन्दरी दोनो उसपर सवार हुए और साथ बैठकर सैरको निकले। रास्तेमें उनकी बातोंका क्रम कभी न टूटा। मेरिया किरिलोव्ना बड़े चावसे बूढ़ेकी चापलूसी भरी बातें और मनोरंजक कथाएँ सुनती जिसे वह विविध भद्र समाजके विषयमें बता रहे थे। और तब वेरेस्कीने अचानक किरिल्लाकी ओर मुँह कर एक जले हुए भवनके बारेमें,—जिसकी बगलसे वे गुजर रहे थे—पूछा कि यह मकान जल कैसे गया, यह किसका मकान है। क्या यह उनका ही मकान था?"

किरिल्लाका चेहरा बिगड़ गया। उसकी भौहें तन गयीं। इस जले हुए ढूहेको देखकर उसका हृदय अचानक मुरझा गया; उसे तनिक भी आनन्द न हुआ। उसने राजकुमारको अत्यन्त दबे कंठसे बताया कि अब

तो यह बूढ़ा उसका ही है, किन्तु किसी समय यह मकान और यह गाँव डब्रोवस्कीका था।"

"डब्रोवस्की? कौन, क्या वह मशहूर बदमाश...उचक्का?" राजकुमारने पूछा।

"हाँ, उसीके पिताका था—द्रायेकुरोवने उत्तर दिया—"उसका बाप भी ऐसा ही बदमाश था···।"

"अच्छा हमारे उस रीनाल्डोका क्या हुआ? क्या वह जीवित है? अभी पकड़ा नहीं गया?"

"अभी तो वह जिन्दा है और भागा हुआ है। जबतक हमारे ये इस्प्रावनिक उनसे चोली-दामनकी तरह चिपके हैं तबतक डाकुओंका सफाया नहीं हो सकता। अच्छा, प्रसंग आ ही गया है तो पूछता हूँ। कहिये राजकुमार, क्या डब्रोवस्की कभी आपके इलाके—आरबाटोवो भी आया था? सुना है कि उसने एक दौड़ इधर भी लगायी थी—क्या यह सच नहीं है!"

"हाँ, सुना जाता है कि गत वर्ष उसने कुछ लूटपाट की थी या कुछ जला दिया था। अच्छा कुमारी मेरिया किरिलोव्ना! क्या इस रोमाञ्चकारी व्यक्तिके बारेमें आप कुछ जानती हैं? इस सम्बन्धमें कुछ बातें करना अधिक आनन्दकर होगा।"

"आनन्दकर!"—द्रायेकुरोव बोला—"राजकुमार आप क्या कहते हैं। जरा संयोगकी बात देखिये। हमारी मेरियाने इसी डाकूसे संगीतकी शिक्षा ली है—उसने इसे तीन महीने तक संगीत पढ़ाया था, किन्तु भगवानकी मर्जी, उसने अपने पढ़ानेके लिए कुछ लिया नहीं।"

अब किरिल्ला पेट्रोविचने अपने उस फ्रांसीसी अध्यापककी कहानी सुनानी आरम्भ कर दी। मेरियाने गाड़ीकी खिड़कीपर लटके हुए हुकके बाहर मुँह निकाल लिया, किन्तु वेरेस्की डब्रोवस्कीकी कहानी बड़े चावसे सुन रहा था। उसने सारी कथा सुन लेनेके बाद उसे अत्यन्त विस्मय-जनक बताया और फिर वार्ताका प्रसंग ही बदल देना चाहा।

जब वे लौटकर घर पहुँचे तो उसने अपनी गाड़ी तैयार करनेकी आज्ञा दी और अपने गृहस्वामीके निरन्तर अनुरोध करने और रात वहीं बितानेके आग्रह को टालकर चाय पीनेके बाद तत्काल वहाँसे रवाना हो गया। किन्तु जानेके पहले उसने किरिल्ला पेट्रोविचको अपने यहाँ आनेका निमंत्रण दिया और यह भी आग्रह किया कि मेरियाको वह अपने साथ अवश्य लाये। अहंकारी ट्रायेकुरोवने उसका आमंत्रण स्वीकारकर मेरियाको साथ लानेका बचन दे दिया।

दो दिनोंके बाद किरिल्ला पेट्रोविच और उसकी बेटी मेरिया प्रिंसके आमंत्रणपर उसके इलाके, आरबाटोवो गये। जैसे ही वे आरबाटोवो पहुँचे, किरिल्ला पेट्रोविच वहाँकी सुन्दरता, सजावट और सफाई देखकर अपनी प्रशंसाको रोक न सका। किसानोंके झोपड़े भी चमक रहे थे। राजकुमारका भवन तो पत्थरका बना था और ऐसा लगता मानो कोई अंगरेजी किला हो। इस विशाल इमारतके सामने घासका विस्तृत मैदान था जिसपर स्विटजरलैंडके प्रदेशके कुछ चौपाये घास चर रहे थे। उन सबके गलेमें घन्टियाँ बँधी थीं जिनकी टुनटुनाहट बड़ी प्यारी लगती। मकान के चारों ओर एक सुन्दर बगीचा लगा हुआ था।

गृहपति बारान्देमें ही थे। उन्होंने आगे बढ़कर अपने इन दोनों अतिथियोंका स्वागत् किया और हाथ बढ़ाकर सुन्दरीको पकड़ लिया। वे एक बहुत ही सुन्दर सजे हालमें ले जाये गये जहाँ एक टेबुलपर तीन आदमियोंके खाने-पीनेका प्रबन्ध था। राजकुमार अपने मेहमानोंको हालकी खिड़कीपर ले गये जहाँसे वे बाहरका विस्तृत दृश्य देख सकें। वोल्गा नदी खिड़कीके सामनेसे ही बहती थी जिसकी धारापर लम्बे-लम्बे पाल उड़ाती हुई माल ढोनेवाली नावें लहरोंसे इठलाती और उन्हें चीरतीं आती-जाती दिखायी पड़तीं। मछली पकड़नेवाली कुछ छोटी नावें भी, जिन्हें लोग साधारण भाषामें "मौतका जाल" कहते थे, लहरोंपर मचल रही थीं। नदीके उस पार एक लम्बा मैदान और पहाड़ियाँ थीं जिनकी गोदमें कुछ गाँव छितराये हुए इधर-उधर बसे थे।

इसके बाद उन लोगोंने कुछ देर चित्रोंकी गैलरी देखी जिसमें सैकड़ों बहुमूल्य चित्र, जिन्हें राजकुमार विभिन्न देशोंसे यात्रा करते समय खरीद लाये थे सजाकर टँगे हुए थे। राजकुमार प्रत्येक चित्रका विषय मेरियाको समझाते; साथ ही वह चित्रकारोंके जीवनके सम्बन्धमें भी अजीब-अजीब बातें कहते, और इसी प्रसंगमें प्रत्येक चित्रकी कलाके गुण और दोषकी विवेचना भी करते चलते।

वह चित्रोंके सम्बन्धमें उस प्रचलित और सुने-सुनाये शब्दोंमें आलोचना नहीं कर रहे थे जिसमें विद्याडम्बरी लोग प्रायः किया करते हैं, बल्कि उन्होंने प्रत्येक बात बड़ी बारीकी, कल्पना और भावुकताके आधारपर की। मेरिया किरिलोव्नाको उनकी बातोंमें बड़ा आनन्द आ रहा था।

तब वे टेबुलपर गये। वहाँपर शराब पीनेमें न तो आपने किसी प्रकारकी कोताहाई की और न मेरियाने उस व्यक्तिसे इस प्रकार हिलमिल कर बातें करनेमें किसी संकोच या बाधाका अनुभव किया जिससे वह जीवनमें केवल दो ही बार मिल पायी थी। भोजनके बाद राजकुमारने अपने मेहमानों को बागमें घुमानेका आमंत्रण दिया जहाँ एक झीलके किनारे बने लता-मण्डपमें बैठकर उन्होंने काफी पिया। अचानक पीतलके औजारोंकी कुछ आवाज सुनायी पड़ी और मेरियाने साश्चर्य देखा कि छः डाड़ोंवाली एक छोटी नाव आकर झीलके किनारे लता-मंडपके नीचे लग गयी। तब वे नावपर सवार हो गये और झीलकी सैर करने लगे। झीलमें छोटे- छोटे अनेक द्वीप-पुंज बनाये गये थे जिनमेंसे कुछ पर उतरकर इन लोगोंने वहाँकी सुन्दरता और सजावट-बनावट देखी। उनमेंसे एक द्वीपपर संगमरमर पत्थरकी एक विशाल मूर्ति खड़ी थी, दूसरे पर एक उजड़ा झोपड़ा था, तीसरेपर कोई स्मारक बना था जिसपर अक्षरोंमें कुछ खुदा हुआ था। उसे देखकर मेरिया लड़कियोंमें पायी जाने वाली अपनी उस तीव्र जिज्ञासा को न रोक सकी और राजकुमारने यद्यपि सभ्य और संतुलित शब्दोंमें उसका रहस्य बताया, किन्तु उनकी श्लेषात्मक बातोंका सही अर्थ अभी प्रायः मेरिया न जान सकी।

किरिलोव्नाके वहाँ जाते ही राजकुमारने उठकर उसका सम्मान किया और चुपचाप झुककर सलाम किया पर देखनेमें वह कुछ परेशान-से लगते जो उनके जैसे आदमीके लिए अस्वाभाविक था।

"इधर आओ माशा !"—उसके पिताने कहा—"मैं तुमसे कुछ बातें कहूँगा, जिससे मुझे विश्वास है, तुम प्रसन्न होओगी। तुम्हारे लिए यह एक वर है—अच्छे, कुलीन और सभ्य। राजकुमार तुम्हारा पाणि-ग्रहण करना चाहते हैं।"

माशा तो चकरा गयी—उसपर जैसे बिजली गिरी हो, मृत्युके समयका पीलापन उसके चेहरेपर छा गया, किन्तु वह कुछ न बोली। राजकुमार उठकर उसके निकट गये, उसका कोमल हाथ अपने हाथोंमें लिया और अत्यन्त करुणा-कातर स्वरमें याचना करने लगे कि क्या उन्हें प्रसन्न करनेमें वह अपनी स्वीकृति देगी ?

माशा क्या बोले ? वह फिर भी चुप ही रही।

"वह राजी है, वास्तवमें वह तैयार है"—किरिल्लाने कहा—"आप तो राजकुमार ! जानते ही हैं कि लड़कियोंके लिए यह कहना कितना कठिन होता है। क्या वह अपने विवाहके विषयमें कभी कह सकती है ? अच्छा मेरी बच्ची, राजकुमारको चूमो। मेरा आशीर्वाद है कि तुम सदा प्रसन्न रहो और फलो-फूलो।

माशा बिना हिले-डुले चुपचाप खड़ी रही। बूढ़े राजकुमारने उसका हाथ फिर थाम लिया और उसे चूमा। मेरियाके पीले कपोलोंपर अचानक अश्रु-धार बह चली। राजकुमारने इसे देखा और उसने अपनी भौंह सिकोड़ी।

"जाओ, यहाँ से चली जाओ"—किरिल्ला पेट्रोविचने क्रोधपूर्वक कहा—"जाओ, अपने आँसुओं को सुखा-पोंछकर आओ। अपने इन मेहमानको प्रसन्न करना ही तुम्हारा कर्त्तव्य होना चाहिये। इन लड़कियोंकी भी अजीब आदत है। जहाँ इनके विवाहकी बात चली कि ये रोने

लगती है"—उसने राजकुमार वेरेस्की ओर देखकर कहना शुरू किया—"यह तो इनका काम ही है। इसे इन लोगोंने एक तरीका बना लिया है······खैर हटाइये; हाँ, अब हम लोगोंको मतलबकी बात करनी चाहिये। दहेजके बारेमें ·········।"

वहाँ से चली जानेकी आज्ञा सुनकर मेरियाकी जान बची। जैसे उसका दम घुट रहा हो और अचानक उसे इस यातनासे त्राण मिल गया हो। वह अपने कमरेमें दौड़कर चली गयी, भीतरसे दरवाजा बन्दकर लिया; अपने आँसू उसने पोंछ डाले, किन्तु यह ख्याल होते ही कि वह उस बुड्ढेकी पत्नी बनने जा रही है, धैर्यका बाँध अचानक टूट गया और अनवरत अश्रु-धारा बहने लगी। बन्द कमरेमें वह बहुत देरतक चुपचाप रोती रही। राजकुमार अब उसके लिए अत्यन्त विकट और विकर्षक हो गया था। इस विवाहका विचार उसके लिए उतना ही भयंकर था जितना कि कब्र···या मौत।

"नहीं नहीं"—अन्तमें उसने मन ही मन कहा—"इससे तो अच्छा यही होगा कि मर जाऊँ, या किसी मठमें जाकर भिक्षुणी हो जाऊँ, इससे विवाह करनेसे तो यही अच्छा है कि डब्रोवस्कीसे विवाह कर लूँ! किन्तु नहीं, इससे मैं विवाह कदापि नहीं कर सकती।" और उसे तब उस पत्रका ख्याल आ गया जिसे वह अपनी रुमालके नीचे छिपा गयी थी। उसने उसे निकाला और पढ़ना आरम्भ किया। उसे विश्वास था कि पत्र अवश्य ही 'उसका' है और उसीने यहाँ दिया भी हो; वास्तवमें यह उसीके हाथसे लिखा था। अक्षरोंकी लिखावट उसीकी ही थी। पत्रमें केवल इतनाही लिखा था—"आज रात दस बजे, पहली ही जगहपर।"

१५

चाँद उग गया था। जुलाई महीनेकी प्रशान्त रात थी। रह-रहकर शीतल मन्द पवनके झोंके आ जाते थे और तब बगीचेके पेड़ों और झाड़ियोंके पत्तोंमें एक सरसराहट छा जाती।

छायाकी तरह अस्पष्ट और धुँधली-सी वह सुन्दरी मिलनके लिए निश्चित स्थानकी ओर चली। जब वह वहाँ पहुँची तो उसके अतिरिक्त वहाँ कोई अन्य न था, किन्तु क्षण भरमें ही पीछेसे डब्रोवस्की वहाँ आ गया और उसके सामने खड़ा हो गया।

"मुझे सब मालूम है"—उसने धीमे और वेदनायुक्त स्वरमें कहा—"किन्तु तुम अपना वचन स्मरण करो।"

"तुमने तो मेरी रक्षाका वचन दिया है"—वह बोली—"लेकिन मुझे डर लगता है—मुझपर नाराज मत हो। तुम मेरी रक्षा कर सकोगे?"

"जिस आदमीको तुम नहीं चाहतीं, मैं उससे तुम्हें छुड़ा सकता हूँ।"

"उससे कुछ न कहो, उसे छुओ भी नहीं। मैं तुमसे विनीत होकर यह भीख माँगती हूँ। यह मेरी प्रार्थना है। यदि तुम मुझे प्यार करते हो तो उसपर कभी भी हाथ न उठाना। मैं किसी भयंकर कार्य और आतङ्कका कारण नहीं बनना चाहती।"

'मैं उसपर हाथ न उठाऊँगा । वचन देता हूँ, तुम्हारी इच्छा ही मेरे लिए पवित्र आदेश है । उसके प्राण तुम्हारी कृपापर हैं । अब तुम्हारे नामपर कभी खून-खराबी न होगी । तुम सदैव पवित्र रहोगी, मेरे अपराधोंमें भी तुम निरपराध और निर्दोष रहोगी । लेकिन तुम्हारे क्रूर निर्दय पितासे मैं तुम्हें कैसे बचाऊँ ?"

"अब भी कुछ आशा है । मैं पिताजीको रोकर और अपना दुःख सुनाकर उन्हें अपना निश्चय बदलनेको कहूँगी । यद्यपि वह अपनी बातके पक्के और अत्यन्त कठोर व्यक्ति हैं, किन्तु मुझे वह हृदयसे चाहते हैं । वह मेरा अनिष्ट नहीं होने देंगे ।"

"व्यर्थ ! यह आशा झूठी है । तुम्हारे आँसुओंमें उन्हें वही दुर्बलता और करुणा दिखायी देगी जिसे वह सर्वसाधारण लड़कियोंमें देखते हैं । उनका तो कहना ही है कि जब लड़कियाँ प्रेमके लिए नहीं, बल्कि दूसरे प्रकारसे विवाह करती हैं तो ऐसेही रोती-धोती हैं । अगर वह इस विवाहसे तुम्हारा हित ही होनेकी बात सोचते हों तब क्या होगा ? यदि वह तुम्हें बलपूर्वक गिरजाघर ले जायें तो ? मान लो, वह तुम्हें किसी ऐसी जगह ले जाँय जहाँ जबर्दस्ती उस बूढ़ेके साथ तुम्हें सदैवके लिए बाँध देनेकी व्यवस्था कर दें, तब ?"

"तब ? ओह—तब कुछ नहीं हो सकता । तुम मेरी सहायता करने चले आना । मैं तुम्हारी पत्नी बन जाऊँगी ।"

डब्रोवस्की चमक उठा । एक क्षणके लिए उसका निस्तेज पीला मुख गुलाबी हो गया, किन्तु दूसरे ही क्षण और भी गहरा पीला और हत-प्रभ हो उठा । उसने अपना सिर झुका लिया और बहुत देर तक बिना कुछ बोले चुपचाप उसकी ओर ताकता रहा ।

"अपनी सारी शक्ति एकत्र करो—कुछ साहस करो । अपने पितासे दयाकी प्रार्थना करो । उन्हें वह सब बातें बताओ कि उस खोखले जर्जर बूढ़ेके साथ, जिसने जीवन भर इधर-उधर घूमकर अपना चरित्र दूषित

कर डाला है, तुम्हारी जैसी युवतीका विवाह कर देनेका क्या परिणाम होगा। तुम उनसे यह भी कहो कि उस खूसट बुड्ढे के साथ तुम कैसे रह सकोगी? उनसे यह कटु सत्य कहनेका निश्चय कर लो"'साहस करो''' यह भी कहो कि यदि वे अपनी बातपर अड़े रहेंगे तो तुम ऐसे व्यक्तिकी सहायता लोगी जिससे वह स्तब्ध रह जायँगे। उनसे कह दो कि धन तुम्हें क्षण भर भी सन्तुष्ट नहीं कर सकता और यह भी कि ऐश-आराम केवल गरीबीको चकाचौंध कर सकती है, सम्पत्तिसे निर्धनोंको प्रभावित किया जा सकता है, लेकिन किसी युवतीको युवक पति न देकर धनसे उसे सुखी नहीं किया जा सकता। यदि उसे सुख होगा भी तो वह क्षणभर के लिए। उनकी किसी बात पर ध्यान न दो; न तो उसकी परेशानी पर और न उनकी धमकियों पर, न उनके शान्ति भंग और भय पर विचार करो। जब तक आशाकी हलकी किरण भी दिखायी पड़े, उसे न छोड़ो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ मेरिया, और कोई उपाय नहीं है सिवाय इसके कि तुम.............।"

कहते-कहते डब्रोवस्कीने अपने दोनों हाथोंसे अपना मुँह छिपा लिया। मालूम हुआ मानों वह जोरसे साँस ले रहा हो। माशा रो रही थी.....।

"ओह कैसा दुःख है। मेरा भाग्य ही रूठा है"—उसने एक गरम साँस ली और खिन्न होकर कहा—"तुम्हारे लिए यदि मेरे प्राणोंकी आवश्यकता पड़ी तो उन्हें भी मैं दे दूँगा, तुम्हें मैं अपनेसे दूर नहीं कर सकता, तुम्हारे इन हाथों को छूते ही मुझपर कहाँका नशा छा जाता है! कहाँका सुख मिलने लगता है!! और जब अवसर आता है कि मैं इस धड़कते हृदयसे लगाकर तुम्हें अपनी छातीसे चिपटाकर कहूँ कि अप्सरा! आओ हम दोनों साथ ही चलकर मर जायँ, तो मैं गरीब, सड़क का बदमाश और आवारा युवक इस भावना को कुचल देता हूँ, अपनी सारी शक्तिसे उसे दबा देता हूँ, मनसे हटा देनेका प्रयास करता हूँ। तुम्हारे चरणोंपर गिर जानेका मुझे साहस नहीं हो पाता; भगवानको धन्यवाद है कि

उसने मुझे इसके अयोग्य ही बनाया। ओह...मुझे उस आदमीसे कितनी घृणा करनी चाहिये जिसने मुझे ...... लेकिन मुझे लगता है जैसे उसके लिए मेरे हृदयमें घृणा का कोई स्थान ही नहीं है।"

यह कहकर उसने अपना हाथ मेरियाकी पतली कमरपर बढ़ाया और उसे धीरेसे अपनी ओर खींचा। उसने उसे अपनी छातीसे लगाकर दबा लिया। मेरियाने इस शस्त्रधारी डाकूकी बातों पर विश्वासकर उसके कंधोंपर अपना सिर झुका दिया। वे प्रगाढ़ आलिंगनमें बँध गये और और चुपचाप उसी प्रकार खड़े रहे। दोनोंमेंसे किसीने कुछ न कहा।

समय बहुत अधिक हो गया।

"मुझे अब चली जाना चाहिये।" माशाने अन्तमें कहा।

डब्रोवस्की मानो मूर्च्छासे जाग उठा हो, जैसे अचानक झटकेसे उसे चेतना हो गयी हो, उसने उसकी कलाई पकड़ ली और उसकी कोमल अँगुलियोंमेंसे एकमें एक अँगूठी पहना दी।

"यदि तुम कभी मेरी सहायता की आवश्यकता समझना तो इस सिन्दूर-वृक्षके खोखले कोटरमें यह अँगूठी गिरा देना। इसे यहाँ देखकर मैं समझ जाऊँगा कि मुझे क्या करना है।"

डब्रोवस्कीने उसका आलिंगन किया, उसके हाथोंको फिर चूमा और चुपचाप वृक्षोंकी आड़में अदृश्य हो गया।

१६

राजकुमार वेरेस्कीका मेरियाके प्रति लगाव और इस कारण उनके आने-जानेकी बातका रहस्य पड़ोसियोंसे अधिक दिन तक छिपा न रह सका। मेरियाके साथ विवाहकी बात प्रायः सभी जान गये। अब किरिल्ला पेट्रोविचको बराबर बधाइयाँ मिलने लगीं। विवाहके लिए तैयारियाँ आरम्भ हो गयीं। माशा अपना निर्णय सदैव आगेके लिए टालती गयी। इस बीच उसने अपने वृद्ध वरके साथ बहुत शुष्क व्यवहार किया, किन्तु राजकुमार इससे चिन्तित और खिन्न होनेवाला न थे। वह उसकी प्रेम-पूर्वक स्वीकृति नहीं, बल्कि मौन और किसी प्रकारकी स्वीकृति-प्रदर्शनमें ही तृप्तिका अनुभव करते थे।

इसी प्रकार काफी समय निकल गया और वह कुछ न कर सकी। अन्तमें उसने विरोध करनेका निर्णय किया और एक दिन राजकुमार वेरेस्कीको एक पत्र लिखकर थमा दिया। पत्रमें उसने राजकुमारकी पुरुषोचित महानता और गौरवको जगाकर यह स्पष्ट लिख दिया कि उसे उनसे लेशमात्र प्रेम नहीं है और न वह उनसे विवाह ही करना चाहती है। अन्तमें उसने राजकुमारसे प्रार्थना की थी कि वह स्वयं इस मामलेमें खड़े होकर उसकी सहायता करें और उसके पिताके इस व्यापारसे उसकी रक्षा

करें। एकान्तमें राजकुमारको बैठे देख उसने पत्र उन्हें दिया था। अकेलेमें ही उसने भी पत्र पढ़ा, किन्तु उसपर पत्रका किंचित प्रभाव न पड़ा। इसके प्रतिकूल उसने विवाहके कर्मकाण्डको शीघ्र ही समाप्त कर-देनेकी जल्दीबाजी की और इसके लिए उसने पत्र अपने भावी श्वसुरको दिखा देना चाहा।

पत्र पढ़कर किरिल्ला पेट्रोविच लाल हो गया। राजकुमारने उसे अनेक प्रकारसे समझाकर शान्त किया कि वह अपना क्रोध दबाये रखें और किसी प्रकार यह प्रकट न होने दें कि मेरियाका पत्र उन्होंने पढ़ लिया है। किरिल्ला पेट्रोविच तैयार हो गया कि वह मेरियासे इस सम्बन्धमें एक वाक्य भी न कहेगा। किन्तु अब एक पल व्यर्थ जाने देना खतरनाक था। अतःउसने अगले ही दिन सभी वैवाहिक कार्य कर देनेका निश्चय कर लिया।

राजकुमारने अपने श्वसुरकी योजनाको ही युक्तिसंगत समझा और तब वह मौका पाकर अपनी भावी दुलहिनके पास गया। उसने मेरियासे कहा—"तुम्हारा पत्र पढ़कर यद्यपि मुझे बहुत दुःख हुआ है, किन्तु मुझे आशा है कि कुछ ही दिनोंमें मैं तुम्हारा प्रेम प्राप्तकर लूँगा। तुमसे विलग हो जानेकी कल्पना ही मेरे लिए अत्यन्त कष्टकर है। मुझे अपने प्राण दण्डकी आज्ञा सुननेमें भी उतना दुःख न होगा जितना यह सुनकर कि तुम मुझे ···।" कहकर उसने आदरसे मेरियाके हाथोंको उठाकर चूम लिया और उसके पितासे हुई अपनी बातोंके प्रसंगमें बिना कुछ कहे चुपचाप वापस चला गया।

किन्तु अभी वह मुश्किलसे घरके सामनेवाले मैदानसे बाहर निकला होगा कि उसकी पिता किरिल्ला पेट्रोविच कमरेमें आया और उसे उसने सबेरे विवाहके लिए तैयार रहनेकी आज्ञा दे दी। मेरिया किरिलोव्ना, जो राजकुमार वेरेइस्कीकी बातोंसे रो पड़ी थी, वह पिताके चरणोंपर जा गिरी और उससे लिपटकर बोली—"पापा, पापा, मुझे मत मारो।

मेरी हत्या मत करो। मैं राजकुमारको तनिक भी नहीं चाहती, मैं उसकी पत्नी नहीं बनूँगी।"

"इसके क्या माने? क्या मतलब है तुम्हारा—" किरिल्ला क्रोधसे गरजने लगा—"अब तक तो तुम चुपकी साधे बैठी रही हो, अपनी स्वीकृति देती रही हो, और अब जब सारी बात तय हो गयी तो तुम मुझे लौटा रही हो, अपनी बातोंसे हट रही हो। यह कैसी मूर्खता है! मैं बेवकूफ नहीं बन सकता, दया करो। इस तरह तुम मुझसे दया नहीं पा सकती।"

"मुझे मत मारो, मेरी हत्या न होने दो।"—अभागी माशाने फिर उसी प्रकार रोती हुई कहा—"तुम मुझे अपने घरसे क्यों निकाल रहे हो! मुझे ऐसे आदमीको क्यों दे रहे हो जिसे मैं तनिक भी नहीं चाहती? पिताजी क्या तुम मुझसे थक गये हो? मुझसे क्यों इतने ऊब गये हो? मैं केवल तुम्हारे साथ पहलेकी तरह रहना चाहती हूँ। मेरे बिना तुम बहुत दुखी होगे और पापा तुम्हें और दुःख होगा जब तुम देखोगे कि तुम्हारी बेटी कितनी तकलीफमें है। मुझपर जोर न लगाओ पापा। मैं विवाह करना नहीं चाहती…।"

बेटीकी यह कातरतापूर्ण वाणी सुनकर किरिल्लाका हृदय काँप उठा। किन्तु उसने अपना आवेश छिपाकर उसे झटका देकर हटा दिया और कठोर होकर बोला—"यह सब वाहियात है, मूर्खतापूर्ण…क्या तुमने सुना? तुमसे अच्छी तरह मैं जानता हूँ कि किस बातसे तुम सुखी होगी। इन आँसुओंसे कोई लाभ नहीं है। तुम्हारा ब्याह परसों हो जायगा।"

"परसों!" माशा चिल्ला उठी—"हे भगवान, नहीं-नहीं, यह असंभव है। ऐसा नहीं होगा। यदि तुम मुझे बर्बाद ही कर देनेपर तुले हो पापा, तो सुन लो, मैं भी अपनी रक्षाके लिए ऐसे व्यक्तिकी सहायता लूँगी जिसकी तुमने स्वप्नमें भी कल्पना न की होगी। तुम्हें यह देखकर अत्यन्त भय होने लगेगा कि तुमने मुझे कितनी दूर ढकेल दिया।"

"यह क्या बात है ! धमकी ? मुझे धमकी देती है कलकी छोकरी ?" किरिल्ला बोला—"तुम्हें पता नहीं है कि मैं तुम्हारे लिए ऐसा कार्य कर सकता हूँ जिसका तुम अनुमान भी नहीं कर सकती। तुम मुझे अपने उस सहायकके बलपर धमकाना चाहती हो। अच्छा सुनूँ तो, कौन है वह तुम्हारा रक्षक ?"

"ब्लादीमीर डब्रोवस्की—"माशाने निराश होकर कहा।

क्षण भरके लिए किरिल्ला कुंठित हो गया। उसने सोचा कि उसकी बिटिया अवश्य ही पागल हो गयी है।

"ठीक है, बहुत अच्छा—"किरिल्लाने कहा—"तुम अपने उस रक्षक-की प्रतीक्षा करो। वह चाहे जो हो, किन्तु तबतक तुम्हें इसी कमरेमें रहना होगा और विवाहके पहले तक तुम यहाँसे उठ नहीं सकती।" यह कहता हुआ किरिल्ला पेट्रोविच बाहर चला गया और उसने बाहरसे दर-वाजा बन्दकर ताला चढ़ा दिया।

दुःखी युवती बहुत देरतक उस बन्द कमरेमें रोती रही। उसके भाग्यमें जो कुछ लिखा था, उसके काल्पनिक दृश्योंका वह मन ही मन अनुमान करने लगी। किन्तु शीघ्र ही इस विपत्तिग्रस्त भावोंको उसके नये विचारों और काम करनेके नये उत्साहने उतार फेंका। उसका मुख्य लक्ष्य यही था कि किसी प्रकार यह अनर्थकारी विवाह न हो सके। उसके लिए जिस 'सौभाग्य'का प्रबन्ध किया जा रहा था, उसने सोचा, उससे तो कहीं अच्छा है कि सड़कके उस लुटेरेसे ही व्याह कर लूँ। इस नरककी अपेक्षा उसका साथ कहीं स्वर्गीय होगा।

डब्रोवस्कीने जो अँगूठी उसकी अँगुलियोंमें पहना दी थी, उसने उसकी ओर देखा। उसने सोचा कि उस निर्णयात्मक घड़ीके पूर्व किसी प्रकार यदि डब्रोवस्कीसे उसकी भेंट हो जाती तो परामर्शकर वह कोई न कोई मार्ग अवश्य निकाल लेगी। अचानक उसके मनमें विचार उठा कि डब्रोवस्की उसके लिए उस नदी-तटवाले लता-कुंजमें अवश्य प्रतीक्षा करता

होगा। वहीं चलकर उससे मिलना चाहिये और ज्योंही रातका अन्धकार छाने लगा वह उससे भेंट करनेके लिए तैयार हो गयी।

गोधूलीकी बेला बीत गयी। माशाने छिपकर चलनेकी सारी तैयारी कर ली। उसने भली प्रकार वस्त्रोंसे अपनेको छिपा लिया। किन्तु हाय! जब उसने दरवाजा खोलना चाहा तो देखा वह बाहरसे बन्द था। उसने समझ लिया कि उसके पिता जाते समय दरवाजा बन्द कर गये हैं और इस तरह उसे कैद कर दिया गया है। उसकी आवाज सुनकर नौकरानीने बाहरसे ही उसका उत्तर दिया और उसने बताया कि उसके पिताने सब नौकरों को मना कर दिया है कि वे दरवाजा न खोलें और उसे किसी प्रकार बाहर न जाने दें। अब उसे विश्वास हो गया कि वह कैद कर दी गयी है। निराशा, क्षोभ और दुःखोंसे मर्माहत हो माशा किंकर्त्तव्यविमूढ़ बन गयी। लौटकर वह खिड़की पर बैठ गयी। उसने अपने वस्त्र भी न बदले और उस सघन होनेवाले अन्धकारमें आकाशकी ओर आँखें फाड़-फाड़कर घण्टों तक देखती रही। इसी प्रकार रात बीत गयी। सबेरा होनेमें कुछ देर थी तब उसे झँपकी आ गयी। किन्तु उसकी उस हालतकी नींदमें भी अनेक भयावने और दुखद दृश्य दिखायी पड़ते रहे और शीघ्र ही सूर्यकी किरणोंने अपने प्रखर तीरोंकी नोकसे उसे जगा दिया।

१७

जैसे ही माशाकी आँखें खुलीं, अपनी स्थितिकी भयँकरतापर अचानक उसका ध्यान गया। उसने घन्टी बजायी जिसे सुनकर उसकी एक सहेली दासीने उसे बताया कि किरिल्ला पेट्रोविच कल शामको आरबाटोवा गये थे। राजकुमारसे कुछ बातें तय कर वह काफी रात बीते लौटे। उन्होंने सभी नौकरोंको कड़ी आज्ञा दे दी है कि कोई भी इस कमरेका ताला न खोले और न उसे बाहर निकलने दे। उसे किसीसे बातें भी न करने देने की आज्ञा वह दे गये हैं। साथ ही उसकी उस सहेली दासीने बताया कि ब्याह की यद्यपि कोई तैयारी होती दिखायी नहीं पड़ रही है, किन्तु पुरोहितों को आज्ञा दे दी गयी है कि वह किसी भी हालतमें गाँव छोड़कर बाहर न जाँय, जबतक कि यह ब्याह न हो जाय। इसके बाद दासीने मेरिया किरिलो-व्नाको फिर उसी तरह छोड़ दिया और बाहर निकलकर उसने दरवाजा बन्द कर ताला लगा दिया।

दासीकी बातोंसे कैदी माशाके सुकोमल हृदयपर अत्यन्त मर्माहत चोट लगी। उसका विद्रोही मन अब अपने पितासे ही प्रतिहिंसा लेनेपर उतर आया। उसका दिल जल उठा, खून खौलने लगा, उसने दृढ़ विचार कर लिया कि डब्रोवस्कीको सारी बातें बता दूँगी और उसकी शरण अवश्य लूँगी।

अब बिना डब्रोवस्कीसे विवाह किये दूसरा रास्ता नहीं है। उसने अब यह सोचना आरम्भ किया कि अँगूठीको सिन्दूर वृक्षके कोटरमें किस प्रकार पहुँचाया जाय। उसकी विचारधारा खिड़कीपर पत्थरके टुकड़ेके लगनेसे उत्पन्न आवाजके कारण रुक गयी। मेरियाने सिर घुमाकर बाहर देखा, देखाकि नन्हा साशा चुपचाप छिपाकर उसकी ओर निहार रहा है। साशा को देखकर वह हर्ष-विभोर हो उठी। उसका ध्यान चटपट बालकके प्यार पर चला गया। वह उसे कितना चाहता है। उसने खिड़कीके पल्ले खोल कर फैला दिये।

"साशा, खुश रहो"—वह बोली—"क्या तुम मुझसे कुछ कहना चाहते हो?"

"मैं यहाँ यह देखने और पता लगाने आया था जीजी कि तुम्हें कुछ चाहिये या नहीं। पापा तुमपर बहुत नाराज हैं और उन्होंने कहा है कि कोई तुम्हारी बात न सुने। लेकिन मुझसे तुम जो भी कहोगी मैं कर दूँगा।"

"मेरे भाई तुम्हें धन्यवाद। अच्छा साशा सुनो, क्या तुम वह पेड़, सिन्दूर का—वही जिसमें एक कोटर है, खोखला गड्ढा, जानते हो? तुमने उसे देखा है? वही जो उस नदीपर लता-मण्डपके किनारे ही खड़ा है?"

"हाँ जीजी, जानता हूँ।"

"अच्छा भाई, तब तुम, अगर मुझे चाहते हो तो जितनी जल्दी दौड़ सकते हो, वहाँ दौड़ जाओ और मेरी यह अँगूठी लेकर उसी खोखले कोटरमें छोड़ देना। देखो जरा सावधानीसे, जिससे कोई तुम्हें देख न सके।"

यह कहकर उसने अपनी अँगुलीसे अँगूठी निकाली, उसे नीचे खड़े साशा पर फेक दिया और जल्दीसे खिड़की बन्द कर ली।

बच्चेने झपटकर अँगूठी उठा ली, दौड़ा-दौड़ा गया और दो-तीन मिनटमें वह उन प्रेमियोंके निश्चित वृक्षके सामने पहुँच गया। एक क्षण

के लिए वह साँस लेनेको रुका, अँगूठी डालनेके पूर्व अत्यन्त सावधानीसे उसने अपने चारो ओर देखा, फिर धीरेसे सिन्दूर वृक्षके कोटरमें बहिनकी दी हुई अँगूठी डाल दी। वह शीघ्र मेरियाको इस कार्यके कर देनेकी सूचना देनेके लिए लौट ही रहा था कि फटे कपड़े पहने, लाल बालोंवाले और कंजी आँखोंवाले एक छोकरेने झपटकर अँगूठी उठा ली। यह छोकरा चौदह-पन्द्रह वर्षका रहा होगा। संभवतः यह पहले से ही वहाँ छिपा इस अँगूठीकी प्रतीक्षा कर रहा था। साशाको लौटकर जाते देखते ही वह पेड़ की ओर झुका, देखते-देखते टूट पड़ा, कोटरमें हाथ डालकर अँगूठी निकाल ली। अँगूठी लेकर वह भागना ही चाहता था कि साशाने गिलहरीकी तरह उसे अपने दोनों हाथोंसे पकड़ लिया। अब वे दोनों एक दूसरेसे बुरी तरह चिपट गये थे।

"तू कौन है?" साशाने गरजते हुए पूछा।

"तुमसे मतलब।" उस छोकरेने साशाको उत्तर दिया जो उसके दोनों हाथोंमें घिरा बच निकलनेकी चेष्टा कर रहा था।

"अँगूठीको उसी खोखलेमें ले जाकर छोड़ दो, उसे वहीं पड़े रहने दो—मुचमुचही आँखवाले छोकरे!" साशाने चिल्लाकर डाँटा—"जैसा कह रहा हूँ वैसा करता है या नहीं? अँगूठी उस खोखलेमें नहीं डाल आयेगा तो तुझे ऐसी शिक्षा दूँगा जिसे जीवन भर तू न भूलेगा।"

उत्तरमें उस लड़केने साशाके मुँह पर खींचकर घूँसा मारा, जिसने कसकर उसे पकड़ लिया और अपने कंठकी उच्चतम ऊँचाईसे गरजा—"रुक जा चोर-तेरी हुलिया बिगाड़ दूँगा। दौड़ो चोर……।"

उस लड़केने साशाके कब्जेसे निकल भागनेका प्रबल प्रयास किया। देखनेमें वह साशासे दो वर्ष बड़ा लगता था। यों भी उसकी अपेक्षा तगड़ा था, किन्तु दोनोंमें साशा ही अधिक चपल और तेज था। कुछ देर तक दोनों लिपटे झगड़ते रहे, किन्तु अन्तमें लाल बालवाले लड़केने साशाकी बाँह पकड़कर मरोड़ दी और उसका गला दबाता हुआ उसे जमीनपर पटक दिया।

लेकिन उसी क्षण किसीके मजबूत हाथोंने उसके लाल बालोंके बीचसे उसे बाहर निकाल लिया। वह बगीचेका माली, स्टीफेन था। स्टीफेनने जमीनपर पड़े लुंठित साशाको दोनों हाथोंसे उठा लिया।

"अरे ओ बदमाश छोकरे! ओरे शैतान!" मालीने क्रोधसे भर कर पूछा—"तेरी हिम्मत इस छोटे मालिकपर हाथ चला देनेकी कैसे हो गयी रे?"

अबतक साशा फिर खड़ा हो गया।

"तू ठीकसे नहीं लड़ा"—साशा बोला—"और अगर तू कायदेसे लड़ता तो मुझे कदापि न पटक पाता। अँगूठी मुझे दे दे और अभी यहाँ से भाग जा।"

"बिलकुल नहीं"—लड़केने उत्तर दिया—और अचानक घूमकर दूसरेके हाथोंसे अपने बालोंको छुड़ा लिया।

लड़का अपने पैरोंकी ओर झुका, किन्तु साशाने उसे फिर लपक-कर पकड़ लिया और उसकी पीठपर कसकर ऐसा धक्का मारा कि वह लड़खड़ाकर जमीनपर गिर पड़ा। मालीने उसे दोबारा पकड़ लिया और इस बार उसके कमरकी पेटी पकड़कर उसे बाँध लिया।

"अँगूठी मुझे दे दो"—साशाने गरजकर कहा।

"एक मिनट ठहरें मालिक!" स्टीफेन बोला—"मैं इसे अमीन साहब के सामने ले चलता हूँ जहाँ इसकी पूरी मरम्मत हो जायगी, पूजा......तब मानेगा यह।"

माली इस लड़के को पकड़कर अमीन के घरकी ओर ले चला। साशा भी साथ-साथ चला जो रह-रहकर झगड़ेमें गन्दे हुए अपने वस्त्रों और उनपर घास-फूस तथा मिट्टीके पड़े हुए दागोंको दुःखपूर्ण दृष्टिसे देखता जाता था। अचानक यह तीनों व्यक्ति किरिला पेट्रोविचके आगे पड़ गये जो अपने अस्तबलका मुआइना करनेके लिए सामनेसे चला आ रहा था।

"क्या मामला है ?"—उसने माली स्टीफेन से पूछा।

स्टीफेन ने घटना का विवरण संक्षेप में कह सुनाया।

किरिल्ला पेट्रोविच ध्यानसे उसकी सारी बातें सुनता रहा।

"अरे ओ दुष्ट! तू क्यों इस बदमाशसे झगड़ रहा था ?" उसने नन्हें साशा की ओर देखकर पूछा।

"पापा! यह उस पेड़के खोखलेसे अँगूठी चुरा रहा था। उससे अँगूठी वापस दिला दो ?" साशाने उत्तर देते हुए कहा।

"कैसी अँगूठी ? कैसा खोखला ? कौन है वह पेड़ ?"—किरिल्लाने चकित होते हुए पूछा।

"यह अँगूठी मेरिया·········मेरा मतलब है यह अँगूठी·······!"

जल्दीबाजी में साशाने मेरिया का नाम तो ले लिया, किन्तु अब वह सचमुच घबड़ा गया। बहिनने उसे जो यह बात न कहनेके लिए कहा था आखिर उसने उसे प्रकट कर ही दिया। यह सोचते ही वह और भी घबरा उठा। पता नहीं पापा क्या कहेंगे ? बहिन क्या कहेंगी ?

किरिल्लाकी भौंहें चढ़ गयीं। नथुने फुलाते हुए और अपना सिर हिलाकर उसने पूछा—"अच्छा इस मामलेमें मेरिया भी है! ठीक-ठीक बता छोकरे! नहीं ऐसी मार मारूँगा कि छठीका दूध याद आ जायगा।"

"पापा, पापा! मैं कसम खाता हूँ, मेरियाने मुझे कुछ करनेको नहीं कहा था। उसने कुछ नहीं कहा था पापा।"

"अच्छा स्टीफेन जरा जाकर उस कटीले पेड़ से एक लम्बी छड़ी तो लेता आ·······।" किरिल्ला ने मालीको आज्ञा दी।

"पापा ठहरो! मैं तुम्हें सारी बात बता दूँगा। आज जब मैं बाहर चबूतरेपर से जा रहा था तो बहिनने ऊपर कमरेकी खिड़की खोली। उसे वहाँ देखकर मैं खिड़कीके नीचे गया तो बहिनने अपनी अँगूठी नीचे गिरा दी। मैंने उस अँगूठीको उस पेड़के खोखलेमें छिपाना चाहा, इसलिए उसमें डाल दिया और······और तब इस लाल बाल-वाले लड़केने उसमें हाथ डालकर उसे चुरा लिया·······।"

"उसने अपनी अँगूठी गिरा दी और तुम उसे छिपाने ले गये...पेड़के खोखलेमें ! बदमाश ! स्टीफेन छड़ी लाता है या नहीं ?"

"पापा रुको, सब बताता हूँ। मैं सब सही-सही बता दूँगा। मेरी बहिन मेरियाने अँगूठी गिराकर मुझसे कहा कि उस पेड़के खोखलेमें डाल दो। अँगूठी लेकर मैंने उसमें डाल दी और तब इस बदमाश लड़केने... ।"

अब किरिल्लाने उस शैतान लड़केकी ओर मुँह फेरा और क्रोध तथा घृणा मिश्रित स्वरमें बोला—"किसका लड़का है तू ?"

"मैं डब्रोवस्कीके घरके नौकरों में से एक नौकर का लड़का हूँ।" लाल बालवाले छोकरेने उत्तर दिया।

उसकी बातें सुनते ही किरिल्लाके चेहरे पर घोर अन्धकार छा गया। कुछ रुककर उसने पूछा—'देख रहा हूँ कि तू मुझे अपना मालिक मानता ही नहीं। ठीक है, लेकिन मेरे बगीचे में क्या कर रहा था ?'

"मकोय बीन रहा था"—बालकने पूर्ण शान्ति और धैर्यके साथ कहा मानो कुछ हुआ ही न हो।

"अःहः जैसा मालिक वैसा ही तो नौकर होगा। छिः। कहा भी तो जाता है कि पुरोहितकी पहचान उसके साथकी मण्डलीसे ही होती है। अच्छा क्यों बे हरामजादे, क्या मकोय भी सिन्दूरके पेड़ में उगता है ?"

'लड़केने किरिल्लाकी इस बातका कोई उत्तर न दिया।

"पापा इससे कहो कि अँगूठी वापस कर दे।" साशा बोला।

"अलेकजेन्डर ! तुम चुप रहो"—किरिल्लाने डाँटा—"यह क्यों भूल जाते हो कि मैं तुमको छोड़ दूँगा। तुम्हें भी सजा दूँगा। अपने कमरेमें जा। और मुचमुचही आँखवाला होकर तू भारी बदमाश मालूम होता है, पक्का शरारती। चल दे, अँगूठी मुझे दे और यहाँसे भाग जा।"

लड़केने अपनी मुट्ठी खोली और दिखा दिया कि उसमें कोई चीज छिपी नहीं है।

"अगर तू सारी बातें बता देगा तो मैं तुझे बेंतसे नहीं मारूँगा, बल्कि तुझे बादाम खरीदनेके लिए पाँच कोपेक भी दूँगा। और अगर नहीं बतायेगा तो तेरी जान निकाल लूँगा। समझा?"

लड़केने कुछ उत्तर न दिया। वह चुपचाप अपना सिर झुकाकर इस प्रकार खड़ा था जैसे देहातके मूर्ख लड़के अकसर दिखायी पड़ते हैं।

"ठीक है"—किरिल्ला बोला—पकड़कर बन्द कर दो सूअरको और देखना कि यह भागने न पाये। अगर यह किसी तरह भाग निकला तो मैं तुम्हें जीता न छोड़ूँगा।"

स्टीफेन, माली लड़केको पकड़कर मुर्गों और कबूतरोंके दरबेके पास ले गया और उसे एक बड़े जंगलमें बन्द कर उसपर ताला लगा दिया। बूढ़ी अगाफ्याको जो मुर्गियोंकी देखभाल किया करती थी, उसकी निगरानीके लिए छोड़ दिया।

"जाओ, सीधे शहर चले जाओ और जिलेदारको अपने साथ लेते आओ"–किरिल्लाने कहा, किन्तु उसकी आँखें उस छोटे लड़केपर ही टिकी हुई थीं। उसी प्रकार उसे देखते हुए उसने मालीसे कहा-"जाओ जितनी जल्दी जा सकते हो जिलेदारको बुला लाओ।"

अपने कमरेमें पागलोंकी तरह घूमते हुए किरिल्लाने सोचा कि अब कोई सन्देह ही नहीं रह गया। यह छोकरा डब्रोवस्कीके नौकरका बेटा है और उसीके कामके लिए यहाँ आया था। अवश्य ही वह मेरियाकी अँगूठी ले जाकर डब्रोवस्कीको देता। मेरियाने भी इसी उद्देश्यसे अँगूठी गिरायी होगी। फिर क्रोधसे दाँत पीसते हुए और अचानक विक्षिप्तोंकी भाँति अट्टहासकर वह चिल्लाया—"जीतके नगाड़े बजाओ, विजय-दुंदुभी बजाओ। यह मूर्ख मेरिया अबतक छिपकर उस अभागे डब्रोवस्कीसे मिलती-जुलती रही। लेकिन क्या यह सच हो सकता है कि उसने उस डाकूको अपनी सहायताके लिए बुलाया हो। शायद मैं उसका सुराग लगा लूँ......अब वह मुझसे बचकर नहीं जा सकता।

इस अवसरसे हमलोगोंको लाभ उठाना चाहिये। आह! यह कैसे ब्याह की घन्टी है! कौन आ रहा है? जिलेदार, भगवानकी बड़ी कृपा हुई। हिः वह रहा! उस लड़के को यहाँ लाओ जिसे हमलोगों ने अभी-अभी पकड़ रखा है।"

उसी समय फाटक से एक घोड़ागाड़ी भीतर घुसी और उससे हमारा पूर्वपरिचित जिलेदार धूल-धूसरित और चिन्तातुर-सा उतरा।

"बड़ी शानदार खबर है"—किरिल्ला पेट्रोविच ने उससे कहा—"मैंने डब्रोवस्की को पकड़ लिया।"

"भगवान को लाख-लाख धन्यवाद सरकार!" जिलेदार हर्षसे उछलकर बोला—"कहाँ है वह? जरा मैं भी देखूँ।"

"अरे भाई डब्रोवस्की न सही, उसके दलका एक आदमी ही सही।" अभी एक क्षण में वह यहाँ आ ही जाता है। वह अब स्वयं हमें उस राक्षसको पकड़नेमें सहायता करेगा। वह देखो, वह रहा, यहीं आ रहा है।"

जिलेदार, जिसने किसी महा भयंकर खूँख्वार और विशाल डील-डौलवाले हिंस्र डाकूको देखनेकी आशा की थी, बारह-तेरह वर्षके बीमार-से लगते हुए पीले मुँहवाले एक दीन-दुर्बल बालकको देखकर चकित और निराश हो उठा। उसने विस्मयभरी दृष्टिसे किरिल्लाकी ओर देखा मानो अपने कौतूहलकी व्याख्याकी प्रतीक्षा कर रहा हो। तब किरिल्लाने आज सवेरे होनेवाली घटनाका सविस्तार वर्णन जिलेदारको सुना दिया, किन्तु उसने अत्यन्त सतर्कतासे मेरिया किरिलोवनाकी बात बिलकुल छिपा ली और उसे इस कहानी से अलग ही रखा।

जिलेदार चुपचाप किरिल्लाकी बातें सुनते हुए ध्यानसे उस छोकरेके सिरसे पाँव तक दृष्टि दौड़ाकर देखता रहा जो अब भी किसी गंवाँर बुद्धू-सा खड़ा था और इस प्रकार निर्विकार और निरीह भावसे देख रहा था मानो उसे अपने चारो ओर होनेवाले व्यापारका कुछ ज्ञान ही न हो और न उसे उसके परिणामकी कुछ आशंका ही।

"क्या मैं सरकारके साथ एकान्तमें कुछ बातें कर सकता हूँ ?" उसने हताश होकर पूछा।

किरिल्ला पेट्रोविच उसे बगलके एक कमरेमें ले गया और भीतरसे दरवाजा बन्द कर लिया।

आधे घन्टे तक भीतर बातें करते रहनेके बाद वे दोनो बाहर आये जहाँ वह नन्हा अपराधी कैदी अपने भाग्य द्वारा निर्णीत दंडकी प्रतीक्षा कर रहा था।

"सरकारकी तो इच्छा थी कि तुम्हें शहरके जेल भेज देते जहाँ तुम्हारी खासी मरम्मत हो जाती। डंडों और बेतोंसे तुम्हें पीटा जाता और दूर, कहीं बहुत दूर तुम्हें भेज दिया जाता—लेकिन मैंने तुम्हारे लिए इनसे प्रार्थना की और कह-सुनकर तुम्हें माफ करा दिया।" फिर नौकरोंकी ओर देखते हुए जिलेदारने कहा—"खोल दो इसके हाथ-पाँव।"

लड़केके बन्धन खोल दिये गये।

"मालिकको हाथ जोड़। उनके पैरपर गिरकर माफी माँग और उन्हें धन्यवाद दे"—जिलेदार बोला।

लड़का आगे बढ़कर किरिल्ला पेट्रोविचके पास गया और झुककर उसने उसका हाथ चूम लिया।

"जा, अब तू घर जा सकता है"—किरिल्ला बोला—"फिर कभी मेरे बगीचेमें घुसकर सिन्दूरके पेड़ोंके खोखलेसे मकोय चुरानेका काम मत करना।

हर्षसे उछलकर लड़का बारान्देके चबूतरेसे नीचे कूद पड़ा और मुड़कर पीछे देखे बिना सीधा खेतोंकी पगडंडियोंपरसे दौड़ता हुआ किश्चेनेवका की ओर भाग गया। गाँवमें पहुँचकर वह एक अर्धध्वस्त कुटीके दरवाजेके सामने, जो एक संकरी गलीकी मोड़पर थी, खड़ा हो गया। खिड़कीके पल्लेपर उसने दो-चार हल्की थपकियाँ दीं। खिड़की धीरेसे खुली और एक बुढ़िया दिखायी पड़ी।

"दादी मुझे रोटी दो"—लड़का बोला—"आज सबेरेसे अबतक मैंने कुछ नहीं खाया है। भूखसे मैं मरा जा रहा हूँ ?"

"अरे तू है मीत्या ! तो तू अबतक सारे दिन कहाँ था बन्दर ?" वृद्धाने स्नेहसे पूछा।

"बादमें तुझे सब बता दूँगा दादी…बादमें…इस समय तो मुझे रोटी खिला……भगवानके लिए मुझे रोटी खिला दे।"

"अच्छा तो भीतर आ।"

"मेरे पास समय नहीं है दादी। मुझे अभी एक जगह जाना है। रोटी दे, प्रभु ईसाके नामपर मुझे रोटी दे…।"

"कैसा हड़बड़ करता है यह नटखट ? बुढ़िया भुनभुनाने लगी—"यह है, ले।" कहकर उसने खिड़कीकी राह जली रोटियोंके कुछ टुकड़े बाहर फेंक दिये।

लड़केने उसे चावसे काटा और चबाता हुआ आगे बढ़ गया।

गोधूलीका अंधकार बढ़ने लगा था। खेतों और खलिहानोंसे रास्ता काटता हुआ मीत्या किश्चेनेवका के जंगलोंमें चला गया। जब वह खजूरके दोनों पेड़ोंके पास पहुँचा तो एक ऊँचे स्थानपर खड़ा हो गया। सावधानीसे चारो ओर देखा और तब एक अल्पकालिक, किन्तु तेज सीटी बजाकर उसके उत्तरकी प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ ही देरमें एक हल्की, किन्तु लम्बी सीटी सुनायी पड़ी और झाड़ियोंके बीचमें से कोई निकला। चारो ओर ताककर वह मीत्याके पास चला आया।

१८

किरिल्ला पेट्रोविच कमरेमें ऊपर-नीचे टहलता रहा। अब वह अपने मुँहसे पहलेकी अपेक्षा और अधिक तेजीसे सीटी बजाने लगा। सारा मकान लोगोंसे भरा हुआ था। मर्द नौकर इधरसे उधर दौड़ रहे थे और स्त्रियाँ शोर कर रही थीं। बाहर छायामें सईस घोड़ोंको सजाकर गाड़ीमें जोतनेकी तैयारी कर रहे थे। नीचे सामनेका मैदान स्त्री-पुरुषोंसे भर गया था। स्त्रियोंके उठने-बैठनेके कमरेमें एक महिला विशाल दर्पणके सामने बैठकर उदास, पीली और निश्चेष्ट मेरिया किरिलोव्नाको उत्तम वस्त्र पहना रही थी जिसका शीश हीरों और गहनोंके बोझसे यों ही झुक गया था। जब कभी उस महिलाकी असावधानीसे कभी पिनकी नोक उसके कोमल शरीरमें कहीं चुभ जाती तो वह वेदनासे कराह उठती। दर्पणमें वह इस प्रकार देख रही थी मानो उसकी दृष्टि शून्य हो गयी थी।

"क्या तुम जल्दी ही तैयार हो जाओगी?" दरवाजेके बाहरसे किरिल्ला पेट्रोविचकी आवाज आयी।

"एक मिनट में···"—कपड़ा पहनानेवाली महिलाने भीतरसे उत्तर दिया। फिर मेरियाको हिलाते हुए उसने कहा—"मेरिया उठो, देखो तो कि सभी चीजें तुम्हारी सन्तुष्टि लायक हैं या नहीं?"

किन्तु मेरियाने कुछ उत्तर न दिया। वह चुपचाप उठकर खड़ी हो गयी। दरवाजा खोल दिया गया।

"दुलहन तैयार है"—वही महिला बोली—"अब हम लोग गाड़ी में बैठ सकते हैं।"

"भगवानकी कामना पूरी हो—" देवताकी एक मूर्ति टेबुल परसे उठाते हुए किरिल्ला बोला—"इधर आओ माशा। मैं तुम्हें आशीर्वाद देना चाहता हूँ।" कहते कहते उसका गला भर उठा।

बेचारी लड़की सिसकती हुई बापके पैरोंसे लिपट गयी। पापा··· पापा···रोती हुई वह बोली, किन्तु हिचकी बँध जानेसे उसका स्वर दब गया और वह कुछ बोल न सकी।

किरिल्ला पेट्रोविच्चने उसे शीघ्रतासे आशीष दिया। कोमल लताकी भाँति भूमिपर पिताके पैरोंसे लिपटी लुंठित युवतीको दासियोंने उठाया और बलपूर्वक उसे गाड़ीमें बैठा दिया गया। उसके बगलमें एक ओर उसकी सहेली दासी और दूसरी ओर उसे सजानेवाली वह महिला बैठी। तब वे गिरजाघरके लिए रवाना हो गये। दूल्हा वहाँ पहलेसे ही सज-धजकर इन लोगोंकी प्रतीक्षा कर रहा था। झपटकर वह आगे आया कि दुलहनका स्वागत करे, किन्तु उसका पाण्डुर मुख, उदास भाव और विराग देखते ही वह ठिठक गया।

तब वे दोनो चुपचाप उस ठंढे और सुनसान एकान्त गिरजामें घुसे जिसका दरवाजा इनके भीतर जाते ही बन्दकर दिया गया। पुरोहित तो भीतर ही वेदीके पीछे छिपा था, निकल आया। उसने अत्यन्त शीघ्रतासे विवाह-संस्का का कर्मकाण्ड आरम्भ कर दिया। मेरिया किरिलोव्नाने न तो कुछ देखा, न कुछ सुना। विवाहके किसी भी मांगलिक कार्यपर उसका ध्यान न था। उसका मन तो एक ही बातपर टिका था। दिलमें एक ही याद नाच रही थी। कानोंमें रह रहकर डब्रोवस्कीकी वह बात गूँज जाती। सबेरेसे ही वह उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। एक क्षणके लिए भी वह निराश न हुई।

उसे प्रतिपल आशा थी कि डब्रोवस्की अवश्य आयेगा और उसे इस भयानक जालसे छुड़ा लेगा। किन्तु जब पुरोहितने उसकी ओर घूमकर सदासे पूछे जाने वाले प्रश्नोंको दोहराया तो वह काँपकर कठोर हो गयी। फिर उसने उत्तर देनेमें भी विलम्ब किया। किसी प्रकार यह कर्मकाण्ड टल जाता! उसे अब भी आशा थी। किन्तु पुरोहितने उसके उत्तरकी प्रतीक्षा न की। मेरियाके कुछ न कहने पर भी उसने कभी भंग न होनेवाले शब्दों का पाठ आरम्भ कर दिया।

कर्मकाण्ड समाप्त हो गया। मेरियाने अपने अप्रिय बूढ़े पतिके शीतल और निर्जीव चुम्बनके स्पर्शका अनुभव किया जिसमें न जीवन था न शक्ति, न प्रेम और न हृदयकी धधकती आग। अपने चारो ओर खड़े दर्शकोंकी बधाइयोंका उच्च स्वर उसने सुना, फिर भी उसे विश्वास न हुआ कि वह जीवन भरके लिए किस प्रकार बाँध दी गयी है। उसे एक ही बात याद आ रही थी—डब्रोवस्की उसकी रक्षाके लिए अब भी न आया।

राजकुमारने कई बार अत्यन्त दुलार और प्यारसे उससे बोलने की चेष्टा की, किन्तु मेरियाको पता ही न चला कि वह कह क्या रहा है। तब वे गिरजाघरके बाहर आये जहाँ एकत्र पोक्रोवस्कोईके किसानों और उनकी प्रजाने वर-वधूको घेर लिया और आशीर्वादके मंगलमय शब्दोंसे अपनी प्रसन्नता प्रकट करने लगे। मेरियाने एक बार चारो ओर दृष्टि डाली। मानो वह किसीको ढूँढ रही थी, किन्तु उसे न पाकर उसकी आँखें फिर जड़ हो गयीं। नव दम्पति गाड़ीमें बैठ गये और दुलहिनको वरके साथ उसकी ससुराल आरबाटोवाके लिए रवाना कर दिया गया। किरिल्ला पेट्रोविचने सारी व्यवस्था पहलेसे ही पक्की कर रखी थी जिससे किसी बात की अड़चन न पैदा हो सके।

अपनी नवविवाहिता युवती और अत्यन्त सुन्दरी पत्नीके साथ गाड़ीमें अकेले बैठकर राजकुमारका हृदय उसकी उदासी और प्रेमहीनताका विचार न कर प्रसन्न ही था। अपनी दुलहिनको वह मीठी बातों, मधुर

वायदों और रसीली कहावतोंसे लुभा न सका और न तो उसकी प्रभावरहित बातों पर गेरियाने कोई उत्तर ही दिया। इस तरह एक दूसरेसे विलग हो उन्होंने दस कोसका रास्ता तय किया। घोड़े देहाती ऊँची नीची सड़कपर बेतहाशा भागे जा रहे थे। गाड़ी अपनी स्प्रिंगपर, जो अंग्रेजी ढंगपर बनी थी, बड़ी मुश्किलसे बच जाती थी।

अचानक पीछा करनेवालोंकी आहट सुनायी पड़ी। मालूम हुआ मानो कुछ आदमी उनके पीछे-पीछे भागे चले आ रहे हों। क्षण भरमें गाड़ी रुक गयी। अस्त्र-शस्त्र युक्त मनुष्योंके एक दलने उसे घेर लिया। चेहरेपर नकाब डाले हुए एक व्यक्तिने गाड़ी का वह पल्ला खोला, जिधर दुलहिन बैठी थी। दरवाजा खोलकर वह बोला—"नीचे चली आओ, अब तुम स्वतंत्र हो।"

"यह क्या गोलमाल है?" राजकुमार बिगड़कर चिल्लाया—"कौन हो तुम?"

"यह डब्रोवस्की है।" राजकुमारकी पत्नी बोली।

राजकुमारने, जिसका धैर्य इस आकस्मिक घटनासे अभी नष्ट नहीं हुआ था, अपनी कोटकी बगली जेबसे अपनी पिस्तौल निकाली और उसे उस राहके लुटेरेपर चला दिया। उसकी पत्नी भयसे चिल्ला उठी और विकट चीत्कार करते हुए उसने अपने दोनो हाथोंकी हथेलियोंसे अपना मुँह छिपा लिया। गोली डब्रोवस्कीके कंधेमें लगी। वह घायल हो गया। घावसे रक्तका फौव्वारा बह निकला। बिना एक भी क्षण बर्बाद किये राजकुमारने दूसरी पिस्तौल निकाली, किन्तु उसे चलानेके पहले ही गाड़ीका दरवाजा खुल गया और एक साथ कई शक्तिशाली हाथ भीतर घुस गये जिन्होंने उसे पकड़ लिया और घसीटकर उसे गाड़ीसे बाहर नीचे गिरा दिया। कई चाकू और छूरे एक साथ निकलकर अपनी लपलपाती जिह्वासे उसके माथेपर नाचने लगे।

"उसे मत मारो"—डब्रोवस्की चिल्लाया। उसके क्रुद्ध साथी अपने नायककी आज्ञा सुनकर कुंठित हो पीछे हट गये।

भयभीत और पीली हुई राजकुमारकी पत्नीकी ओर देखकर डब्रोवस्कीने फिर कहा—"तुम स्वतंत्र हो………।"

"नहीं"—दुलहिन बोली—"अब बहुत देर हो चुकी है। मैं विवाहिता हूँ……मैं राजकुमार वेरेस्की की पत्नी हूँ।"

"क्या ?" निराश हो डब्रोवस्की चिल्लाया—"तुम क्या कह रही हो ? नहीं-नहीं, तुम उसकी पत्नी नहीं हो। तुमपर बल-प्रयोगकर यह विवाह कराया गया है। इसमें तुम्हारी स्वीकृति नहीं।"

"मैंने स्वीकार किया है…मैंने अपनी प्रतिज्ञा पढ़ी है"—उसने दृढ़तासे कहा—"राजकुमार अब मेरे पति हैं। अपने आदमियोंसे कहो कि वे उन्हें छोड़ दें और हमें घर जाने दें। मुझे उनके साथ छोड़ दो। मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया। मैंने विवाहके अन्तिम क्षण तक तुम्हारा रास्ता देखा, पर तुम मुझे बचाने न आये। अब बहुत देर हो चुकी है। मैं तुमसे अनुरोध करती हूँ। हम लोगों को जाने दो।"

मेरिया क्या कहती जा रही थी, डब्रोवस्की उसे समझ न सका, क्योंकि घावकी दुस्सह पीड़ा और बढ़ती दुर्बलता तथा हृदयमें उठती असह्य वेदनासे उसकी सारी शक्ति लुप्त होती जा रही थी। वह गाड़ीके पिछले पहियेके पास गिर पड़ा। उसके साथी उसे घेरकर खड़े हो गये। अपने मित्रोंसे कुछ कहने भरकी ताकत उसे शेष थी। लोगोंने उसे सहारा देकर उसके घोड़े पर बैठा दिया। दो आदमियोंने दो ओरसे उसे पकड़ लिया और तीसरा घोड़े की रास थामकर आगे-आगे चला। गाड़ीको बीच रास्तेमें छोड़ वे एक ओर मुड़ गये। अपने स्वामीके घावके बदलेमें बिना एक बूँद रक्त गिराये और बिना कुछ लूट किये सिपाही गाड़ीको छोड़ अपनी राह चले गये।

१६

सघन जंगलमें छतनार पेड़ोंके बीच एक जगह कुछ खुला हुआ संकीर्ण मैदान था जिसमें मिट्टीका एक ढूहा उठा था। इसके चारो ओर एक दीवार थी। दीवारके बाहर चौतरफा खाँई थी, भीतर कई खेमे, कच्चे झोपड़े और फूस की मड़इयाँ थीं।

इस खुले मैदानमें झोपड़ियोंके आगे एक बड़ी कड़ाहीके सम्मुख मनुष्योंकी काफी भीड़ एकत्र थी। ये सभी लोग अपने अस्त्र-शस्त्रों, पहिरावे और हिंस्र आकृतिसे सहज ही पहचाने जा रहे थे—वे सब डाकू थे। सबके सिर खुले थे। कड़ाहीके सामने चौगिर्द बैठकर वे कुछ खा रहे थे। बाहरी दीवारके फाटकपर सन्तरी एक पुरानी तोपके सहारे टाँगपर टाँग फैलाकर चुपचाप बैठा था। यह आदमी चुपचाप सिर झुकाये सुई-डोरा लेकर अपनी पोशाकका कोई फटा अंश सी रहा था जिसे देखनेसे ज्ञात होता था कि वह अवश्य कोई सफल दर्जी है। फिर सावधानीसे वह चारो ओर दृष्टि दौड़ाकर देख लेता।

यद्यपि शराब पीनेका बड़ा प्याला प्रत्येक व्यक्तिके पास बारी-बारीसे ले जाया गया था, फिर भी पूरी मण्डलीमें एक अजीब सन्नाटा छाया हुआ था। भोजन कर लेनेके बाद भीड़ छँट गयी। डाकू उठे और एक-एक कर

वहाँसे हट गये—कुछ तो अपने खेमों और झोपड़ोंमें चले गये, कुछ जंगलके भीतर घुस गये और कुछ रूसियोंकी आदतके अनुसार भोजनके बाद एक नींद ले लेनेके लिए वहीं जमीन पर पड़ रहे।

सन्तरीने सीना बन्द कर दिया। अपने उस फटे कपड़ेको उसने आखिरी झटका दिया, उसे इस प्रकार देखा मानो चकती-पैंवदे की कुशलता देखकर खुश हो, सुई उठा ली और उसे अपने कपड़ेमें खोंस लिया। अपना गला फाड़कर और तोप पर बैठकर दोनो पैरोंको दो ओर लटकाकर एक करुण गीत गाने लगा—

ओ माँ! जंगलकी हरीतिमा
रोको अपना मर्मर गान,
बाधा मत दो, कैसे सोचूँ
कुछ तो मेरा कर लो ध्यान।

उसी समय झाड़-पत्तियोंसे ढँकी एक कुटियाका दरवाजा खोलकर एक वृद्धा बाहर आयी। वृद्धा सिरपर श्वेत वस्त्र बाँधे थी। उसके वस्त्र स्वच्छ और भड़कीले थे। वह आकर ड्योढ़ीपर खड़ी हुई।

"अपना यह राग बन्द करो स्टेपका"—वह कड़े स्वरमें बोली—"मालिक सो रहे हैं और तुमने यह राग अलापना शुरू कर दिया! तुम्हें क्या तनिक बुद्धि नहीं है या अपने मालिकपर तुम्हें दया नहीं आती?"

"मुझे क्षमा करो ईगोरोव्ना"—स्टेपकाने उत्तर दिया—"ठीक है, ठीक है। मैं नहीं गाऊँगा। मालिकको सोने दो। उन्हें आराम हो। मैं चुप हो जाता हूँ।"

बुढ़िया भीतर चली गयी और स्टेपका चहारदीवारीपर चढ़कर चारो ओर घूमने लगा।

जिस झोपड़ीसे यह वृद्धा निकली थी, उसके भीतर एक पलंगपर घायल डब्रोवस्की पड़ा था। झोपड़ी में एक हलकी दीवार खड़ी कर दो कमरे बना लिये गये थे। डब्रोवस्की पिछलेवाले कमरेमें पड़ा था।

पलंगके पीछे टेबुलपर उसकी पिस्तौल पड़ी थी। तलवार सिरहाने छतसे लटक रही थी। झोपड़ीके फर्शपर मुलायम गद्दे और कालीन बिछे थे। दीवारोंपर उत्तम रेशमी वस्त्र पड़े थे। कमरेके कोनेमें किसी सुन्दरीके शृंगार करनेके सम्पूर्ण प्रसाधन चाँदीके पात्रोंमें रखे थे। बगलमें ही एक विशाल दर्पण लगा था। डब्रोवस्कीके हाथोंमें एक किताब खुली थी जिसे वह पढ़ रहा था, किन्तु इस समय उसकी आँखें बन्द थीं। वृद्धा, जो दीवारके सहारे खड़ी होकर बगलवाले दूसरे कमरेकी आड़से सिर निकालकर झाँक रही थी, उसे अत्यन्त ध्यानसे देखकर भी समझ न सकी कि डब्रोवस्की सो रहा था या किसीकी चिन्तामें तल्लीन था।

अचानक डब्रोवस्की चौंक उठा—बाहर खतरेकी सूचना सीटी बजती हुई सुनायी पड़ी। उधर स्टेपकाने हड़बड़ाकर झोपड़ीकी खिड़की खोली और बाहर अपना सिर डालकर देखने लगा।

"व्लादीमीर आन्द्रेयेविच! मालिक! यह सूचना हमारे लिए थी"—उसने घबड़ाकर चिल्लाते हुए कहा—"वे लोग हमारे उत्तरकी बाट देख रहे होंगे।"

डब्रोवस्की बिस्तरसे कूद पड़ा। अपने अस्त्रोंको उसने उठा लिया और झोपड़ीके बाहर चला गया। बाहर उसके साथियोंकी भीड़में बातचीतसे काफी शोर हो रहा था। किन्तु उसके आते ही सभी चुप हो गये और पूर्ण सन्नाटा छा गया।

"क्या सब लोग यहाँ मौजूद हैं? डब्रोवस्कीने पूछा।

"पहरा देनेवाले रक्षकोंके अतिरिक्त सभी यहाँ मौजूद हैं"—भीड़ में से उत्तर आया।

"अपनी-अपनी जगहोंपर···"—डब्रोवस्कीने आज्ञा दी। सरदारकी आज्ञा पाते ही सभी डाकू अपने लिए पूर्व निश्चित स्थानपर चले गये।

उसी समय तीन पहरेदार दौड़ते आये। वे फाटक तक पहुँचे ही थे कि डब्रोवस्की उनसे मिलने और विवरण ज्ञात करनेके विचारसे आगे बढ़ आया।

"यह क्या मामला है ?" उसने पूछा।

"मालिक ! जंगलमें सिपाही घुस आये हैं। वे हमारा पीछा कर रहे हैं। अब हम चारो ओरसे घिर गये।" पहरेदारोंने कहा।

डब्रोवस्कीने बाहरी फाटक बन्द कर देनेकी आज्ञा दी और आप उस छोटी तोपकी परीक्षा करने लगा। जंगल में दूर सुनायी देनेवाली आवाजें क्रमशः निकटतर आती जा रही थीं। डाकू साँस रोके उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। चारो ओर मृत्युकी-सी स्तब्धता छा गयी थी। और अचानक जंगलमें से तीन-चार सिपाही निकलकर इस मैदानके भीतर आये और अपने साथियोंको संकेत देनेके विचारसे बन्दूक चलाकर वापस लौट गये।

"युद्धकी तैयारी करो।" डब्रोवस्की चिल्लाया।

एक क्षणके लिए डाकुओंमें फुसफुसाहटकी लहर दौड़ गयी। दूसरे ही क्षण फिर वही सन्नाटा छा गया।

अब आगे बढ़ते हुए सिपाहियोंकी टुकड़ियोंका उच्च स्वर साफ-साफ सुनायी पड़ने लगा। पेड़ोंके बीच इधर-उधर उनकी बन्दूकें दिखायी पड़ जाती थीं। लगभग एक सौ पचास सिपाही बन्दूकें लेकर जंगलकी ओर बीच मैदानमें बने इस डीहपर बसे डाकुओंके आवासको घेरनेवाली चहारदीवारीपर भयंकर आवाजें करते हुए टूट पड़े। डब्रोवस्कीने तोपमें आग लगायी। जोरका धड़ाका हुआ जिसका परिणाम मनोनुकूल ही निकला। सिपाहियोंमेंसे एकका सिर उड़ गया और दो सख्त घायल हुए। शेष सिपाहियोंमें घबराहट फैल गयी। किन्तु उनका अधिकारी चिन्तित नहीं हुआ। वह आगे बढ़ा। उसके पीछे सिपाहियोंका दल भी बढ़ा। अब वे लोग दीवारके नीचे बनी खाईके पास पहुँच गये थे।

डाकुओंने उनपर छोटी बन्दूकों और पिस्तौलोंसे गोलियाँ चलानी आरम्भ कर दीं। हाथोंमें कुल्हाड़े लेकर उन्होंने दीवारकी रक्षाके लिए

आक्रमण किया। डाकू ऊपर चढ़ने का प्रयास कर रहे थे, यद्यपि इस अभियानमें उनके लगभग बीस साथी बुरी तरह आहत और क्षत-विक्षत हो नीचे खाँईं में गिर चुके थे।

अब लड़ाई हाथों-हाथ होने लगी। सिपाही टीलेकी दीवारपर चढ़ आये थे। डाकूगण उनसे द्वन्द्व युद्ध करता, किन्तु उनकी शक्ति अब क्षीण हो रही थी। उनमेंसे अनेक पराजय स्वीकार कर आत्म-समर्पण करने की बात सोचने लगे थे, किन्तु डब्रोवस्कीने उन्हें ललकारा। उसने अपनी पिस्तौल सिपाहियोंके अधिकारीकी छातीकी ओर लक्ष्य कर चलायी। गोली ठीक निशाने पर लगी। अधिकारी आहत हो कटे वृक्षकी भाँति पीछे गिर गया। कई सिपाहियोंने उसे उठा लिया और उसे लादकर वे नीचे ले गये जहाँसे वे वापस भाग गये। शेष सिपाही, जो अपने अधिकारीके घायल होकर वापस लौट जानेसे अपनेको अरक्षित और अनाथ समझ रहे थे, भयसे पीले पड़ गये। डाकुओंका दल उनपर टूट पड़ा। उन्होंने अवसर का लाभ उठाया और कोई क्षण गँवाये बिना सिपाहियोंको नीचे ढकेलना शुरू किया। सिपाही गेंदकी तरह नीचे खाँईमें गिरने लगे। धीरे-धीरे घेरा डालनेवाले सिपाहियोंका दल पराजित हो पीछे भागा। डाकुओंने उन्हें जंगलतक खदेड़ा।

जीतका निश्चय हो चुका। डब्रोवस्कीने यह विश्वासकर कि शत्रु-दल बिलकुल घबड़ा गया है, अपने आदमियोंको बुलाकर एकत्र किया। सबको टीलेपर ही रहनेकी आज्ञा दी और कहा कि कोई बाहर न जाय। घायल लोग उठाकर लाये जायँ। पहरेपर दुगुने आदमी नियुक्त किये जायँ और कोई आदमी यह स्थान छोड़कर कहीं जाने न पाये।

सिपाहियोंके साथ हुए उसके विगत संघर्षसे अब जिलेके अधिकारियोंके कान खड़े हुए। शासकोंने यद्यपि बहुत पहलेसे डब्रोवस्कीके बढ़ते हुए डाकों और अत्याचारोंकी कहानी सुन रखी थी, किन्तु उसके इस निर्भीक और युद्धके स्तरपर किये गये शौर्यकी

कथा सुनकर शासक वर्ग चिन्तित हो उठा। अब उसकी प्रत्येक गतिविधि पर दृष्टि रखी जाने लगी। चारो ओरसे उसके बारेमें गुप्त सूचनाएँ एकत्र की जाने लगीं। जब सारी तैयारी हो गयी तो सिपाहियोंका दूसरा दल अच्छी प्रकार सजाकर भेजा गया जिसे आदेश मिला कि वह डब्रोवस्कीको किसी भी हालतमें—जीवित या मृतक—पकड़कर लाये। उसके दलके कुछ डाकू पकड़े गये जिनसे पता चला कि वह अब उन लोगोंके बीच नहीं है और कहीं अन्यत्र चला गया।

पता चला कि युद्ध होनेके दो-एक दिन बाद डब्रोवस्कीने अपने साथियोंको बुलवाया था। जब सभी एकत्र हो गये तो उसने कहा—"मित्रो! अब मैं आप लोगोंसे सदाके लिए विदा लेना चाहता हूँ। आप लोग भी अब यह पेशा छोड़ दें और कोई भद्र व्यवसाय अपनाकर शरीफोंकी तरह जीवन यापन करें।

"मेरे नेतृत्व में तुम सबने काफी धन उपार्जितकर लिया है। तुममेंसे प्रत्येकके पास ऐसे कागजात हैं, इतने नोट हैं कि उनकी सहायतासे तुम दूर किसी अज्ञात स्थानमें जाकर रईसोंकी तरह रह सकते हो। वहाँ जाकर जीवनके शेष दिन आराम, शान और प्रतिष्ठापूर्वक बिताना। मेहनतकी कमाई करना। लेकिन मुझे भय है। तुम सब बदमाश हो। अपनी यह सीखी हुई चातुरी और कला सम्भवतः इतने शीघ्र न छोड़ोगे!"

यह कहकर उसने अपने सभी साथियोंको आजाद कर दिया। अपने साथ केवल एकको रखा। वह कहाँ चला गया, यह कोई न जान सका। पहले तो इस प्रमाणपर ही लोगोंको अविश्वास हुआ। उन्होंने सोचा कि दस्यु-दल अपने सरदारकी रक्षाके विचारसे ही उसके सम्बन्धमें ऐसी कथा सुना रहा है जो बिलकुल मन गढ़न्त-सी है, किन्तु इन गवाहियोंके बाद सुनसान सड़कोंपर चलनेवाले यात्रियोंपर आक्रमण, अग्निकांड, लूट-पाट, डाके और छीना-झपटीकी घटनाएँ बिलकुल बन्द हो गयीं। सड़कें फिर उसी प्रकार भय-बाधा विहीन और निरापद हो गयीं।

बादमें दूसरे सूत्रोंसे ज्ञात हुआ कि अभागे डब्रोवस्कीने देश ही छोड़ दिया।

मूल रचना
१८३२-३३]

हिन्दी रूपान्तर
[फरवरी १९५६